देश विदेश की लोक कथाऐं — सहायता ः

# मदद करो मीठा फल पाओ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता
**2022**

Cover Title : Madad Karo Meetha Phal Paao (Help Others)
Cover Page picture : Help Others Help Yourself
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

# Map of the World

विंडसर, कैनेडा

**2022**

## Contents


सीरीज़ की भूमिका ..... 5

मदद करो मीठा फल पाओ... ..... 7

**1** राजकुमार और सेब ..... 9

**2** बिना आत्मा का शरीर ..... 17

**3** एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी ..... 29

**4** नकली नानी ..... 37

**5** बिल्लियों की कहानी ..... 44

**6** बेकर का आलसी बेटा ..... 52

**7** प्यार का राजा ..... 58

**8** वफादार और बेवफा ..... 71

**9** दो सौतेली बहिनें ..... 88

**10** मार्या मोरेवना ..... 110

**11** मेंढकी राजकुमारी ..... 135

**12** ज़ार सुलतान की कहानी ..... 151

**13** गंजी पत्नी ..... 190

**14** सुलतान की बेटी ..... 198

# सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
**2022**

# मदद करो मीठा फल पाओ...

"मदद करो और मीठा फल पाओ" एक ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जिसमें वे लोक कथाऐं शामिल हैं जिनमें लोगों ने दूसरों की मदद की है और उस मदद करने की वजह से उनको उसका अच्छा फल मिला है जिससे उनकी समस्याऐं दूर हुई हैं। हालॉकि ऐसी कहानियॉ कम मिलती हैं पर फिर भी कुछ ऐसी ही कथाऐं यहॉ दी जाती हैं।

आशा है कि लोक कथाओं के संग्रहों की तरह से यह लोक कथा संग्रह भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेगा और तुमको भी दूसरों की सहायता करने की प्रेरणा देगा।

# 1 राजकुमार और सेब[1]

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों, सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसके राज्य में कोई थी नहीं इसलिये वह ऐसी लड़की की खोज में दूसरे देशों को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह जा पहुॅचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी। उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूॅ।"

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे

[1] A Prince and the Apple – a folktale from Western Europe

रंग के कपड़े पहने था, बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा तो मैं डर कर यहॉ छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया। मैं तो खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है।"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।" ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाऊॅगा और तुम्हारी बेटी को ले कर आऊॅगा। मगर वह देखने में कैसी है?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, ऑखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम.... ।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहॉ? वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूॅ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूॅगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियॉ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी रोटियॉ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खाईं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में

कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहाँ एक सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलाँग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये तभी मैं तुम्हें जाने दूँगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट दे दिया।

उसने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हाँ याद रखना,

अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलाँग लगाता हवा की सी तेजी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं चीं चीं, राजकुमार तुम कहाँ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं चीं चीं, पहले मेरे जोड़ों[2] में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहाँ से जाने दूँगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे जोड़ों में तो जंग लगी है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है हाँ थोड़ा साबुन है वही ले लो।" यह कह कर उसने दरवाजे के जोड़ों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना, अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

[2] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलॉग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुँचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियॉ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा।

वह किले के पीछे पहुँचा पर उसे न तो राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहॉ भी उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोई में गया वहॉ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उसके सोने के कमरे में पहुँचा।

वहॉ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो राक्षस तो गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा था।

तभी राजकुमार ने सोचा सभी ने मुझसे क्या कहा था। "हॉ हॉ अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब तुम जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर जैसे ही उसने उसे उठाने के लिये हाथ बढ़ाया उसके छूने से पहले ही वह एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थी।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।"

और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला। तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूॅगा, उसने मेरे जोड़ों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं उसे नहीं रोकूॅगी उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहॉ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था। वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूॅगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार तुम जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़ गया। जब राक्षस पीछे से आया तो उसने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार न आ गयी जहॉ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

वह आदमी वहॉ फिर से छिप गया था। राजकुमार ने फिर उस की टॉग पकड़ कर उसको बाहर निकाला।

असल में वह आदमी घोड़ों की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और झाड़ियों में छिप गया था। उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

# 2 बिना आत्मा का शरीर[3]

एक बार की बात है कि एक विधवा स्त्री थी जिसके एक बेटा था। उसका नाम जैक[4] था। जब वह तेरह साल का हुआ तो वह घर छोड़ कर दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाना चाहता था।

उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि अभी दुनियॉ में जा कर तुम कुछ कर सकते हो? तुम अभी बच्चे हो। जब तक तुम इस लायक न हो जाओ कि हमारे घर के पीछे लगा पाइन का पेड़[5] एक ही बार की ठोकर से गिरा सको तब तक तुमको बाहर नहीं जाना चाहिये।"

यह सुन कर जैक रोज सुबह उठ कर दौड़ता और दौड़ कर अपने दोनों पैरों से उस पाइन के पेड़ को मारता पर वह एक इंच भी हिल कर नहीं देता बल्कि वह खुद ही पीछे को पीठ के बल गिर पड़ता।

आखिर एक दिन जब उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पेड़ को धक्का दिया और वह जमीन पर आ गिरा और उसकी जड़ें

---

[3] Body Without Soul – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
Translation of most stories of this book are available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[4] Jack – the name of the boy

[5] Pine tree. There are several kinds of pine trees. One of its kinds is shown in picture above.

हवा में दिखायी देने लगीं तो जैक तुरन्त ही भागा भागा अपनी मॉ के पास गया और बोला — "देखो मॉ, आज मैंने वह पाइन का पेड़ नीचे गिरा दिया।"

उसकी मॉ ने वह गिरा हुआ पाइन का पेड़ देखा तो बोली — "मेरे बेटे, अब तुम जा सकते हो और जो तुम्हारे मन में आये वह कर सकते हो।" सो जैक ने अपनी मॉ को विदा कहा और दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया।

काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक ऐसे शहर में आया जिसके राजा के पास एक घोड़ा था जिसका नाम था रौनडैलो[6]।

अभी तक उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं कर सका था। लोग उस पर चढ़ने की बराबर कोशिश करते रहे पर वे उस पर अभी तक तो कभी चढ़ नहीं पाये थे। जब भी कोई उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता तो वह घोड़ा बार बार उसको नीचे गिरा देता था।

जैक भी उस घोड़े को देखने गया तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह घोड़ा अपने साये से डरता था[7] सो जैक ने खुद उसके ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव रखा। राजा ने उसको सावधानी बरत कर उस घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त दे दी।

[6] Rondello – the name of the horse

[7] This is a similar incident shown in Mahaabhaarat Serial. Bheeshm in his adulthood controlled a horse in the same way – now which incident happened first?

वह उस घुड़साल में गया जहॉ पर वह घोड़ा बॅधा हुआ था। वहॉ उसने घोड़े से कुछ बात की, उसको थपथपाया और फिर अचानक ही उसके ऊपर कूद कर चढ़ गया और हॉक कर उसको बाहर धूप में ले गया। इस तरह से न तो वह अपनी परछॉई ही देख सका और न ही वह अपने सवार को नीचे ही गिरा सका।

जैक ने घोड़े की लगाम आराम से पकड़ ली, अपने घुटनों से घोड़े को दबाया और उसको ले कर उड़ चला। पन्द्रह मिनट में ही वह घोड़ा उसका मेमने की तरह पालतू हो गया। पर वह केवल जैक का ही पालतू था। वह अभी भी किसी और को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता था।

उस दिन के बाद से जैक राजा के यहॉ काम करने लगा। राजा भी उसको इतना पसन्द करने लगा था कि राजा के दूसरे नौकर उससे जलने लगे। एक दिन कुछ नौकरों ने मिल कर उसको मारने का जाल बिछाया।

इस राजा के एक बेटी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसको बिना आत्मा का शरीर[8] नाम का एक जादूगर उठा कर ले गया था और तबसे उसके बारे में किसी ने कुछ भी नहीं सुना था।

इस जाल के अनुसार वे नौकर लोग राजा के पास गये और बोले — "यह जैक अपनी बहुत डींगें हॉकता है तो क्यों न उसको राजकुमारी को आजाद कराने का काम सौंप दिया जाये।"

[8] Translated for the words "Body Without Soul" named sorcerer

राजा के यह बात समझ में आ गयी। उसने जैक को बुलाया और उसको राजकुमारी का सारा किस्सा बताया। जैक को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा के कोई बेटी भी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि जबसे उस जादूगर ने उस राजकुमारी को भगाया था तबसे किसी की यह हिम्मत नहीं हुई थी कि कोई उसके बारे में बात भी करे क्योंकि इस बात से राजा बहुत दुखी होता था।

कुछ दिन बाद तो उसने यहॉ तक कह दिया कि अगर कोई उसको वापस ला सकता है तो वापस ले आये नहीं तो उसकी बात भी करने की जरूरत नहीं है। उस दिन के बाद से राजा को शान्ति नहीं थी।

जैक ने दीवार पर लगी हुई एक जंग लगी हुई तलवार मॉगी और अपने रौनडैलो पर सवार हो कर राजकुमारी की खोज में चल दिया।

जब वह जंगल पार कर रहा था तो वहॉ उसको एक शेर मिला। वह शेर उसको रुकने का इशारा कर रहा था। यह देख कर वह कुछ परेशान सा हो गया पर फिर भी वहॉ से उसको भागना भी अच्छा नहीं लगा सो वह अपने घोड़े पर से उतरा और उस शेर से पूछा कि वह उससे क्या चाहता था।

शेर बोला — "जैक, जैसा कि तुम देख रहे हो यहाँ हम केवल चार लोग हैं – एक मैं, एक कुत्ता, एक यह चील[9] और एक यह चींटी।

हमारे पास यह एक मरा हुआ गधा है जिसे हम आपस में बाँटना चाहते हैं पर बाँट नहीं पा रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे पास तलवार है इसलिये तुम इस जानवर को काट कर हम सबको हमारा हिस्सा आसानी से दे सकते हो।"

जैक ने गधे का सिर काटा और चींटी को दिया और बोला — "यह लो, इस सिर में तुम आराम से रह सकती हो और इसमें से अपना खाना भी खा सकती हो।"

फिर उसने गधे के खुर काटे और कुत्ते को दे दिये — "लो ये खुर तुम लो। तुम इन खुरों को चाहे जब तक चबा सकते हो।"

उसके बाद उसने गधे के शरीर के अन्दर का हिस्सा आँत आदि निकाले और चील को दे दिये — "लो चील, तुम इस गधे का यह अन्दर का हिस्सा लो। तुम इनको पेड़ पर ले जा सकते हो और वहाँ बैठ कर आराम से खा सकते हो।"

बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया जो उन चारों में से उसको मिलना ही चाहिये था। फिर वह अपने घोड़े के पास लौट आया और उस पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिया कि उसने पीछे से किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना।

[9] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

उसने सोचा — "ओह, लगता है कि गधे को बॉटने में मुझसे कहीं कोई गलती हो गयी है।" पर ऐसा कुछ नहीं था।

शेर बोला — "तुमने हमारा बहुत बड़ा काम किया है और तुमने यह काम बहुत ही न्यायपूर्वक किया है। जैसे एक अच्छा काम किसी दूसरे अच्छे काम का बीज होता है तो मैं तुमको अपना एक पंजा देता हूँ। तुम जब भी इसको पहनोगे तो यह तुमको दुनियॉ का सबसे ज़्यादा भयानक शेर में बदल सकता है।"

इस पर कुत्ता बोला — "मैं तुमको अपनी मूँछ का एक बाल देता हूँ। जब भी तुम इसको अपनी नाक के नीचे रखोगे तो तुम दुनियॉ के सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते बन जाओगे।"

इसके बाद चील बोला — "यह मेरे पंखों में से एक पंख ले जाओ जो तुमको दुनियॉ का सबसे बड़ा और ताकतवर चील बना देगा।"

चींटी बोली — "मैं तुमको अपनी एक छोटी सी टॉग देती हूँ। जब भी तुम इसको अपने शरीर पर रखोगे तो तुम एक चींटी बन जाओगे – इतनी छोटी सी चींटी कि तुमको कोई देख भी नहीं पायेगा – आतशी शीशे[10] से भी नहीं।"

जैक ने वे चारों चीज़ें ले लीं, चारों को धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसे उन जानवरों की भेंटों पर विश्वास नहीं था कि वे काम करेंगी भी या नहीं।

[10] Translated for the word "microscope"

यही सोचते हुए कि कहीं जानवरों ने उसके साथ कोई मजाक न किया हो वह आगे जा कर एक ऐसी जगह रुक गया जहॉ से वह उनको दिखायी नहीं दे सकता था।

वहॉ उसने एक एक कर के सब भेंटों को जॉचा – पहले वह शेर बना, फिर कुत्ता बना, फिर चील बना और फिर चींटी बना। सब कुछ जादू की तरह ठीक काम कर रहे थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और आगे चल दिया।

जंगल के उस पार एक झील थी। जंगल पार कर के वह उस झील के पास आ गया। उस झील के किनारे पर ही उस बिना आत्मा के शरीर वाले जादूगर का महल था।

वहॉ आ कर जैक ने अपने आपको चील में बदला और उड़ कर उस बिना आत्मा के शरीर वाले जादूगर के महल के एक कमरे की एक बन्द खिड़की पर जा कर बैठ गया। वहॉ जा कर वह एक छोटी सी चींटी में बदल गया और उस कमरे की बन्द खिड़की से हो कर उस कमरे में घुस गया।

वह एक सुन्दर सा सोने का कमरा था जहॉ छत वाला एक पलंग पड़ा था और उस पलंग पर एक राजकुमारी सो रही थी। चींटी के रूप में ही वह राजकुमारी के ऊपर घूमने लगा।

वह उसके गाल पर भी गया। वह उसके ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह जाग नहीं गयी। फिर उस लड़के ने अपने

ऊपर से चींटी की वह छोटी टॉग हटा दी तो राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत सुन्दर नौजवान को खड़ा पाया।

यह सब देख कर वह आश्चर्य से कुछ बोलने ही वाली थी कि जैक ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "डरो नहीं। मैं तुमको यहॉ से आजाद कराने आया हूँ। तुमको उस जादूगर से बस यह मालूम करना है कि वह किस तरह से मर सकता है।"

उसने अभी इतना ही कहा था कि उसको किसी के आने की आहट सुनायी दी सो वह फिर से चींटी बन कर वहीं एक कोने में छिप गया।

जब वह जादूगर आया तो राजकुमारी ने उससे बड़े प्यार से बात की। उसको अपने पॉवों के पास बिठाया और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

फिर वह बोली — "मेरे प्रिय जादूगर, मैं जानती हूँ कि तुम बिना आत्मा का शरीर हो और इसी लिये तुम मर नहीं सकते पर मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कोई भी कभी भी तुम्हारी आत्मा को ढूँढ लेगा और फिर तुमको मार देगा।"

जादूगर यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅसा और काफी देर तक हॅसता ही रहा। फिर बोला — "तुमको इससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है मेरी रानी। मैं तुमको इसका भेद बताता हूँ। क्योंकि

तुम यहाँ जेल में बन्द हो और तुम मुझे धोखा भी नहीं दे सकतीं इसी लिये मैं यह बात तुम्हें बता रहा हूँ।

मुझे मारने के लिये एक बहुत ही ताकतवर शेर चाहिये जो जंगल में रह रहे काले शेर को मार सके। उस मरे हुए काले शेर के पेट में से एक काला कुत्ता कूद कर बाहर आयेगा। वह कुत्ता भी इतनी तेज़ी से बाहर कूदेगा कि कोई सबसे ज़्यादा तेज़ भागने वाला कुत्ता ही उसको पकड़ सकता है।

फिर उस कुत्ते को मारना पड़ेगा। उस मरे हुए कुत्ते में से एक चील उड़ेगी जो दुनियाँ की सबसे ज़्यादा तेज़ उड़ने वाली चीलों में से एक होगी। इसलिये उसको भी कोई नहीं पकड़ सकेगा।

पर अगर उसको किसी ने पकड़ लिया और उसे मार दिया तो उसके पेट से उसे एक अंडा निकालना पड़ेगा जिसको मेरी भौंह के ऊपर तोड़ना पड़ेगा।

उस अंडे के टूटते ही उसमें से मेरी आत्मा निकल कर भाग जायेगी और मैं मर जाऊँगा। अब बताओ क्या तुम मेरे बारे में अभी भी चिन्तित होगी?"

"नहीं नहीं। अब मुझे तुम्हारे मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि इस तरह से तो तुमको कोई मार ही नहीं सकता।"

जैक ने यह सब उस कोने में बैठे बैठे सुन लिया। जादूगर के जाने के बाद वह वहाँ से चींटी के रूप में ही खिड़की से बाहर निकल गया और चील बन कर जंगल की तरफ उड़ गया।

वहाँ जा कर वह शेर में बदल गया और काले शेर को ढूँढने चला। काला शेर उसको जल्दी ही मिल गया। वह काला शेर काफी ताकतवर था पर जैक तो सबसे ज़्यादा ताकतवर शेर था सो उसने उस काले शेर को दबोच लिया और मार दिया। जैसे ही शेर मरा तो किले में जादूगर का सिर चकराने लगा।

शेर को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो उसमें से एक तेज़ भागने वाला काला कुत्ता निकल कर भागा। जैक ने तुरन्त ही अपने आपको सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते में बदला और उस काले कुत्ते के पीछे भाग लिया।

उसने उस काले कुत्ते को भी जल्दी ही पकड़ लिया और उस पर कूद पड़ा। दोनों लुढ़कने लगे और एक दूसरे को काटने लगे पर आखीर में जैक ने उस काले कुत्ते को भी मार दिया। कुत्ते को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो एक काला चील उसके पेट में से निकल कर उड़ गया।

जैक भी जल्दी से चील बन गया और उसके पीछे उड़ चला। उस काले चील को मार कर उसने उसके पेट में से काला अंडा निकाल लिया। अंडा निकालते ही जादूगर को किले में बुखार आ गया और वह अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा लेट गया।

चील के पेट से अंडा निकाल कर जैक आदमी बन गया और वह अंडा ले कर राजा की बेटी पास वापस आगया। राजा की बेटी उस अंडे को देख कर बहुत खुश हो गयी।

उसने पूछा — "पर तुमने यह सब किया कैसे?"

"इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं थी। मैंने तो अपना काम कर दिया बस अब तुम्हारा काम बाकी है।"

राजा की बेटी वह अंडा ले कर जादूगर के सोने के कमरे में घुसी और उससे पूछा — "तुमको कैसा लग रहा है जादूगर?"

"उफ़ तुमने तो मुझे धोखा दे दिया।"

"देखो न मैं तुम्हारे लिये यह मॉस का पानी[11] ले कर आयी हूँ। इसे थोड़ा सा पी लो तो तुमको आराम मिलेगा और थोड़ी ताकत भी आ जायेगी।"

यह सुन कर जादूगर उठ कर बैठा हो गया और वह मॉस का पानी पीने के लिये झुका तो राजा की बेटी बोली — "लाओ इसमें मैं एक अंडा तोड़ कर और डाल दूँ इससे तुमको और ज़्यादा ताकत आयेगी।"

कह कर राजा की बेटी ने वह काला अंडा उस जादूगर की भौंह के ऊपर तोड़ दिया और वह बिना आत्मा का शरीर वहीं की वहीं मर गया।

जैक राजा की बेटी को ले कर राजा के महल आ गया और उसको उसके पिता को सौंप दिया। सब लोग राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हो गये।

[11] Translated for the word "Broth" – to make meat broth meat is boiled in some water and that water is used for other purposes. It is supposed to have many of meat qualities of the meat to give some strength.

पर वे नौकर जिनकी यह चाल थी जैक को अपने काम में सफल देख कर केवल अपना मन मसोस कर रह गये।

बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी।

# 3 एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी[12]

एक बार एक आदमी के पास एक नाशपाती का पेड़ था जिसमें हर साल चार टोकरी नाशपाती आती थी। वह ये नाशपाती राजा को दे आया करता था।

एक साल ऐसा हुआ कि उसमें केवल साढ़े तीन टोकरी नाशपाती ही आयीं जबकि राजा को उसको चार टोकरी नाशपाती दे कर आनी थी। अब वह क्या करे।

जब उसको कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उसने चौथी टोकरी में पहले अपनी सबसे छोटी लड़की को रख दिया फिर उसको नाशपाती और उसके पत्तों से ढक दिया और उस टोकरी को बाकी की तीन टोकरियों के साथ राजा के महल में दे आया।

सारी टोकरियॉ राजा के रसोई भंडार में ले जायी गयीं। वहॉ वह लड़की उन नाशपातियों के नीचे छिपी रही। पर जब उसको वहॉ कुछ और खाने को नहीं मिला तो वह अपने ऊपर रखी हुई नाशपातियों को ही खाने लगी।

[12] The Little Girl Sold With the Pears – a folktale from Italy.
Adapted from the book “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

कुछ समय बाद नौकरों ने देखा कि उन टोकरियों में से नाशपातियॉ कुछ कम हो रही थीं और साथ में उन्होंने कुछ कुतरी हुई नाशपातियॉ भी देखीं।

उन्होंने सोचा कि जरूर ही कहीं या तो कोई चूहा है और या फिर कोई मोल[13] है जो नाशपातियॉ कुतर रहा है। हमें टोकरी के अन्दर देखना चाहिये कि उसके अन्दर तो कुछ नहीं है।

सो उन्होंने एक टोकरी में से ऊपर से कुछ नाशपातियॉ और उसके कुछ पत्ते हटाये तो उनको उसमें वह छोटी लड़की दिखायी दे गयी।

उन्होंने उससे पूछा — "अरे तुम यहॉ क्या कर रही हो? चलो हमारे साथ चलो और चल कर राजा की रसोई में काम करो।"

उन्होंने उसको वहॉ से निकाल लिया और उसको परीना[14] नाम दे दिया। परीना इतनी होशियार लड़की थी कि बहुत थोड़े समय में ही वह राजा की बहुत सारी नौकरानियों से भी अच्छा काम करने लगी।

वह सुन्दर भी इतनी थी कि कोई उसको प्यार किये बिना रह ही नहीं सकता था।

---

[13] Mole is an animal like a big squirrel. See its picture above.

[14] Perina – the name of the girl

राजा का एक बेटा था जो उसी की उम्र का ही था। वह तो उसको छोड़ता ही नहीं था। वह हमेशा ही उसके साथ साथ रहता। वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

जैसे जैसे वह लड़की बड़ी होती गयी दूसरी नौकरानियॉ उससे और ज़्यादा जलने लगीं। पहले तो कुछ समय तक तो वे चुप रहीं पर फिर वे परीना को यह इलजाम देने लगीं कि वह यह शान बघारती है कि वह जादूगरनी का खजाना चुरा सकती है।

राजा को इस बात की हवा लगी तो उसने उस लड़की को बुला भेजा। उसने उससे पूछा — "क्या तुम यह कह रही थीं कि तुम जादूगरनी का खजाना चुरा कर ला सकती हो?"

"नहीं जहॉपनाह नहीं, मैंने तो ऐसी कुछ भी शान नहीं बघारी।"

राजा ने ज़ोर दे कर कहा — "नहीं, तुमने ऐसा ही कहा है। मैंने ऐसा ही सुना है और अब तुमको अपना कहा कर के दिखाना पड़ेगा।" और यह कह कर उसने परीना को उस जादूगरनी का खजाना लाने के लिये अपने महल से बाहर भेज दिया।

परीना महल से निकल कर चलती रही चलती रही जब तक कि रात नहीं हो गयी। रात होने पर वह एक सेब के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ रुकी नहीं बल्कि चलती ही गयी।

उसके बाद वह एक खूबानी[15] के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ भी नहीं रुकी। लेकिन फिर वह एक नाशपाती के पेड़ के पास आयी। वहॉ वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गयी और सो गयी।

सुबह सवेरे जब वह उठी तो उसने एक बुढ़िया को पेड़ के नीचे खड़े देखा। वह बोली — "मेरी बच्ची, तुम वहॉ ऊपर क्या कर रही हो?"

परीना ने उसको अपनी कहानी सुना दी कि वह किस मुसीबत में फॅस गयी थी। बुढ़िया बोली — "तुम यह तीन पौंड चिकनाई लो, यह तीन पौंड डबल रोटी लो और यह तीन पौंड बाजरा लो और इस रास्ते चली जाओ।"

परीना ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दी। आगे चल कर वह एक डबल रोटी बनाने वाले की बेकरी पर आयी जहॉ तीन स्त्रियॉ ओवन साफ करने के लिये अपने बाल नोच रही थीं।

परीना ने उनको वह तीन पौंड बाजरा दिया जो उन्होंने ओवन साफ करने में इस्तेमाल कर लिया और उस लड़की को आगे जाने के लिये कहा।

वह फिर आगे बढ़ी तो उसको तीन बड़े कुत्ते मिले जो वहॉ से किसी भी आने जाने वाले के ऊपर भौंकते थे और उनके पीछे दौड़ते

[15] Translated for the word "Peach tree"

थे। परीना ने उनको तीन पौंड डबल रोटी फेंकी तो वह उन्होंने खा ली और परीना को उसके रास्ते जाने दिया।

उसके बाद वह मीलों चली तो एक खून जैसी लाल रंग की नदी के पास आ पहुँची। वह सोच ही नही सकी कि वह उसे कैसे पार करे।

फिर उसे याद आया कि उस बुढ़िया ने उससे यह कहने के लिये कह रखा था —

कितना सुन्दर लाल पानी है, पर मुझे जल्दी जाना है नहीं तो मैं तुम्हें जरूर चखती

सो उस बुढ़िया की बात याद कर के उसने वहाँ ऐसा ही कह दिया। ऐसा कहते ही उस नदी का पानी दो हिस्सों में बँट गया और वह उसमें से बने रास्ते में से उस नदी को पार कर गयी।

नदी के दूसरी तरफ परीना ने दुनियाँ का एक बहुत ही सुन्दर और बड़ा महल देखा। पर उसका दरवाजा इतनी जल्दी से खुल और बन्द हो रहा था कि उसके अन्दर किसी का भी घुसना मुमकिन नहीं था।

सो परीना ने उस दरवाजे के कब्जों[16] में तीन पौंड चिकनाई लगायी तब कहीं जा कर वह बहुत धीरे से बन्द होने और खुलने लगा।

[16] Translated for the word “Hinges”. See its picture above.

अब परीना उस महल के अन्दर चली गयी। उसने देखा कि खजाना एक मेज पर एक सन्दूकची में रखा है। उसने उस सन्दूकची को उठा लिया और वह उसको उठा कर वहॉ से ले कर जाने ही वाली थी कि वह सन्दूकची बोली — "ओ दरवाजे, इसको मार दे।"

दरवाजा बोला — "मैं इसे नहीं मार सकता क्योंकि इसने मेरे कब्जों में चिकनाई लगायी है जिनको किसी ने न जाने कबसे देखा तक नहीं है।"

परीना दरवाजे में से हो कर निकल गयी। जब वह नदी पर आयी तो वह सन्दूकची बोली — "ओ नदी इसको डुबो दे, इसको डुबो दे।"

नदी बोली — "मै इसको नहीं डुबो सकती क्योंकि इसने मुझसे कहा है कि मेरा लाल पानी कितना सुन्दर है।"

लड़की अब चलते चलते कुत्तों के पास तक आयी तो सन्दूकची ने कुत्तों से कहा — "कुत्तों इसको मार दो, इसको काट लो।"

पर कुत्तों ने कहा — "नहीं, हम इसको नहीं काट सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड डबल रोटी खिलायी है।"

फिर वह लड़की चलते चलते बेकरी की दूकान पर आयी तो सन्दूकची ने ओवन से कहा — "इसको जला डालो, ओ ओवन इसको जला डालो।"

पर ओवन की जगह उन तीन स्त्रियों ने जवाब दिया — "हम इसको नहीं जला सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड बाजरा दिया है और अब हमें इसको साफ करने के लिये अपने बाल नहीं नोचने पड़ेंगे।"

अब परीना करीब करीब अपने घर आ पहुँची थी। उसको भी उस सन्दूकची को देखने की उतनी ही उत्सुकता थी जितनी कि दूसरी छोटी लड़कियों को होती है सो उसने उस सन्दूकची को खोल कर उसमें झाँकने की सोची।

जैसे ही उसने वह सन्दूकची खोली तो उसमें से एक सुनहरी मुर्गी और उसके कई चूज़े निकल पड़े। वे तो उस सन्दूकची में से निकलते ही इधर उधर इतनी तेज़ी से भाग गये कि कोई उनको पकड़ ही नहीं सकता था।

परीना उनके पीछे पीछे भागी। वह सेब के पेड़ के पास से गुजरी पर वे चूज़े तो वहाँ थे ही नहीं। वह खूबानी के पेड़ के पास आयी पर वे तो वहाँ भी नहीं थे।

फिर वह नाशपाती के पेड़ के पास आयी तो वहाँ उसको वह बुढ़िया अपने हाथ में जादू की डंडी लिये खड़ी दिखायी दी और वे मुर्गी और उसके चूज़े उसके चारों तरफ दाना खा रहे थे।

वह बुढ़िया शू शू करती उनके पीछे भागी तो वह मुर्गी और उसके बच्चे फिर से सन्दूकची में घुस गये।

परीना उस सन्दूकची को ले कर जब महल वापस लौटी तो राजा का बेटा उससे मिलने के लिये बाहर आया और बोला — "जब मेरे पिता तुमसे कोई इनाम माँगने को कहें तो उनसे नीचे वाले कमरे में रखा कोयले का बक्सा माँग लेना।"

महल के दरवाजे की सीढ़ियों पर परीना का स्वागत करने के लिये राजा की नौकरानियाँ, राजा और सारा दरबार खड़ा था। परीना ने वह सुनहरी मुर्गी और उसके चूज़े राजा को दे दिये।

राजा बोला — "माँगो तुम क्या माँगती हो परीना? तुम जो भी माँगोगी मैं तुमको वही दूँगा।"

परीना बोली — "मुझे नीचे के कमरे में रखा कोयले का बक्सा चाहिये।"

राजा तो उसकी यह अजीब सी माँग सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसको उसकी यह माँग कुछ अजीब सी जरूर लगी पर वह क्या करता। उसने उसको वायदा किया था कि वह जो माँगेगी वह उसको वही देगा सो राजा के नौकर नीचे के कमरे से वह कोयले का बक्सा तुरन्त ही उठा कर ले आये।

परीना ने उस बक्से को खोला तो उसमें से राजा का बेटा कूद कर बाहर आ गया जो उस बक्से के अन्दर छिपा बैठा था।

राजा ने खुशी खुशी परीना की शादी अपने बेटे से कर दी और सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

# 4 नकली नानी[17]

सहायता करने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक माँ को आटा छानना था पर उसके पास आटा छानने के लिये चलनी नहीं थी। उसने अपनी बेटी को अपनी माँ के घर चलनी लाने के लिये भेजा।

बच्ची ने अपने लिये कुछ खाना बाँधा – एक अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी और थोड़ा सा तेल, और वह अपनी नानी के घर से चलनी लाने चल दी।

उसकी नानी के घर के रास्ते में जोरडन नदी[18] पड़ती थी। जब वह जोरडन नदी के पास पहुँची तो उससे बोली — "ओ जोरडन नदी, मुझे नदी पार करने दो।"

जोरडन नदी बोली — "अगर तुम मुझे अपनी अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दो तो मैं तुमको नदी पार करने दूँगी।" जोरडन नदी को अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी बहुत अच्छी लगती थी। वह उसको अपने भँवर में घुमा घुमा कर खाती थी।

---

[17] False Grandmother – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[18] Jordan River

सो बच्ची ने अपनी अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी नदी में फेंक दी। उस डबल रोटी को नदी में फेंकते ही नदी का पानी नीचे उतर गया और वह बच्ची उस नदी को पार कर गयी।

चलते चलते वह बच्ची रेक दरवाजे के पास पहुँची तो बोली — "रेक गेट, रेक गेट, मुझे अपने अन्दर से जाने दोगे?"

रेक गेट बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं, पर अगर तुम मुझे तेल के साथ डबल रोटी खाने के लिये दो तो।" रेक गेट को तेल के साथ डबल रोटी बहुत अच्छी लगती थी।

क्योंकि उसके कब्जे[19] बहुत जंग लगे थे और जब वह तेल लगी डबल रोटी खाता था तो उसके कब्जे बहुत आसानी से चलने लगते थे। सो बच्ची ने उसको भी थोड़ी सी डबल रोटी और तेल दिया और रेक गेट ने उसको अपने अन्दर से जाने दिया।

अब वह अपनी नानी के घर पहुँच गयी थी। पर उसके घर का दरवाजा बहुत कस के बन्द था सो वह बाहर से ही चिल्लायी — "नानी नानी, दरवाजा खोलो। यह मैं हूँ। मुझे अन्दर आने दो।"

अन्दर से नानी की आवाज आयी — "बेटी, मैं बीमार पड़ी हूँ तुम खिड़की से अन्दर आ जाओ।"

बच्ची बोली — "नानी, मैं खिड़की से अन्दर नहीं आ सकती। खिड़की बहुत ऊँची है।"

[19] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

नानी फिर बोली — "तो फिर बिल्ली के अन्दर आने के दरवाजे से अन्दर आ जाओ।"

बच्ची बोली — "बिल्ली के अन्दर आने का दरवाजा तो बहुत ही छोटा है नानी। मैं उसके अन्दर तो घुस ही नहीं सकती।"

"तब फिर ज़रा रुको।" कह कर उसकी नानी ने एक रस्सी नीचे गिरा दी और उससे उस बच्ची को खिड़की से ऊपर खींच लिया।

कमरे में अँधेरा था सो वह बच्ची यह देख नहीं पायी कि उसको किसने ऊपर खींचा। असल में उस कमरे में उसकी नानी की बजाय एक जादूगरनी[20] लेटी हुई थी।

उस जादूगरनी ने उसकी नानी को एक ही कौर में निगल लिया था। वह उसके दाँत नहीं खा पायी थी क्योंकि वे उसकी नानी ने एक बर्तन में रख दिये थे। जादूगरनी ने उनको उबलने के लिये एक बर्तन में रख दिया।

बच्ची अन्दर आ कर बोली — "नानी नानी, माँ ने चलनी मँगायी है।"

जादूगरनी बोली — "बेटी, अब तो बहुत देर हो चुकी है। अब मैं वह तुमको कल दूँगी। आओ अब तुम सो जाओ।"

बच्ची बोली — "पर नानी मुझको बहुत भूख लगी है। पहले मुझे खाना चाहिये।"

[20] Translated for the word "Ogress"

जादूगरनी बोली — "देखो तो एक बर्तन में बीन्स उबल रही हैं तुम वह खा लो।" पर उस बर्तन में तो नानी के दॉत उबल रहे थे।

बच्ची ने उस बर्तन को इधर उधर हिलाया तो बोली — "नानी ये बीन्स तो बहुत सख्त हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर कड़ाही में से पकौड़े निकाल कर खा लो।"

अब कड़ाही में तो नानी के कान थे। बच्ची ने उनमें कॉटा घुसा कर देखा तो बोली — "पर नानी ये तो करारे नहीं हैं बहुत ही मुलायम हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर तुम अब तुम सो जाओ कल खा लेना।"

यह सुन कर वह बच्ची अपनी नानी के पास उसके बिस्तर में घुस गयी। उसने नानी का एक हाथ छुआ तो बोली — "नानी तुम्हारा हाथ इतना सारे बालों वाला क्यों है?"

जादूगरनी बोली — "क्योंकि मेरी उॅगलियों में बहुत सारी अॅगूठियॉ हैं।"

फिर उसने नानी की छाती पर हाथ रखा तो वह बोली — "नानी तुम्हारी तो छाती पर भी इतने सारे बाल है?"

जादूगरनी बोली — "हॉ बेटी, क्योंकि मैंने अपने गले में बहुत सारी मालाऐं पहन रखी हैं।"

फिर उसने नानी के होठ छुए और बोली — "नानी तुम्हारे होठों पर इतने सारे बाल क्यों हैं?"

जादूगरनी फिर बोली — "क्योंकि मैंने अपने कपड़े बहुत कसे हुए पहन रखे हैं।"

इसके बाद उसके हाथ में नानी की पूँछ आ गयी तो उसको लगा कि ये बाल हों या न हों पर नानी की पूँछ तो कभी थी ही नहीं। उनकी यह पूँछ कहाँ से आ गयी। लगता है कि यह मेरी नानी नहीं बल्कि जादूगरनी है, और कोई नहीं।

सो वह बोली — "नानी मैं तब तक नहीं सो सकती जब तक मैं अपना छोटा काम[21] न कर आऊँ।"

जादूगरनी बोली — "तो जाओ नीचे जानवरों के बाड़े में चली जाओ।" यह कह कर उसने बच्ची को नीचे बाड़े में उतार दिया। जैसे ही वह बच्ची नीचे बाड़े में उतरी उसने अपनी रस्सी खोली और उसमें एक बकरी बाँध दी।

कुछ मिनट बाद नानी ने पूछा — "तुम्हारा छोटा काम हो गया?"

बच्ची ने भी जब बकरी के गले में रस्सी बाँध दी तो वह बोली — "हाँ नानी मेरा काम हो गया। बस अब तुम मुझे ऊपर खींच लो।"

[21] To urinate

जादूगरनी ने रस्सी ऊपर खींचनी शुरू की तो वह बच्ची चिल्लाने लगी — "बालों वाली जादूगरनी, बालों वाली जादूगरनी।" उसने बाड़े का दरवाजा खोला और वहाँ से भाग ली।

उधर जादूगरनी रस्सी खींचती रही तो वहाँ तो बच्ची की जगह एक बकरी आ गयी। बच्ची की जगह बकरी को देख कर वह जादूगरनी अपने बिस्तर से कूदी और बच्ची के पीछे भागी।

भागते भागते बच्ची रेक गेट के पास पहुँची तो जादूगरनी चिल्लायी — "ओ रेक दरवाजे, इस लड़की को इस दरवाजे से बाहर नहीं जाने देना।"

रेक गेट बोला — "मैं तो इसको जाने दूँगा क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये तेल के साथ डबल रोटी दी है।" और वह बच्ची उस गेट से बाहर निकल गयी।

आगे चल कर बच्ची जोरडन नदी के पास पहुँची तो जादूगरनी फिर पीछे से चिल्लायी — "ओ जोरडन नदी, इस लड़की को पार नहीं उतरने देना।"

पर जोरडन नदी बोली — "मैं तो इसको उस पार जाने दूँगी क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दी है।" और उसने भी बच्ची को पार जाने दिया। इस तरह वह बच्ची दरवाजा और नदी दोनों पार कर गयी।

पर जब जादूगरनी जोरडन नदी पार करने लगी तो उसने अपना पानी नीचे नहीं किया और वह जादूगरनी उस नदी के पानी के बहाव में बह गयी।

बच्ची दूसरे किनारे पर खड़ी खड़ी उसको मुँह बना बना कर चिढ़ाती रही। इस तरह से बच्ची ने जोरडन नदी और रेक गेट की सहायता कर के अपने आपको बचा लिया और जादूगरनी को मार दिया।

# 5 बिल्लियों की कहानी[22]

एक स्त्री के दो बेटियॉ थीं – एक तो उसकी अपनी बेटी थी और दूसरी उसकी सौतेली बेटी थी। वह अपनी बेटी को तो बहुत प्यार करती थी पर अपनी सौतेली बेटी को नौकर की तरह से रखती थी।

एक दिन उसने अपनी सौतेली बेटी को चिकोरी इकट्ठी करने के लिये जंगल भेजा पर काफी ढूँढने के बाद भी उसको चिकोरी तो मिली नहीं उसको एक बहुत बड़ा गोभी का फूल दिखायी दे गया। उसने उस गोभी के फूल को उखाड़ने की कोशिश की पर वह काफी कोशिशों के बाद ही उखड़ पाया।

उस फूल को उखाड़ने से वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया – एक कुँए जितना बड़ा। उस कुँए में नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी बनी हुई थी। वह लड़की यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कुँए में क्या था सो वह उस सीढ़ी के सहारे सहारे उस कुँए में नीचे उतर गयी।

नीचे जा कर उसको एक घर मिला जो बिल्लियों से भरा हुआ था। सारी बिल्लियॉ अपने अपने कामों में लगी हुई थीं। कोई घर

[22] The Tale of the Cats – a folktale from Italy from its Terra d'Otranto. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

की सफाई कर रही थी, तो कोई कुँए से पानी खींच रही थी, तो कोई सिलाई कर रही थी, कोई कपड़े धो रही थी, कोई डबल रोटी बना रही थी।

लड़की ने एक बिल्ली के हाथ से झाड़ू ले ली और उसकी घर की सफाई में मदद करने लगी। फिर एक दूसरी बिल्ली से उसने मैली चादरें ले लीं और उसकी उनको धोने में मदद करने लगी। फिर उसने उनकी पानी खींचने में मदद की और एक बिल्ली को डबल रोटी ओवन में रखने में मदद की।

दोपहर को एक बड़ी बिल्ली आयी जो उन सब बिल्लियों की मॉ थी। आ कर उसने घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग" और बोली — "जिस जिसने काम किया है वह आ कर खाना खा ले। और जिसने भी काम नहीं किया है वह आये और हमको खाना खाते देखे।"

बिल्लियॉ बोलीं — "मॉ, हममें से हर एक ने काम किया है पर इस लड़की ने हम सबसे ज़्यादा काम किया है।"

बड़ी बिल्ली बोली — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो। आओ और हमारे साथ आ कर खाना खाओ।" सो वे दोनों एक मेज पर बैठ गयीं। मॉ बिल्ली ने उसको थोड़ा सा मॉस दिया, मैकेरोनी[23] दी और भुना हुआ मुर्गा दिया पर उसने अपने बच्चों को केवल बीन्स हीं दीं।

[23] A kind of Italian food preparation. See its picture above.

इससे वह लड़की कुछ नाखुश हो गयी क्योंकि यह अच्छा खाना केवल वही अकेले ही खा रही थी और बाकी सब बिल्लियॉ तो केवल बीन्स ही खा रहीं थीं। उसको वे भूखी भी लगीं सो उसने अपने खाने में से हर चीज़ उनको दी।

जब वे सब खाना खा कर उठे तो लड़की ने मेज साफ की, बिल्लियों की भी प्लेटें साफ कीं, कमरा बुहारा और सारा सामान जहॉ रखा जाना चाहिये था वहीं रख दिया।

फिर उसने मॉ बिल्ली से कहा — "मॉ बिल्ली, अब मुझे अपने घर जाना चाहिये नहीं तो मेरी मॉ मुझे डॉटेगी।"

मॉ बिल्ली बोली — "बेटी एक मिनट। ज़रा रुको। मैं तुमको कुछ देना चाहती हूॅ।"

उनके घर के नीचे की तरफ एक बहुत बड़ा भंडारघर था जिसमें बहुत सारी चीजें रखी थीं - सिल्क का सामान, पोशाकें, स्कर्ट, ब्लाउज, ऐप्रन, सूती रूमाल, गाय की खाल के जूते आदि आदि।

मॉ बिल्ली उस लड़की को नीचे ले गयी और बोली — "तुमको इसमें से जो चाहिये वह ले लो।"

उस गरीब लड़की ने जो नंगे पैर थी और फटे कपड़ों में थी बोली — "बस मुझे एक ड्रैस दे दो, एक गाय की खाल का जूता दे दो और एक स्कार्फ।"

मॉ बिल्ली बोली — "नहीं केवल इतना ही नहीं तुमने मेरी बच्चियों की बहुत सहायता की है इसलिये मैं तुमको एक बहुत ही अच्छी भेंट दूँगी।"

कह कर उसने एक सबसे अच्छा सिल्क का गाउन उठाया, एक बड़ा और बहुत सुन्दर रूमाल और एक जोड़ी स्लिपर उठाये और उन सबको उस लड़की को पहना कर बोली — "अब जब तुम बाहर जाओगी तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उँगली डालना और फिर देखना कि क्या होता है।" और उसको विदा किया।

जब वह लड़की बाहर गयी तो उसको दीवार में छेद दिखायी दिये। मॉ बिल्ली के कहे अनुसार उसने उनमें अपनी उँगलियॉ डालीं तो उसकी सारी उँगलियों में बहुत सुन्दर सुन्दर अँगूठियॉ आ गयीं।

फिर उसने ऊपर देखा तो एक तारा उसकी भौंह पर आ गिरा। इस तरह वह एक दुलहिन की तरह सजी धजी घर पहुँची।

उसकी सौतेली मॉ ने पूछा — "तुझको ये इतनी अच्छी अच्छी चीज़ें कहॉ से मिलीं?"

वह लड़की सीधे स्वभाव बोली — "मॉ मुझको कुछ छोटी छोटी बिल्लियॉ मिल गयी थीं। मैंने उनका काम करने में थोड़ी सी मदद कर दी तो उन्होंने मुझे ये थोड़ी सी भेंटें दे दीं।" और उसने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी।

यह सुन कर उसकी सौतेली मॉ तो बस उस जगह अपनी आलसी बेटी को भेजने का इन्तजार करने लगी। अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी जा तू भी जा ताकि तू भी अपनी बहिन की तरह से अमीर हो कर आ सके।"

वह बोली — "मुझे नहीं चाहिये यह सब।" क्योंकि उसको तो बड़े आदमियों से बात करने की भी तमीज नहीं थी। वह फिर बोली — "मुझे अभी जाना भी नहीं है। बाहर बहुत ठंडा है। मैं तो यहीं आग के पास बैठती हूॅ।"

पर उसकी मॉ ने एक डंडी उठायी और उससे उसको हड़काते हुए घर के बाहर निकाल दिया। सो अब तो उस बेचारी को वहॉ जाना ही पड़ा। बड़ी मुश्किल से तो उसको वह बड़ा गोभी का फूल मिला और फिर बड़ी मुश्किल से वह उखड़ा।

फूल उखाड कर वह भी उस कुॅए में बनी सीढ़ियों से उतर कर नीचे बिल्लियों के घर में पहुॅची।

जब उसने पहली बिल्ली को देखा तो उसने उसकी पूॅछ अपनी टॉगों के बीच में दबा ली। दूसरी को देखा तो उसके कान खींच लिये और तीसरी की मूॅछें खींच लीं। जो बिल्ली सिलाई कर रही थी उसने उसकी सुई में से धागा निकाल दिया। जो बिल्ली पानी खींच रही थी उसकी उसने बालटी का पानी पलट दिया।

इस तरह उसने उन सब बिल्लियों के सारे काम रोक दिये जो वे उस समय कर रही थीं। वे बेचारी कुछ भी नहीं कर सकीं।

दोपहर को जब मॉ बिल्ली आयी तो उसने रोज की तरह घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग।" और आ कर रोज की तरह से बोली "जिस किसी ने भी काम किया है वह यहॉ आये और खाना खा ले और जिसने भी काम नहीं किया है वह केवल हमको खाना खाते देखता रहे।"

बिल्लियॉ बोलीं — "मॉ, हम लोग तो काम करना चाहते थे पर इस लड़की ने हमको हमारी पूँछ पकड़ कर खींच लिया, हमारे सारे काम रोक दिये और हमारी जिन्दगी दूभर कर दी इसलिये हम कुछ भी नहीं कर सके।"

मॉ बिल्ली बोली — "ठीक है, आओ मेज पर बैठो और खाना खाओ।"

मॉ बिल्ली ने उस लड़की को सिरके में डूबी हुई जौ की केक खाने के लिये दी और अपनी बच्चियों को मैकेरोनी और मॉस खाने के लिये दिया। जितनी देर तक वे सब खाना खाते रहे वह लड़की बिल्लियों का ही खाना खाती रही।

जब उनका खाना खत्म हो गया तो उस लड़की ने कुछ नहीं किया – न तो उसने मेज साफ की, न ही उसने प्लेटें साफ कीं और न ही उसने सब सामान वहॉ से उठा कर अपनी जगह रखा।

वह बोली — "मॉ बिल्ली, मुझे वह सब सामान दो जो तुमने मेरी बहिन को दिया था।"

मॉ बिल्ली उसको नीचे बने अपने भंडारघर में ले गयी और उससे वहॉ रखे सामान को दिखा कर पूछा कि उसमें से उसको क्या चाहिये।

वह लड़की बोली — "वह वाली पोशाक जो सबसे अच्छी है और वह वाले जूते जिनकी एड़ी सबसे ऊॅची है।"

मॉ बिल्ली बोली — "ठीक है। तुम अपने कपड़े उतारो और यह तेल लगी ऊनी पोशाक पहन लो और ये जूते जिनकी एड़ी सारी खत्म हो चुकी है इनको पहन लो।"

उसको ये कपड़े पहना कर और उसके बालों में एक फटा स्कार्फ बॉध कर उस मॉ बिल्ली ने उसको वहॉ से भेज दिया और बोली — "अब तुम जाओ और जब तुम बाहर जाओ तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उॅगलियॉ डालना और फिर देखना कि क्या होता है।"

वह लड़की वहॉ से चली गयी। बाहर जा कर उसने दीवार में कुछ छेद देखे तो उनमें अपनी उॅगलियॉ डाल दीं। उसकी उॅगलियों में बहुत सारे कीड़े लिपट गये। उसने अपनी उॅगलियों को उन छेदों में से जितना खींचने की कोशिश की उतनी ही वे उसमें जकड़ी रह गयीं।

उसने ऊपर देखा तो एक खून से भरा सौसेज उसके मुॅह पर गिर पडा और उसे उसको बराबर खाते रहना पड़ा।

जब वह इस पोशाक में घर पहुँची तो वह एक चुड़ैल से भी बुरी शक्ल में थी। उसकी माँ तो उसको इस शक्ल में देख कर इतना गुस्सा और परेशान हुई कि वह तो वहीं की वहीं मर गयी। और वह लड़की भी वह खून भरा सौसेज खा कर कुछ दिनों बाद ही मर गयी।

इस तरह दूसरों से अच्छे व्यवहार और बुरे व्यवहार का नतीजा ऐसा ही होता है।

# 6 बेकर का आलसी बेटा[24]

मदद की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश में कही सुनी जाती है। देखो कि एक मछली के साथ की गयी मदद क्या रंग लायी।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल में एक स्त्री बेकर[25] थी। उसके एक बहुत ही आलसी बेटा था। जब सारे बच्चे आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जाते थे तो उसको भी लकड़ी लाने के लिये कहा तो जाता था पर वह वहॉ कभी नहीं जाता था।

अपने ऐसे आलसी बेटे को देख कर उस स्त्री को बहुत दुख होता था पर उसकी समझ में नहीं आता कि वह उसके बारे में करे तो करे क्या।

सो एक दिन उसने उस बेटे को जबरदस्ती उन बच्चों के साथ लकड़ियॉ लाने के लिये भेज दिया तो वह भी दूसरे बच्चों के साथ चला गया।

पर जैसे ही वह जंगल पहुॅचा तो दूसरे बच्चे तो लकड़ियॉ और पेड़ों की छोटी छोटी शाखें इकट्ठा करने में लग गये पर वह एक नदी

[24] Baker's Idle Son – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the book "Portugese Folk-Tales" This tale is available at : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=54&tale=1695

[25] Baker is the man or woman who bakes bread, biscuits, cookies cakes etc… Baking is a process of cooking food. See her picture above.

के किनारे अपना खाना खाने बैठ गया जो वह अपने घर से लाया था।

जब वह खाना खा रहा था तो एक मछली वहॉ आयी और उसका गिरा हुआ खाना खाने लगी। आखिर उसने उसको पकड़ लिया। मछली ने उससे प्रार्थना की कि अगर वह उसको मारे नहीं और छोड़ दे तो वह उसकी हर इच्छा पूरी करेगी।

पर उस आलसी लड़के को उस मछली पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूँ कि लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर जो मेरे साथ वाले सब बच्चों के लकड़ी के ढेरों से भी बड़ा हो मेरे सामने आ जाये। और वह मेरे बिना छुए ही यहॉ से मेरे घर तक चलता जाये।"

तुरन्त ही लकड़ी का बॅधा हुआ एक बहुत बड़ा ढेर उसके सामने आ गया। जब उसने लकड़ी के उस ढेर को ठीक से देख लिया तभी उसने उस मछली को समुद्र में जाने दिया।

अब वह घर वापस चला। घर जाते समय वह बीच में महल के सामने से गुजर रहा था तो महल की खिड़की पर राजकुमारी बैठी हुई थी।

राजकुमारी के साथ साथ साथ राजा भी बैठा था। उसको उस लकड़ी के ढेर को अपने आप चलते देख कर बहुत आनन्द आया।

राजकुमारी को भी वह देखने में इतना अच्छा लगा कि वह हॅस पड़ी।

उसको हॅसते देख कर आलसी लड़का बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि राजकुमारी के एक बेटा हो और उसको यह पता न चले कि उसका पिता कौन है।"

राजकुमारी को उसी समय से लगने लगा कि उसको बच्चे की आशा हो आयी है। जब राजा को यह पता चला तो वह यह जान कर उससे बहुत नाराज हुआ। उसने उसको उसकी प्रिय दासियों के साथ एक महल में कैद कर दिया। समय आने पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया।

वह आलसी लड़का फिर जंगल लौटा तो वह मछली फिर आयी और उसने लड़के को बताया कि उस राजकुमारी के बेटा हुआ है।

मछली के कहे अनुसार उसने राजा के महल के सामने एक महल बनवाया जो राजा के महल से भी ज़्यादा शानदार था।

इसके महल के बागीचे में हर रंग के फूल थे और उनमें एक फलों के पेड़ों का बागीचा भी था। इस फल के बागीचे में एक सन्तरे का पेड़ था जिस पर बारह सुनहरी सन्तरे लगे थे।

पर यह सब तो उसे उस मछली और परियों का दिया हुआ था। वह खुद तो बहुत आलसी था। महल बन जाने के बाद वह

आलसी लड़का उस महल में गया और एक राजकुमार बन कर रहने लगा। दूसरे लोग उसको केवल राजकुमार की तरह से ही जानते थे किसी और तरह उसे जानते ही नहीं थे।

एक दिन राजा ने उस लड़के के पास यह सन्देश भेजा कि वह उसका महल देखना चाहता है। उस आलसी लड़के ने कहा कि वह खुशी से अपना महल उसको दिखायेगा। उसने राजा और उसके सारे दरबारियों को सुबह के नाश्ते के लिये बुला लिया।

राजा और उसके दरबारी उसका महल देख कर बहुत खुश हुए कि उसमें कितने आराम के साधन थे। महल देखने के बाद वे उसका बागीचा देखने गये।

बागीचे में इतने सारे फूल देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य तो उन सबको सन्तरे का पेड़ देख कर हुआ जो उसके फलों के बागीचे में लगा हुआ था और जिस पर सुनहरी सन्तरे लगे हुए थे।

उस आलसी लड़के ने राजा और उसके दरबारियों से कहा कि वे वहॉ से कुछ भी ले जा सकते था सिवाय सुनहरी सन्तरों के।

सब कुछ देख कर वे सब नाश्ते के लिये महल लौटे और नाश्ते के लिये बैठे। जब नाश्ता खत्म हो गया तो राजा और दरबारी लोग अपने महल जाने के लिये लौटे।

जाते समय उस लड़के ने राजा से कहा कि वह उन सबको अपने महल में बुला कर बहुत खुश था और उसने उनका बहुत

अच्छे से स्वागत किया पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि इतने अच्छे स्वागत के बावजूद उसका एक सन्तरा गायब था।

दरबारियों ने तो साफ मना कर दिया कि उनमें से किसी ने उसका कोई सन्तरा नहीं लिया। उन्होंने उस लड़के को अपने कोट उतार कर भी दिखाये ताकि वह खुद अपनी ऑखों से यह देख सके कि उसका उनको अपराधी ठहराना ठीक नहीं था।

राजा को यह सुन कर बहुत शर्म आयी क्योंकि अब केवल वही एक देखने से रह गया था।

उसने अपना कोट उतारा पर जॉच करने पर उसकी जेबों से कुछ नहीं मिला। सो वह जब अपने कोट को दोबारा पहनने लगा तो उस लड़के ने उससे एक बार फिर से अपनी जेबें देखने के लिये कहा क्योंकि जब वह सन्तरा उसके दरबारियों ने नहीं लिया तो जरूर उसी ने लिया होगा।

सो राजा ने फिर से अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको अबकी बार अपनी जेब में एक सन्तरा मिल गया। उसने वह सन्तरा अपनी जेब से निकाल लिया।

पर राजा यह देख कर बहुत परेशान हो गया कि यह सन्तरा उसकी जेब में आया कहॉ से? क्योंकि उसने तो सन्तरा छुआ भी नहीं था। उसको बहुत शर्म आयी।

आलसी लड़के ने कहा कि आप चिन्ता न करें क्योंकि यही राजकुमारी के साथ भी हुआ जिसने यह जाने बिना एक बेटे को जन्म दिया कि उसका पिता कौन था।

इस तरह मछली के ऊपर पड़ा हुआ जादू टूट गया। अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गयी और उसने राजकुमारी से शादी कर ली।

और वह आलसी लड़का एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौट गया।

# 7 प्यार का राजा[26]

मदद करने वाली कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटियॉ थीं। वह अपना घर जंगली पत्ते और जड़ी बूटियॉ इकट्ठी कर के चलाता था।

एक दिन वह अपनी सबसे छोटी बेटी को साथ ले कर गया और एक बागीचे में जा कर सब्जियॉ तोड़ने लगा। लड़की को एक बहुत सुन्दर मूली दिखायी दे गयी तो उसने उसे उखाड़ना चाहा।

जैसे ही वह उसे उखाड़ रही थी तो न जाने कहॉ से वहॉ एक तुर्क आ गया और उससे बोला — "तुम लोगों ने मेरे मालिक के घर का दरवाजा क्यों खोला? अब तुमको अन्दर आना पड़ेगा और अब वही तुम्हारी सजा बतायेंगे।"

सो वे तीनों लोग जमीन के अन्दर चले गये। वे दोनों बेचारे डर के मारे ज़िन्दे से ज़्यादा मरे जैसे हो रहे थे। जब वे वहॉ बैठे हुए थे तो वहॉ एक हरी चिड़िया आयी और एक बर्तन में रखे हुए दूध में

[26] The King of Love – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/kinglove.html
Taken from the book: Crane, Thomas Frederick, "Italian Popular Tales", Boston: Houghton Mifflin Company. 1885

नहायी। फिर उसने अपने आपको सुखाया तो वह एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गयी।

उसने तुर्क से पूछा "ये लोग क्या चाहते हैं।"

तुर्क बोला — "सरकार ये लोग मूली तोड़ रहे थे कि इन्होंने गुफा का दरवाजा खोल दिया।"

यह सुन कर पिता बोला — "हमें क्या पता था कि यह किसी राजा का घर है। मेरी बेटी ने एक सुन्दर मूली देखी वह उसको अच्छी लगी तो उसने वह उखाड़ ली।"

मालिक ने कहा — "अगर यह बात है तो तुम्हारी बेटी मेरे पास मेरी पत्नी बन कर रहेगी। लो यह सोने का एक थैला लो और जाओ। और जब भी तुम अपनी बेटी को देखना चाहो तो यहाँ आ जाना और इसे अपना ही घर समझना।"

पिता ने अपनी बेटी को वहीं छोड़ा और अपने घर वापस चला गया। जब घर का मालिक लड़की के साथ अकेला रह गया तो उसने लड़की से कहा — "देखो रोज़ैला[27] अब तुम यहाँ की मालकिन हो। लो ये चाभियाँ लो।" कह कर उसने उसको घर की सारी चाभियाँ दे दीं। चाभियाँ ले कर वह लड़की बहुत खुश हो गयी।

एक दिन जब वह हरी चिड़िया कहीं बाहर गयी हुई थी तो उसकी बहिनों ने उससे मिलने की सोची। वे आयीं और उससे उसके

[27] Rosella – name of the girl, called Rusheeda also in Muslims

पति के बारे में पूछा। रोज़ैला बोली "मुझे पता नहीं। क्योंकि उसने मुझसे इस बात को जानने के लिये मना किया है कि मैं उसके बारे में कुछ जानूँ कि वह कौन है।"

उसकी बहिनों ने उससे बहुत जिद की कि वह यह बात जाने कि आखिर वह है कौन। सो जब वह घर आ गया और आदमी में बदल गया तो रोज़ैला ने एक लम्बी साँस ली।

उसके पति ने पूछा "क्या बात है?"

"कुछ नहीं।"

"तुम मुझे बताओ तो।"

लड़की ने कुछ देर तक तो उसे सवाल पूछने दिया फिर आखीर में बोली — "अगर तुम यह जानना ही चाहते हो कि मैं परेशान क्यों हूँ तो मैं कहे देती हूँ कि मैं तुम्हारा नाम जानना चाहती हूँ।"

उसके पति ने कहा कि वह उसके लिये इससे भी बुरा होगा। पर वह नहीं मानी और उससे उसका नाम जानने की जिद करती रही। तो उसने उससे सोने का एक बर्तन पानी भर कर एक कुर्सी पर रखने के लिये कहा और उसमें अपने पैर धोने शुरू किये।

उसने फिर पूछा — "रोज़ैला क्या तुम वाकई में मेरा नाम जानना चाहती हो।"

वह लड़की अपनी बात पर जमी रही बोली "हाँ।"

अब वह पानी उसकी कमर तक आ गया था क्योंकि अब वह चिड़िया बन चुका था और उस बर्तन के अन्दर तक चला गया था।

लेकिन उसने वही सवाल उससे एक बार फिर पूछा। उसने भी जवाब दिया "हॉ।"

अब वह पानी उस चिड़िया के मुँह तक आ चुका था। पति ने फिर पूछा कि क्या वह अभी भी उसका नाम जानना चाहती है। उसने फिर वही जवाब दिया "हॉ हॉ हॉ। मैं तुम्हारा नाम जानना चाहती हूँ।"

"तो सुनो मैं हूँ प्यार का राजा।" और यह कहने के साथ ही वह वहॉ से गायब हो गया। साथ में वे बर्तन और महल भी गायब हो गये। अब रोज़ैला एक बड़े से मैदान में अकेली खड़ी थी। उसकी सहायता करने वाला भी अब वहॉ कोई नहीं था। उसने अपने नौकरों को भी आवाज लगायी पर किसी का कोई जवाब ही नहीं आया।

इस पर वह बोली — "क्योंकि मेरा पति गायब हो गया है तो मुझे अब अकेले ही इधर उधर घूमना पड़ेगा और उसे ढूँढना पड़ेगा।"

वह बेचारी लड़की जिसको बच्चे की आशा भी थी इधर उधर घूमती रही। रात को वह एक अकेले मैदान में आ निकली। उसका दिल डूबने लगा था। वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे सो वह ज़ोर से बोली —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

जैसे ही उसने यह कहा कि उसके सामने एक राक्षसी प्रगट हो गयी और बोली — "ओ नीच तेरी यह हिम्मत कैसे हुई कि तू मेरे भानजे[28] को ढूँढे।" और उसे खा ही जाने वाली थी कि उसको उसकी दुखी हालत देख कर उस पर दया आ गयी। उसने उसे रात को शरण दे दी।

सुबह को उसने उसे रोटी का एक टुकड़ा दिया और कहा — "हम सात बहिनें हैं और सब राक्षसियाँ हैं और हम सबमें बुरी है तुम्हारी सास। तो पहले तू उसको ढूँढ।"

थोड़े में कहो तो वह लड़की छह दिनों तक उसको ढूँढती हुई इधर उधर घूमती रही। इस बीच वह छह राक्षसियों से मिली जिन्होंने सबने उसके साथ उसी तरीके का बरताव किया।

सातवें दिन बहुत दुखी हो कर उसने अपना रोज का गाना गा दिया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

तो प्यार के राजा की बहिन वहाँ प्रगट हुई। उसने उससे कहा — "रोज़ैला मेरी माँ बाहर गयी हुई है। आओ ऊपर आ जाओ।" कह कर उसने अपनी चोटी नीचे की तरफ फेंक दी। रोज़ैला ने उसे

[28] Translated for the word "Nephew" – he may be the son of the sister or brother. Here this means the son of the sister

पकड़ी लिया और प्यार के राजा की बहिन ने उसे ऊपर खींच लिया। उसने उसे कुछ खिलाया और बताया कि कैसे उसको उसकी मॉ को पकड़ना है और नोचना है जब तक कि वह चिल्ला कर यह न कह दे कि "मेरे बेटे प्यार के राजा के लिये मुझे छोड़ दो।"

रोज़ैला ने वैसा ही किया पर वह राक्षसी इतनी ज़्यादा गुस्सा थी कि वह तो बस उसको खाने ही वाली थी लेकिन उसकी बेटियों ने उसको धमकी दी कि अगर उसने रोज़ैला को खाया तो वे उसको छोड़ कर चली जायेंगी।

इस पर उसने कहा — "ठीक है। तब मैं एक चिट्ठी लिखती हूॅ जो उसको मेरी एक दोस्त के पास ले कर जानी पड़ेगी।"

कह कर उसने अपने दोस्त के नाम एक चिट्ठी लिखी पर बेचारी रोज़ैला का तो उसको पढ़ कर दिल ही टूट गया। पर फिर भी उसको उसका वह काम करना तो था ही।

सो जब वह नीचे उतरी तो उसने देखा कि वह एक खुले मैदान में खड़ी है। वहॉ भी उसने अपने वही रोज का गाना गाया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

तो वहॉ प्यार का राजा प्रगट हो गया और बोला — "तुमने देखा कि तुम्हारी मेरा नाम जानने की उत्सुकता तुम्हें यहॉ तक ले आयी।"

बेचारी लड़की। जैसे ही उसने प्यार के राजा को देखा तो वह रो पड़ी और अपने किये की माफी मॉगने लगी। उसको उस पर दया आ गयी तो उसने उससे कहा — "अब तुम मेरी बात सुनो क्योंकि तुमको अब यह करना ही चाहिये नहीं तो तुम ज़िन्दा नहीं बचोगी।

जब तुम जा रही होगी तब तुम्हारे रास्ते में एक खून की नदी पड़ेगी। तुम उसमें से झुक कर अपने हाथों में उसका थोड़ा सा खून लेना और कहना "ओह यह कितना साफ पानी है। इतना साफ पानी तो मैंने कभी पिया ही नहीं।" उसके बाद तुम एक गदले पानी की नदी के पास आओगी तो वहॉ भी ऐसा ही करना।

उसके बाद तुम एक बागीचे में आ जाओगी जहॉ बहुत सारे फल लगे होंगे। वहॉ तुम कुछ नाशपातियॉ[29] तोड़ कर खाना और कहना "ओह कितनी स्वादिष्ट नाशपातियॉ हैं। इतनी स्वादिष्ट नाशपातियॉ तो मैंने इससे पहले कभी नहीं खायीं।

इसके बाद तुमको एक ओवन मिलेगा जिसमें दिन रात डबल रोटियॉ बनती रहती हैं पर उन्हें खरीदता कोई नहीं। वहॉ आ कर तुम कहना "ओह कितनी अच्छी डबल रोटी है ऐसी डबल रोटी तो मैंने पहले कभी खायी ही नहीं।"

[29] Translated for the word "Pear". See their picture above.

उसके बाद तुमको एक फाटक[30] मिलेगा जिस पर दो भूखे कुत्ते पहरा दे रहे होंगे। तुम उनको डबल रोटी का एक एक टुकड़ा खाने के लिये दे देना।

उसके बाद तुम एक दरवाजे पर आओगी जो धूल और मकड़ी के जालों से भरा हुआ होगा। वहॉ आ कर तुम एक झाड़ू लेना और उसे साफ कर देना।

उसके बाद तुम्हें सीढ़ियॉ मिलेंगी। आधी सीढ़ियॉ चढ़ने के बाद तुम्हें दो बड़े साइज़ के आदमी[31] मिलेंगे जिनके दोनों के पास एक एक गन्दा सा मॉस का टुकड़ा रखा होगा। तुम एक ब्रश लेना और उससे उनके मॉस के टुकड़ों को उनके लिये साफ कर देना।

उसके बाद तुम घर में घुसोगी तो वहॉ तुमको एक रेज़र एक कैंची और एक चाकू मिलेगा। वहॉ से कोई चीज़ ले कर तुम उनको पौलिश कर देना। जब तुम यह सब कर चुको तब तुम जा कर यह चिट्ठी मेरी मॉ की दोस्त को दे देना।

जब वह यह चिट्ठी पढ़ रही हो तो वहॉ मेज पर रखा हुआ एक छोटा सा डिब्बा उठाना और उसको ले कर वहॉ से भाग आना।

यह सब तुम इसी तरह से करना जैसा कि मैंने तुम्हें बताया है वरना तुम वहॉ से ज़िन्दा बच कर नहीं आ पाओगी।"

[30] Translated for the word "Entrance"

[31] Translated for the word "Giant"

रोज़ैला ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था। जब राक्षसी चिट्ठी पढ़ रही थी तो रोज़ैला ने मेज पर से डिब्बा उठाया और उसे ले कर वहॉ से भाग गयी।

जब राक्षसी ने चिट्ठी पढ़ ली तब वह चिल्लायी "रोज़ैला रोज़ैला।" पर जब उसको कोई जवाब नहीं मिला तो उसको लगा कि उसको तो धोखा दिया गया है तो वह चिल्लायी "रेज़र कैंची चाकू तुम लोग उसे काट डालो।"

तो उन्होंने उसे जवाब दिया — "जब तक हम रेज़र कैंची और चाकू थे तब तक क्या तुमने हमें कभी पौलिश किया? रोज़ैला आयी तो उसने हमारे ऊपर पौलिश की। हम उसे कैसे काट दें।"

राक्षसी फिर गुस्से में भर कर चिल्लायी — "ओ सीढ़ियों उसको खा जाओ।" सीढ़ियॉ बोलीं — "जब तक हम सीढ़ियॉ थीं तब तक क्या तुमने हमें कभी बुहार कर साफ किया? रोज़ैला आयी तो उसने हमें झाड़ू लगा कर साफ किया। हम उसको कैसे खा सकते हैं।"

राक्षसी गुस्से में भर कर फिर चिल्लायी — "ओ बड़े साइज़ के लोगों उसको कुचल कर रख दो।" बड़े साइज़ के लोगों ने कहा — "जब तक हम बड़े साइज़ के आदमी थे क्या कभी तुमने हमारे खाने को साफ किया? रोजैला आयी और उसने यह किया। हम उसको कैसे कुचल सकते हैं।"

अब तक राक्षसी का गुस्सा बहुत बढ़ गया था उसने चिल्ला कर अपने फाटक से कहा कि वह उसको ज़िन्दा ही जमीन में गाड़ दे।

अपने कुत्तों को बोला कि वे उसको काट काट कर मार दें। ओवन को बोला कि वह उसको जला कर राख कर दे।

फल के पेड़ को बोला कि वह उसके ऊपर गिर कर उसको मार दे। नदियों को बोला कि वे उसको अपने अन्दर डुबो लें।

पर सबको रोज़ैला की उनके साथ की गयीं भलाइयॉ याद रहीं और उन्होंने सबने उसको किसी भी तरह का नुकसान पहुँचाने से मना कर दिया।

इस बीच रोज़ैला वहॉ से चलती रही चलती रही। काफी दूर निकल आने पर उसको यह जानने की उत्सुकता हुई कि उस बक्से में क्या था जिसको ले कर वह वहॉ से लिये चली आ रही थी।

उसने उसे खोल दिया तो उसमें से बहुत सारी छोटी छोटी कठपुतलियॉ निकल आयीं। कुछ नाच रही थीं कुछ गा रही थीं। कुछ वाद्य बजा रही थीं।

कुछ देर तक वह उनके नाच गाने का आनन्द लेती रही पर फिर जब वह वहॉ से चलने को हुई तो वे छोटी छोटी कठपुतलियॉ उस बक्से में अन्दर ही न जायें। रात हो आयी तो उसने फिर अपना वही गाना गाया —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

उसके यह गाते ही उसका पति फिर से वहॉ प्रगट हो गया और बोला — "उफ़ तुम्हारी यह उत्सुकता तो तुम्हारी जान ले कर ही छोड़ेगी।" कह कर उसने उन कठपुतलियों को उस बक्से के अन्दर जाने के लिये कहा।

उसके कहते ही वे सब कठपुतलियॉ उस बक्से के अन्दर चली गयीं और रोज़ैला भी उसको ले कर अपने रास्ते चल पड़ी। वह ठीक से अपनी सास के घर आ गयी।

जब राक्षसी ने उसके देखा तो वह गुस्से से चिल्लायी — "तू तो मेरे बेटे की वजह से यहॉ ज़िन्दा खड़ी हुई है वरना अब तक कभी की मर गयी होती।" कह कर वह उसको खा ही जाने वाली थी कि उसकी बेटियॉ बोलीं — "वह बेचारी बच्ची। वह तुम्हारे लिये बक्सा तो ले कर आ गयी अब तुम उसे क्यों खा जाना चाहती हो?"

इस पर वह बोली — "ठीक है तो तू मेरे बेटे प्यार के राजा से शादी करना चाहती है। ले ये छह गद्दे ले और इनको चिड़ियों के पंखों से भर दे।"

रोज़ैला फिर नीचे उतरी और इधर उधर घूम कर अपना वही पुराना गाना गाने लगी —

ओ प्यार के राजा तुमने किया भी और कहा भी
तुम एक सोने के बर्तन में से मेरे सामने सामने गायब हो गये
अब आज की रात मुझ बदकिस्मत को कौन शरण देगा

यह सुन कर उसका पति फिर उसके सामने प्रगट हुआ तो उसने उसको सब बताया कि क्या हुआ। उसके पति ने एक सीटी बजायी और चिड़ियों का राजा वहॉ आ गया। उसने सारी चिड़ियों को हुक्म दिया कि वे सब अपने अपने पंख ला कर वहॉ डाल दें वे छहों गद्दे उनसे भर दें और उनको राक्षसी के पास ले जायें।

जब ऐसा हो गया तो राक्षसी ने फिर कहा कि यह तो उसके बेटे की सहायता से हुआ है। फिर भी वह गयी और उन छह गद्दों से उसने अपने बेटे का बिस्तर बनाया और उसी दिन उसने अपने बेटे की शादी पुर्तगाल के राजा की बेटी से कर दी।

फिर उसने रोज़ैला को बुलाया और उससे कहा कि उसके बेटे की शादी हो चुकी है सो अब वह उसके शादी वाले पलंग के सामने दो जलती हुई मशालें ले कर झुके।

रोज़ैला ने उसकी बात मानी पर जल्दी ही प्यार के राजा ने यह कहते हुए कि रोज़ैला अब इस हालत में नहीं थी कि वह अपने दोनों हाथों में जलती हुई मशाल पकड़ सके उसने अपनी पत्नी को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वह रोज़ैला से अपनी जगह बदल ले।

जैसे ही रानी ने वे मशालें अपने हाथों में लीं कि तभी जमीन खुल गयी और वह उसमें समा गयी। फिर प्यार का राजा रोज़ैला के साथ हॅसी खुशी रहा।

जब राक्षसी ने सुना कि क्या हुआ तो उसने अपने सिर के ऊपर अपने दोनों हाथ पकड़ लिये और कहा कि रोज़ैला का बच्चा तब तक पैदा नहीं होना चाहिये जब तक उसके हाथ न खुल जायें।

इस पर प्यार के राजा ने एक चबूतरा[32] बनवाया जिस पर वह खुद लेट गया जैसे कि वह मर गया हो। फिर उसने सब घंटियॉ बजवा दीं जिससे बहुत सारे लोग चिल्ला चिल्ला कर रोने लगे "ओह प्यार का राजा कैसे मर गया?"

राक्षसी ने भी यह सुना तो पूछा "यह शोर कैसा है।"

उसकी बेटियों ने कहा कि उनका भाई उसकी अपनी गलतियों की वजह से मर गया है। जब राक्षसी ने यह सुना तो उसने यह कहते हुए अपने हाथ खोल दिये "अरे मेरा बेटा कैसे मर गया?"

जैसे ही उसने अपने हाथ खोले उसी समय रोज़ैला ने अपने बच्चे को जन्म दिया। जैसे ही राक्षसी ने यह सुना कि रोज़ैला का बच्चा पैदा हो चुका है तो उसके दिल की एक नस फट गयी और वह मर गयी। प्यार के राजा ने अपनी पत्नी और अपनी बहिनों को लिया और फिर सब सुख और शान्ति से रहने लगे।

[32] Translated for the word "Catafalque" – a coffin-like wooden structure on which dead body is kept in the state of lying.

# 8 वफादार और बेवफा[33]

यह लोक कथा नौर्स या नौरडिक या स्कैन्डेनेवियन देशों के स्वीडन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक गरीब पति पत्नी थे जो एक गॉव के एक छोटे से मकान में रहते थे। आखिर भगवान ने उनको एक बेटा दिया। बच्चे को देख कर वे दोनों बहुत खुश हुए।

जब उसकी किस्टिनिंग की रस्म हुई तो उनके मकान में एक हुल्ड्रा[34] आयी। वह बच्चे के पालने के पास बैठी और उसने यह भविष्यवाणी की कि उस बच्चे की किस्मत बहुत अच्छी होगी।

वह आगे बोली — "और इससे भी अच्छी बात यह है कि जब यह पन्द्रह साल का होगा तो मैं इसको बहुत ही अच्छे गुणों वाला एक घोड़ा भेंट में दूँगी। एक ऐसा घोड़ा जो बोलता भी होगा।"

यह कह कर हुल्ड्रा वहॉ से चली गयी।

बच्चा बड़ा हुआ और अच्छा तन्दुरुस्त और ताकतवर बन गया। जब वह पन्द्रह साल का हो गया तो एक अजनबी बूढ़ा उनके घर आया और उनका दरवाजा खटखटाया। उसने आ कर कहा कि वह जो घोड़ा ले कर आया है वह उसकी रानी ने भेजा है और अब

[33] Faithful and Unfaithful – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. Frederick A Stokes Company. 1921. Adapted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_9.html

[34] In Norse countries a Huldra maybe a fairy type.

इसके बाद से वह वफादार का रहेगा जैसा कि उसने वायदा किया था। उसके बाद वह बूढ़ा चला गया। वह सुन्दर घोड़ा सबको बहुत पसन्द आया। और वफादार तो उसे हर आने वाले दिन पिछले दिन से भी ज़्यादा और और ज़्यादा प्यार करने लगा।

कुछ समय बाद वह घर में रहते रहते थक गया तो उसने माता पिता से कहा कि वह दुनियॉ देखना चाहता है। माता पिता ने उसको रोका नहीं क्योंकि घर में भी उसके करने के लिये कुछ नहीं था सो उसने अस्तबल में से अपना घोड़ा निकाला उसके ऊपर जीन[35] कसी और जंगल की तरफ दौड़ गया।

वह दौड़ता गया दौड़ता गया और वहुत दूर निकल गया। आगे जा कर उसने देखा कि दो शेर एक चीते से लड़ रहे हैं। चीता उनको मारने ही वाला था कि घोड़ा लड़के से बोला — "जल्दी करो अपना तीर कमान उठाओ चीते को मार डालो और शेरों को बचा लो।"

नौजवान बोला — "मैं वही करने जा रहा हूॅ।" कह कर उसने अपना तीर कमान की डोरी पर रखा और तुरन्त ही चीते पर चला दिया। चीता उसी समय मर गया। दोनों शेर उसके पास आ गये और दोस्ताना अन्दाज में उसको अपना सिर हिला कर फिर वापस अपनी गुफा में चले गये।

[35] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

वफादार फिर से घोड़े पर चढ़ कर आगे चलता रहा। काफी दूर जाने के बाद उसको दो डरे हुए सफेद फाख्ता दिखायी दिये जो एक बाज़ से डर रहे थे।

बाज उनको पकड़ने ही वाला था कि घोड़ा फिर बोला — "जल्दी करो। अपनी कमान पर तीर रखो और बाज़ को मार कर फाख्ताओं को निडर कर दो।"

नौजवान बोला — "मैं बस यही करने वाला था।" उसने अपना तीर कमान निकाला तीर कमान की रस्सी पर रखा और बाज़ की तरफ तीर चला दिया। बाज़ मर गया और फाख्ताऐं बच गयीं। दोनों फाख्ताऐं उसके पास आयीं और कृतज्ञता से उसके सामने अपने पंख फड़फड़ाये और अपने घोंसले की तरफ चली गयीं।

नौजवान फिर आगे बढ़ चला। वह अब अपने घर से काफी दूर निकल आया था। उसका घोड़ा आसानी से थकने वाला नहीं था। वह उसके साथ साथ ही चल रहा था।

वह उसके ऊपर चलता रहा जब तक कि वह एक झील के किनारे तक नहीं आ गया। वहॉ उसने पानी एक चिड़िया[36] झील के पानी से निकलती देखी जिसके पंजों में एक पाइक मछली[37] थी।

[36] Translated for the word "Sea Gull". See its picture above.

[37] Pike fish is a large size fish.

उसको देख कर उसका घोड़ा बोला — "जल्दी से अपना तीर कमान उठाओ समुद्री चिड़िया को मारो और पाइक मछली को बचाओ।"

नौजवान ने जवाब दिया — "हॉ मैं यही करूँगा।" तुरन्त ही उसने अपना तीर कमान उठाया और अपना तीर उस समुद्री चिड़िया पर चला दिया जो पाइक मछली को अपने पंजे में दबाये लिये जा रही थी।

चिड़िया तो तीर से घायल हुई अपने पंख फड़फड़ाती हुई नीचे जमीन पर गिर गयी पर पाइक पानी के पास ही गिरी उसने नौजवान की तरफ कृतज्ञता भरी नजर से देखा और फिर पानी में चली गयी।

वह वफादार फिर से अपने घोड़े पर बैठा और आगे चला। अब वह एक किले के पास आ गया था। वहॉ पहुँच कर तुरन्त ही उसने राजा को बताया कि वह उससे मिलना चाहता है और उससे उसने प्रार्थना की कि वह उसके पास कोई काम करना चाहता है।

राजा ने नौजवान घुड़सवार की तरफ अपनेपन से देखते हुए पूछा कि वह किस तरह का काम चाहता है। वफादार बोला — "मैं एक सईस[38] बनना चाहता हूँ। पर पहले मेरे घोड़े के लिये एक कमरा और खाना चाहिये।" राजा बोला "वह तुमको मिल जायेगा।"

सो नौजवान को एक सईस की नौकरी दे दी गयी।

[38] Translated for the word "Groom". He takes care of horses

उसने राजा के पास काफी दिनों तक इतना अच्छा काम किया कि केवल राजा ही नहीं बल्कि किले में हर कोई उसको बहुत चाहने लगा। राजा तो उसकी बड़ाई करते ही नहीं थकता था।

पर राजा के दूसरे काम करने वालों में एक का नाम था बेवफा। यह नौकर वफादार से बहुत जलता था और वह वही करना चाहता था जिससे वफादार को कोई नुकसान पहुँचे। क्योंकि वह यह सोचता था "तब मैं उसे यहाँ से बाहर निकाल दूँगा और राजा को उसकी तरफदारी करते नहीं देखूँगा।"

अब हुआ यह कि राजा बहुत दुखी था क्योंकि उसकी पत्नी खो गयी थी। उसको किले में से कोई ट्रौल[39] उठा कर ले गया था। यह सच था कि रानी को राजा के साथ कोई खुशी नहीं मिलती थी और वह उसको प्यार भी नहीं करती थी पर फिर भी राजा उसको बहुत पसन्द करता था और इस बारे में अक्सर अपने नौकर बेवफा से बात किया करता था।

इस मौके का फायदा उठा कर एक दिन बेवफा ने राजा से कहा — "मेरे मालिक को अब बहुत ज़्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि यह वफादार मुझसे अपनी डींगें हाँक रहा था कि यह आपकी सुन्दर पत्नी को उस ट्रौल से छुड़ा कर ला सकता है।"

[39] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings. See its picture above.

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "अगर उसने ऐसा कहा है तो उसको अपनी बात रखनी चाहिये।"

उसने तुरन्त ही वफादार को अपने सामने बुलवाया और उसको मौत की धमकी दी कि अगर वह तुरन्त ही उसकी पत्नी को ट्रौल से उसके पास ले कर नहीं आया तो उसे मरवा दिया जायेगा। पर अगर वह अपने काम में सफल हो गया तो उसको भारी इनाम दिया जायेगा।

हालॉकि वफादार ने कई बार मना किया कि बेवफा जो कुछ भी उसके बारे में कह रहा था वह गलत था पर राजा उसकी कुछ नहीं सुन रहा था।

सो वह नौजवान बेचारा चुप हो गया उसको लगा कि बस अब उसकी ज़िन्दगी इतनी ही थी। वह अपने घोड़े के कमरे में उसको विदा कहने गया और उसके बराबर में खड़े हो कर रोने लगा।

घोड़े ने पूछा — "क्या बात है तुम्हें किस चीज़ का दुख है।"

तब वफादार ने उसे सब कुछ बताया जो उसके और राजा के बीच हुआ था। वह आगे बोला "यह शायद आखिरी बार है कि मैं तुमसे मिल रहा हूँ।"

घोड़ा बोला — "अगर यही होना है तो एक रास्ता है। किले में ऐटिक[40] में एक पुरानी वायलिन रखी हुई है तुम उसे अपने साथ ले

[40] Attic is a very small room on the top of any building. See its picture above.

जाओ औ जब तुम वहॉ पहुँच जाओ जहॉ रानी बन्द है तब वहॉ उसे बजाना शुरू करना।

अपने नाप का एक लोहे के तारों का जिरहबख्तर बनवा लो और उसमें जितने सारे चाकू आ सकते हैं रख लो। जब तुम देखो कि ट्रौल अपना मुँह खोल रहा है तो उसके मुँह में घुस कर उसे मार देना।

पर तुम बिल्कुल डरना नहीं और अपने रास्ते के लिये मेरे ऊपर विश्वास रखना।"

घोड़े के इन शब्दों ने वफादार के ऊपर जादू का सा काम किया। उसमें एक नयी हिम्मत आ गयी। वह राजा के पास गया और उनसे जाने की इजाज़त मॉगी। उसने चोरी छिपे लोहे के तारों का जिरहबख्तर बनवाया किले की ऐटिक से वायलिन ली अपने घोड़े को उसके कमरे से बाहर निकाला और तुरन्त ही ट्रौल की पहाड़ी पर चल दिया।

बहुत जल्दी ही वह उस पहाड़ी पर पहुँच गया और इससे पहले कि वह जान पाता कि वह ट्रौल कहॉ है वह तो उसके रहने की जगह में ही था। जब वह उसके पास आ गया तब उसने ट्रौल को देखा जो अपने किले से बाहर निकल आया था और अपनी गुफा के बाहर सो रहा था।

वह बड़ी गहरी नींद सो रहा था। उसके खर्राटे भी इतने ज़ोर के थे कि उनकी आवाज से सारी पहाड़ी कॉप रही थी। पर उसका

मुँह पूरा खुला हुआ था। उसका मुँह इतना बड़ा था कि वह नौजवान उसमें पूरा का पूरा घुस सकता था।

उसने ऐसा ही किया क्योंकि उसको डर बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। वह ट्रौल के अन्दर तक चला गया और उसको आसानी से मार दिया। वफादार वहाँ से फिर बाहर निकल आया और अपना जिरहबख्तर उतार दिया। फिर वह ट्रौल के किले में घुस गया।

उसमें एक बड़े सोने के कमरे में रानी बन्दी बनी बैठी थी। उसको सात मजबूत सोने की जंजीरों से बाँध रखा था। वफादार उन सोने की जंजीरों को नहीं तोड़ सका तो उसने अपनी वायलिन निकाली और उस पर एक ऐसी धुन बजानी शुरू की कि वे सोने की जंजीरें हिलने लगीं और एक एक कर के नीचे गिरने लगीं।

जब सब जंजीरें खुल कर नीचे गिर गयीं तो वह आजाद हो कर उठ कर खड़ी हो गयी। उसने उस हिम्मती नौजवान की तरफ खुशी और बड़ाई की नजर से देखा।

उसको उसके ऊपर बहुत प्यार आया क्योंकि वह बहुत सुन्दर था और बहुत अच्छे व्यवहार वाला था। वह उसके साथ तुरन्त ही अपने किले को आने को तैयार हो गयी।

रानी के किले लौटने से सारे किले में खुशियाँ छा गयीं। वफादार को राजा ने जो इनाम देने के लिये कहा था वह उसने उसे दिया। पर रानी अब राजा को और भी ज़्यादा नीची नजर से देखने लगी थी। वह उससे बोली भी नहीं। वह हँसती भी नहीं थी। उसने

अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया था। वह सदा उदास रहती थी।

इस बात से राजा को बहुत दुख हुआ सो एक दिन राजा ने रानी से पूछा कि वह इतनी उदास क्यों थी। रानी बोली — "मैं तब तक खुश नहीं हो सकती जब तक मेरे पास वैसा ही एक सोने का कमरा न हो जैसा कि ट्रौल के किले में था। ऐसा कमरा तो कहीं और नहीं मिल सकता।"

राजा बोला — "रानी जी ऐसा कमरा तो आपके लिये मिलना कोई आसान नहीं है। और मैं यह भी वायदा नहीं कर सकता कि कोई इस काम को कर देगा।"

पर जब उसने यह बात अपने नौकर बेवफा से कही तो बेवफा बोला — "इसके मिलने में तो कोई ज़्यादा परेशानी नहीं है क्योंकि वफादार कह रहा था कि वह उस सोने के कमरे को यहॉ किले में आसानी से ला सकता है।"

तुरन्त ही वफादार को बुलवाया गया और उससे उसने ट्रौल का सोने का कमरा किले में लाने के लिये कहा क्योंकि वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसने उससे कहा कि वह अपना वायदा पूरा करे।

अब यह तो कहना बेकार था कि वफादार राजा से इस काम के लिये मना करता। पर अब वह करे भी क्या। उसको वह कमरा लाने के लिये जाना ही चाहिये सो उसके लिये उसे जाना ही पड़ा।

उसको धीरज देना मुश्किल हो गया। वह फिर अपने घोड़े के पास पहुँचा। वहाँ जा कर वह बहुत रोया और उसको अन्तिम विदा कहा।

घोड़े ने पूछा — "तुम्हें क्या चीज़ परेशान कर रही है क्या बात है?"

नौजवान बोला — "यह बेवफा मेरे बारे में कुछ कुछ झूठ बोलता रहता है। उसने राजा से कहा है कि मैं ट्रौल का सोने का कमरा ला कर उसे दे सकता हूँ सो राजा ने मुझसे कहा है कि अगर मैंने उसे ट्रौल का सोने का कमरा ला कर नहीं दिया तो मुझे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

घोड़ा बोला — "इससे ज़्यादा गम्भीर बात तो कोई हो ही नहीं सकती। सुनो। तुम एक बहुत बड़ा पानी का जहाज़ लो अपनी वायलिन अपने साथ लो और उसको बजाओ तो वह सोने का कमरा उस पहाड़ी पर से नीचे उतर आयेगा।

फिर ट्रौल के घोड़े उसके आगे जोत दो तब तुम वह चमकता हुआ सोने का कमरा यहाँ बिना किसी मुश्किल के ला पाओगे।"

यह सुन कर वफादार को थोड़ी तसल्ली मिली। उसने वैसा है किया जैसा कि उसके घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। जब वह उस पहाड़ी पर पहुँच गया तो उसने अपनी वायलिन बजाना शुरू कर दिया।

सोने के कमरे ने वह वायलिन सुनी तो वह उस संगीत की आवाज के पीछे पीछे खिंचा चला आया। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मकान पहियों पर चलता चला आ रहा हो। वफादार ने उसके आगे ट्रौल के घोड़े जोते और उसको अपने जहाज़ पर रख लिया।

जल्दी ही उसने झील पार कर ली और वह उसे सुरक्षित रूप से बिना किसी टूट फूट के किले में ले आया। रानी उसको देख कर बहुत खुश हुई।

पर फिर भी वह बहुत थकी हुई और दुखी थी। वह अपने राजा पति से बिल्कुल भी नहीं बोली और न ही किसी ने उसे हॅसते हुए देखा और सुना।

इस बात पर राजा और ज़्यादा दुखी हो गया। उसने उससे पूछा कि वह इतनी दुखी क्यों थी। तो रानी ने जवाब दिया — "मैं खुश कैसे हो सकती हूॅ जब तक मुझे मेरे वे दो घोड़े न मिल जायें जो ट्रौल के घर में मेरे थे। इतने सुन्दर घोड़े तो दुनियॉ में कहीं देखने को नहीं मिलेंगे।"

राजा बोला — "कोई और काम आसान हो सकता है सिवाय इस काम के। तुम कोई और काम बताओ जो तुम चाहती हो। क्योंकि वे घोड़े पालतू नहीं हैं और बहुत पहले ही जंगल में भाग गये होंगे।"

यह कह कर राजा दुखी हो कर वहॉ से चला गया। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे। पर बेवफा

फिर बोला — "मेरे सरकार इस बात की आप चिन्ता न करें क्योंकि वफादार ने कहा है कि वह ट्रौल के वे दोनों घोड़े आसानी से ले कर आ सकता है।"

एक बार फिर वफादार को बुलवाया गया।

जब वफादार राजा के पास आया तो उसको धमकी दी गयी कि अगर वह उन ट्रौल के दोनों घोड़ों को राजा के पास ले कर नहीं आया तो उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा। बल्कि अगर वह उनको पकड़ लाया तो बहुत इनाम दिया जायेगा।

इस बार वफादार को यह पक्का भरोसा था कि वह ट्रौल के दोनों घोड़ों को पकड़ कर राजा के पास नहीं ला सकता। सो वह एक बार फिर अपने घोड़े के पास उसको अन्तिम विदा कहने के लिये पहुँचा।

घोड़ा बोला — "तुम इतनी छोटी छोटी बातों पर क्यों रोते हो। तुम जल्दी से जंगल चले जाओ अपनी वायलिन बजाओ और सब ठीक हो जायेगा।"

वफादार ने फिर वैसा ही किया जैसा उसके घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। कुछ देर बाद ही दो शेर जिनको उसने बचाया था उसके सामने कूदते हुए आ गये। वे उसकी वायलिन सुन रहे थे। उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह दुखी था।

वफादार बोला — "हॉ मैं दुखी हूँ।" कह कर उनको बताया कि उसको क्या करना है। यह सुन कर वे तुरन्त ही जंगल में भाग

गये। एक शेर एक तरफ भाग गया और दूसरा दूसरी तरफ भाग गया। वे दोनों जल्दी ही दोनों घोड़ों को ले कर लौट आये।

वफादार ने फिर से अपनी वायलिन छेड़ी और वे दोनों घोड़े उसके पीछे पीछे चल दिये और जल्दी ही राजा के किले में आ पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उसने वे दोनों घोड़े रानी को दे दिये।

इतने सारे काम कराने के बाद राजा अब यह आशा कर रहा था कि रानी अब उससे बोलेगी खुश होगी पर वह तो फिर भी खुश नहीं हुई। वह एक शब्द भी उससे नहीं बोली। बस केवल वह जब ज़रा सी खुश दिखती थी जब वह वफादार से बात कर रही होती थी।

तब फिर एक दिन राजा ने उससे पूछा कि अब उसे किस बात की कमी थी और वह क्यों इतनी असन्तुष्ट रहती थी।

वह बोली — "मुझे घोड़े तो मिल गये हैं और मैं अक्सर अपने सोने के चमकदार कमरे में भी बैठती हूँ पर मैं उस कमरे की अपनी किसी भी सुन्दर आलमारियों को नहीं खोल सकती हूँ जो कीमती चीज़ों से भरी हुई हैं। क्योंकि मेरे पास उनकी चाभी ही नहीं है। और अगर मुझे उनकी चाभी नहीं मिलीं तो मैं खुश कैसे होऊँ।"

राजा ने पूछा — "तो फिर उनकी चाभी कहाँ हैं।"

रानी बोली — "ट्रौल की पहाड़ी के पास वाली झील में। जब वफादार मुझे ले कर यहाँ आ रहा था तब मैंने उनको वहीं फेंक दिया था।"

राजा बोला — "तुम्हारी उन चाभियों का लाना तो बड़ा मुश्किल काम है। मैं बड़ी मुश्किल से यह वायदा करता हू कि तुमको वे चाभियॉ मिल जायेंगीं।"

फिर भी उसने सोचा एक बार कोशिश करने में क्या हर्ज है। उसने अपने नौकर बेवफा को फिर से बुलाया और उससे इस काम को करने के लिये कहा तो बेवफा तुरन्त बोला — "यह तो बहुत आसान काम है क्योंकि वफादार मुझसे अपनी शान बघार रहा था कि वह रानी साहिबा की चाभियॉ बड़ी आसानी से ला कर दे सकता है – अगर वह चाहे तो।"

राजा बोला — "तब तो मैं उसे अपनी बात रखने पर मजबूर कर दूँगा।" सो उसने तुरन्त ही वफादार को बुलवाया और उससे कहा कि अगर ट्रौल की पहाड़ी के पास वाली झील में से उसने आलमारियों की चाभियॉ उसे ला कर नहीं दीं तो वह उसको मरवा देगा।

इस बार वफादार इतना ज़्यादा दुखी नहीं था क्योंकि उसने सोचा कि "मेरा अक्लमन्द घोड़ा मेरी जरूर सहायता करेगा।"

सो वह अपने घोड़े के पास गया और उससे जब अपनी मुश्किल बतायी तो उसने उसे उसकी वायलिन बजाते हुए जाने के लिये कहा और कहा कि देखना फिर क्या होता है।

जब वफादार को वायलिन बजाते बजाते कुछ समय बीत गया तो वह पाइक मछली जिसको उसने बचाया था पानी के ऊपर

आयी। उसने उसको पहचान लिया और पूछा कि वह उसके लिये क्या कर सकती है।

नौजवान ने कहा — "हॉ तुम मेरे लिये बहुत कुछ कर सकती हो।" कह कर उसने उससे झील में से चाभियॉ लाने के लिये कहा। पाइक मछली तुरन्त ही झील में कूद गयी और अपने मुँह में सोने की चाभियों का एक गुच्छा लिये पानी के ऊपर आ गयी। वह गुच्छा उसने अपने बचाने वाले को दे दिया।

वफादार उनको ले कर तुरन्त ही किले की तरफ लौटा और चाभियॉ ला कर रानी साहिबा को दे दीं। अब रानी अपने सोने के कमरे की सब आलमारियॉ खोल सकती थी और उनमें से जो चाहे जितना चाहे निकाल सकती थी।

पर रानी अभी भी दुखी थी। उसके दुख की वजह न समझते हुए राजा ने एक बार फिर अपने नौकर बेवफा को बुलवाया और उससे यह सब कहा तो बेवफा ने कहा — "लगता है कि रानी साहिबा वफादार को प्यार करती हैं। तो मैं सरकार को यह सलाह दूँगा कि आप वफादार की गर्दन कटवा दें। तब आप देखेंगे कि रानी साहिबा में कुछ बदलाव आया है।"

राजा को उसकी इस सलाह में कुछ सार लगा और उसने यह काम बहुत जल्दी करने का फैसला कर लिया।

लेकिन एक दिन वफादार के घोड़े ने वफादार से कहा — "राजा तुम्हारा सिर कटवाने वाला है। सो तुम जल्दी से जंगल चले

जाओ और वहॉ जा कर अपनी वायलिन बजाओ। वे दोनों फाख्ताऐं जिनको तुमने बचाय था उड़ कर वहॉ आयेंगी तो तुम उनसे विनती करना कि वे तुम्हें एक बोतल "ज़िन्दगी का पानी" ला कर दें।

उसके बाद तुम रानी के पास जाना और उसको वह पानी की बोतल दे कर कहना कि जब राजा तुम्हारा सिर कटवा दे तो वह तुहारे सिर को तुम्हारे शरीर पर रख कर जोड़ दे और उस "ज़िन्दगी के पानी" को तुम्हारे शरीर पर छिड़क दे।"

वफादार ने ऐसा ही किया। वह उसी दिन जंगल चला गया अपनी वायलिन बजायी और जब दोनों फाख्ताऐं आ गयीं तो उनसे अपने लिये "ज़िन्दगी का पानी" लाने की विनती की।

जब वे ज़िन्दगी के पानी से भरी एक बोतल ले आयीं तो वह रानी साहिबा के पास गया और उनसे विनती की कि वह राजा के उसके सिर काटने के बाद उस सिर को उसके शरीर पर जोड़ कर उस बोतल में से उसके ऊपर पानी छिड़क दे।

रानी ने ऐसा ही किया। वफादार फिर से ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया – बल्कि और ज़्यादा सुन्दर। राजा ने तो यह देख कर आश्चर्य से दॉतों तले उॅगली दबा ली।

फिर उसने रानी से कहा कि वह उसका सिर काट दे और वह पानी उसके शरीर पर भी छिड़क दे। रानी ने तुरन्त तलवार उठायी

और पल भर में ही राजा का सिर काट दिया। उसका सिर धरती पर लुढ़क गया।

पर उसने उसके शरीर पर कोई ज़िन्दगी का पानी नहीं छिड़का। राजा के शरीर को तुरन्त ही ले जा कर दफ़न कर दिया गया।

उसके बाद रानी ने वफादार से शादी कर ली। बेवफा को राज्य से बाहर निकाल दिया गया और उसे बहुत बेइज़्ज़त हो कर वहॉ से जाना पड़ा।

अक्लमन्द घोड़ा अपने कमरे में सन्तोष के साथ रहा। राजा और रानी के पास वह जादुई वायलिन ट्रौल का सोने कमरा और उसकी कीमती चीज़ें हमेशा रही। और वे खुश खुश रहे।

# 9 दो सौतेली बहिनें[41]

यह लोक कथा यूरोप के नौर्स देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। नौर्स देशों में यूरोप के पॉच देश आते हैं – डेनमार्क फ़िनलैंड आइसलैंड नौर्वे और स्वीडन।

एक बार की बात है कि एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। यह उन दोनों की दूसरी शादी थी पर उन दोनों की उस स्त्री की पहली शादी से एक एक लड़की भी थी।

स्त्री की बेटी बहुत ही सुस्त और आलसी थी और घर में कोई भी काम नहीं करती थी जबकि आदमी की बेटी बहुत चुस्त चालाक थी। पर किस्मत की बात कि उसका कोई भी काम उसकी सौतेली मॉ को पसन्द नहीं आता था।

इसलिये दोनों मॉ बेटी आदमी की बेटी को घर से बाहर निकालना चाहती थीं।

सो एक दिन ऐसा हुआ कि दोनों लड़कियॉ सूत कातने के लिये बाहर गयीं और एक कुँए के पास बैठ कर सूत कातने लगीं। स्त्री की बेटी के पास तो कातने के लिये रुई थी पर आदमी की बेटी के पास कोई रुई नहीं थी। उसके पास बस कुछ कॉटे थे।

[41] The Two Stepsisters – A folktale from Norse countries, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn27.htm

स्त्री की बेटी ने कहा – "पता नहीं ऐसा कैसे होता है कि तुम बहुत जल्दी ही अपना काम खत्म कर लेती हो पर मैं तुम्हारी बराबरी नहीं कर पाती।"

उसके बाद दोनों ने यह तय किया कि जिस किसी का सूत पहले टूटेगा वह कुँए में नीचे उतरेगा। सो उन्होंने अपना अपना सूत कातना शुरू कर दिया पर जब वे सूत कात रही थीं तो आदमी की बेटी का सूत टूट गया और उसको कुँए में नीचे उतरना पड़ा।

जब वह कुँए की तली में पहुँची तो उसने अपने चारों तरफ चमकीली हरे रंग की शराब[42] देखी। पर उससे उसको कोई चोट नहीं पहुँची।

वह उस पर थोड़ी ही दूर चली थी कि उसके सामने एक हैज[43] आयी जिसको उसे पार करना था। हैज बोली — "ओह मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरे ऊपर ज़ोर से मत चलना। मैं फिर कभी तुम्हारी सहायता करूँगी।"

सो वह उससे कुछ दूर हट कर चलने लगी और इतनी दूर हट कर चली कि उसने उसकी एक डंडी भी नहीं छुई। वह थोड़ी दूर

[42] Translated for the word "Mead" – Mead is an alcoholic beverage created by fermenting honey with water, sometimes with various fruits, spices, grains, or hops etc.

[43] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

और चली कि उसको एक गाय मिली जो अपने सींगों पर दूध निकालने वाली एक बालटी लिये इधर उधर घूम रही थी।

वह एक बहुत सुन्दर और बड़ी गाय थी और उसके थन दूध से भरे हुए थे। गाय बोली — "मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मेरा दूध दुह दो। मेरे थनों में बहुत दूध भरा है। तुम जितना चाहो उतना पी लो और बाकी बचा हुआ मेरे खुरों पर डाल दो। फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करती हूँ या नहीं।"

सो आदमी की बेटी ने वैसा ही किया जैसा कि गाय ने उससे करने के लिये कहा था। उसने बालटी गाय के सींगों से उतारी और उसका दूध दुहने बैठ गयी।

जैसे ही उसने गाय के थनों को हाथ लगाया गाय के थनों से दूध की धारा बह कर बालटी में गिरने लगी। पहले तो उसने खूब पेट भर कर गाय का दूध पिया फिर बाकी बचा हुआ दूध उसने उसके खुरों पर फेंक दिया और दूध दुहने वाली बालटी को उसके सींगों पर लटका दिया।

वह फिर आगे चल दी। आगे चल कर उसको एक भेड़ मिला। उसके ऊपर बहुत लम्बी लम्बी ऊन थी। वह नीचे तक लटक रही थी और उसके पीछे पीछे जमीन पर घिसट रही थी। उसके सींगों पर एक बड़ी सी कैंची रखी हुई थी।

भेड़ उस लड़की को देख कर बोला — "ओह ज़रा मेरी यह ऊन काट दो क्योंकि मैं इसको बहुत देर से घसीटते हुए ही इधर से

उधर घूम रहा हूँ। यह ऊन जहाँ से भी इसको जो कुछ भी मिलता है वही पकड़ लेती है।

इसके अलावा यह इतनी गरम है कि इसकी गरमी से मेरा तो बस दम ही घुटा जा रहा है। जब तुम मेरी ऊन काट लो तो जितनी ऊन तुम्हें चाहिये तुम ले लेना और बाकी बची हुई ऊन मेरी गर्दन के चारों तरफ लपेट देना। फिर देखना कि मैं तुम्हारी किसी दिन सहायता करता हूँ या नहीं।"

आदमी की लड़की तो इसकी सहायता करने को तुरन्त ही तैयार हो गयी। भेड़ उसकी गोद में चुपचाप लेट गया और उसने उसकी सारी ऊन इतनी सफाई से काट दी कि उसकी खाल पर एक खरोंच भी नहीं आयी।

फिर उसने जितनी उससे ली जा सकी उतनी ऊन ले ली और बाकी की ऊन उस भेड़ की गर्दन में लपेट दी। यह सब कर के वह फिर आगे चली।

आगे चल कर उसको एक सेब का पेड़ मिला। उस पेड़ की सारी शाखें फलों के बोझ से नीचे जमीन तक झुकी जा रही थीं और एक पतले से खम्भे से चिपकी हुई थीं।

वह चिल्लाया — "ओह मेहरबानी कर के मेरे सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखें थोड़ी सीधी हो सकें। क्योंकि इस तरह से बहुत देर

तक टेढ़े खड़े होना मेरे लिये बहुत ही मुश्किल काम है। पर जब तुम मेरी शाखें झुकाओ तो इनको बहुत ज़ोर से मत झुका देना।

फिर उसके बाद जितने सेब तुम खाना चाहो उतने तुम खा लेना और बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के पास ही डाल देना। और फिर देखना कि मैं किसी दिन तुम्हारी सहायता करता हूँ या नहीं।"

सो इसने जितने सेब उसके हाथों से टूट सकते थे उतने सेब उसने उस पेड़ से अपने हाथों से तोड़ दिये। फिर उसने खम्भा उखाड़ लिया और उससे और सेब तोड़ लिये। उसने पेट भर कर सेब खाये और बाकी बचे हुए सेब उस पेड़ की जड़ में ही डाल दिये।

यह कर के अब वह फिर आगे चली। अबकी बार वह बहुत देर तक चलती रही। आखिर वह एक खेत पर बने घर में आ पहुँची। वहाँ ट्रौल का सरदार[44] अपनी बेटी के साथ रहता था।

वह उस घर के अन्दर चली गयी और अन्दर जा कर वहाँ रहने के लिये जगह माँगी। बूढ़ी जादूगरनी बोली — "ओह यहाँ कोशिश करने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि हमारे पास कई नौकरानियाँ आयीं पर कोई भी ठीक नहीं थी।"

[44] Chief of Trolls – a troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

पर उस लड़की ने उनसे इतनी दया भरी प्रार्थना की कि उन्होंने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह पहले उसका काम देखेंगे फिर उसको पक्की नौकरी पर रखेंगे। सो आखिरकार उन्होंने उसको रख लिया।

उन्होंने उसको एक चलनी दी और उसमें पानी भर कर लाने के लिये कहा। हालॉकि उसको यह बहुत अजीब लगा कि वह चलनी में पानी भर कर लाये फिर भी वह उसको ले कर उसमें पानी लाने के लिये चल दी।

जब वह कुँए के पास आयी तो वहॉ बैठी छोटी छोटी चिड़ियॉ गाने लगीं —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

उस लड़की ने ऐसा ही किया। उसने देखा कि अब वह उसमें पानी भर सकती थी क्योंकि अब उस चलनी के छेद बन्द हो चुके थे। वह उस पानी को ले कर घर पहुँची तो बूढ़ी जादूगरनी ने उससे कहा — "यह पानी तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उससे गायों के बाड़े में जाने के लिये कहा कि वह वहॉ जाये और गायों का गोबर साफ करे और उनका दूध दुह कर ले कर आये।

पर जब वह वहॉ गयी तो उसको वहॉ एक भूसा उठाने वाला ही मिला जो इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकती थी उससे काम तो वह कैसे करती।

वह नहीं जानती थी कि वह क्या करे या उस भूसा उठाने वाले का भी वह क्या करे। पर छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया कि वह झाड़ू ले ले और उससे थोड़ा सा गोबर चारों तरफ उछाल दे तो बाकी बचा हुआ गोबर उसके पीछे पीछे अपने आप ही उछल कर बाहर चला जायेगा। सो उसने ऐसा ही किया।

जैसे ही उसने झाड़ू से ऐसा किया गायों का बाड़ा इतना साफ हो गया जैसे अभी अभी बुहारा गया हो और धोया गया हो।

अब उसको गायों का दूध निकालना था पर वे सब इतनी बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको छूती तो वे उसको लात मारतीं। वे तो उसको अपने पास भी नहीं आने दे रही थीं दूध दुहाना तो दूर।

चिड़ियों ने बाहर फिर गाया — "चिड़ियों के पीने के लिये एक छोटी सी बूँद दूध की एक छोटा सा खाना।" सो उसने वही किया।

किसी तरह से उसने एक गाय का एक बूँद दूध दुहा और उसे चिड़ियों को पिला दिया। चिड़ियों के दूध पीते ही सारी गायें सीधी खड़ी हो गयीं और उन्होंने उस लड़की को अपना दूध दुहने दिया। न तो उन्होंने उसको लात मारी और न ही वे बहुत ज़्यादा हिली डुलीं। यहॉ तक कि उन्होंने तो अपनी एक टॉग भी नहीं उठायी।

इसलिये जब जादूगरनी ने उसको दूध लाते आते देखा तो वह चिल्लायी — "यह दूध तुमने अपनी छाती से तो नहीं निकाला है?"

फिर उसने उसको कुछ काले रंग की ऊन दी और कहा कि वह उसको धो कर सफेद कर लाये।

अब उस लड़की को तो पता ही नहीं था कि वह उस काली ऊन को सफेद कैसे करे। फिर भी उसने कुछ कहा नहीं और वह ऊन उससे ले कर कुँए की तरफ चल दी।

वहाँ उन छोटी छोटी चिड़ियों ने फिर गाया और उससे कहा कि वह उस ऊन को पास के गड्ढे में डुबो दे। उस लड़की ने ऐसा ही किया। जैसे ही उसने उस ऊन को उस गड्ढे में डुबोया और बाहर निकाला तो वह ऊन तो बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद थी।

वह उस ऊन को ले कर जादूगरनी के पास पहुँची। जैसे ही वह जादूगरनी के पास पहुँची तो जादूगरनी तो यह देख कर फिर चिल्ला पड़ी — "ओह तुमको तो रखना ठीक नहीं है। तुम तो सब कुछ कर सकती हो। और आखीर में तो तुम मेरी ज़िन्दगी का रोग ही बन जाओगी। अच्छा तो यही है कि तुम यहाँ से चली जाओ। लो यह अपनी मजदूरी लो और जाओ।"

फिर बूढ़ी जादूगरनी ने तीन सन्दूकची निकालीं – एक लाल एक हरी और एक नीली और उनको उस लड़की को दिखाते हुए बोली — "तुम अपनी मजदूरी के लिये इनमें से कोई सी भी एक सन्दूकची ले लो। जो भी तुम्हें अच्छी लगे।"

अब उस लड़की को तो पता नहीं था कि वह उनमें से कौन सी सन्दूकची चुने पर तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

"तुम लाल सन्दूकची मत लो और तुम हरी सन्दूकची भी मत लो। तुम नीली सन्दूकची ले लो जिसमें तुमको तीन क्रास एक लाइन में रखे दिखायी देंगे। हमने उनके निशान उसमें देखे हैं इसलिये हमको यह मालूम है।"

सो जैसा कि चिड़ियों ने उससे अपने गाने में कहा था उसने नीले रंग की सन्दूकची जादूगरनी से ले ली। बूढ़ी जादूगरनी फिर चिल्लायी — "बुरा हो तेरा। अब देखना अगर मैं तुझको इसके लिये कोई सजा न दूँ तो।"

जैसे ही आदमी की बेटी अपनी नीली सन्दूकची ले कर चली बूढ़ी जादूगरनी ने उसके पीछे लोहे की एक जलती हुई सलाख फेंक कर मारी पर वह दरवाजे के पीछे की तरफ कूद गयी और वहाँ जा कर छिप गयी।

इससे वह सलाख उसको छू भी न सकी। क्योंकि उसकी दोस्तों यानी छोटी छोटी चिड़ियों ने उसे पहले ही बता दिया था कि उस सलाख से उसे कैसे बचना है।

इसके बाद वह वहाँ से जितनी तेज़ चल सकती थी चल दी। पर जब वह सेब के पेड़ के पास पहुँची तो उसने अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

यह आवाज उस जादूगरनी की और उसकी बेटी के आने की आवाज थी।

यह देख कर वह लड़की तो इतनी घबरा गयी और डर गयी कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

कि तभी उसने सेब के पेड़ की आवाज सुनी — "तुम यहाँ मेरे पास आओ ओ लड़की, क्या तुम सुन रही हो? मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम मेरे साये में आ कर छिप कर खड़ी हो जाओ क्योंकि अगर उन्होंने तुमको देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुमसे ले लेंगी और तुमको फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो वह उस सेब के पेड़ के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहाँ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी वहाँ आ पहुँचीं।

बूढ़ी जादूगरनी ने सेब के पेड़ से पूछा — "ओ सेब के पेड़, क्या तुमने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

सेब का पेड़ बोला — "हाँ हाँ मैंने देखा है। एक लड़की यहाँ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से भी बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की सेब के पेड़ के नीचे से निकली और आगे चल दी।

वह जब तक भेड़ के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी।

वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे।

कि तभी उसने भेड़ की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरी ऊन के नीचे छिप जा। इस तरह से वह तुझे देख नहीं पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे छीन लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की भेड़ की ऊन के नीचे जा कर छिप गयी। जैसे ही वह वहाँ जा कर छिपी वैसे ही वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ आ पहुँची।

बूढ़ी जादूगरनी भेड़ से बोली — "ओ भेड़ क्या तूने यहाँ से किसी लड़की को जाते देखा है?"

भेड़ बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है वह यहाँ से एक घंटा पहले ही गयी है। पर वह इतनी तेज़ भागी गयी है कि तुम उसे कभी नहीं पकड़ सकतीं।"

यह सुन कर जादूगरनी वापस अपने घर लौट गयी। उसके बाद वह लड़की भेड़ की ऊन के नीचे से निकली और आगे चल दी।

पर जब तक वह गाय के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

वह तुरन्त ही समझ गयी कि वह आवाज उस जादूगरनी के आने की आवाज थी। वह फिर से बहुत डर गयी। उसकी फिर समझ में नहीं आया कि वह अब क्या करे।

कि इतने में उसने गाय की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे थनों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेगी। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह यह सन्दूकची तुझसे ले लेगी और तुझे फाड़ कर मार डालेगी।"

सो लड़की गाय के थनों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने गाय से पूछा — "ओ गाय, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

गाय बोली — "हाँ हाँ मैंने देखा है। एक लड़की यहाँ से एक घंटा पहले भागती हुई गयी थी। पर अब तक तो वह इतनी दूर पहुँच गयी होगी कि वह तुम्हारी पहुँच से बाहर है।"

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहाँ से लौट गयी और अपने घर चली गयी। उसके बाद वह लड़की गाय के थनों के नीचे से निकल आयी और आगे चल दी।

चलते चलते वह हैज के पास पहुँची तो उसने फिर से अपने पीछे सड़क पर आती हुई कट कट की एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी।

वह समझ गयी किा यह उसी बूढ़ी जादूगरनी और उसकी बेटी के आने की आवाज है। अब वह क्या करे। अबकी बार तो बस उसकी जान ही निकलने वाली थी। पर वह करे क्या यह उसकी समझ में नहीं आया।

कि इतने में उसने हैज की आवाज सुनी — "इधर आजा ओ लड़की। मैं तेरी सहायता करूँगी। यहाँ आ कर तू मेरे पत्तों और टहनियों के नीचे छिप जा। इस तरह से वे तुझे नहीं देख पायेंगी। क्योंकि अगर उन्होंने तुझे देख लिया तो वे यह सन्दूकची तुझसे ले लेंगी और तुझे फाड़ कर मार डालेंगी।"

सो लड़की हैज के पत्तें और टहनियों के नीचे जा कर छिप गयी। बूढ़ी जादूगरनी ने हैज से पूछा — "ओ हैज, क्या तूने किसी लड़की को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

हैज बोली — "नहीं मैंने तो किसी लड़की को यहाँ से जाते नहीं देखा।" और इस बीच उसने आपको इतना बड़ा और ऊँचा कर लिया कि उसको पार करने के लिये किसी को दस बार सोचना पड़ता।

यह सुन कर वह बूढ़ी जादूगरनी के पास अब कोई चारा नहीं रह गया था कि वह वहॉ से घर वापस लौट जाये सो वह वहॉ से वापस लौट गयी और अपने घर चली गयी।

उसके बाद वह लड़की हैज के पत्तों और टहनियों के नीचे से निकल आयी और अपने घर की तरफ चली गयी।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी सौतेली मॉ और बहिन उसको वहॉ ज़िन्दा देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गयीं और उससे और ज़्यादा नफरत करने लगीं। वहॉ से लौटने के बाद वह अब और ज़्यादा होशियार और चतुर हो गयी थी। वह अब देखने में भी बहुत अच्छी लगने लगी थी। उसकी तरफ देखने में अब अच्छा लगता था।

पर फिर भी वह उनके साथ नहीं रह सकी। उन्होंने उसको सूअरों के रहने की जगह रहने को भेज दिया। अब वही उसका घर था सो उसने उसको खूब रगड़ रगड़ कर साफ किया और फिर वह नीली सन्दूकची खोली जो वह उस जादूगरनी के घर से अपनी मजदूरी के रूप में लायी थी।

वह यह देखना चाहती थी कि उसको उसकी मजदूरी के रूप में क्या मिला था। पर जैसे ही उसने उसका ताला खोला तो उसको तो उसके अन्दर इतना सारा सोना चॉदी और बहुत अच्छी अच्छी चीजें दिखायी दीं कि वे उसमें से बाहर निकलनी शुरू हो गयीं और उस

सूअरों के घर की दीवारों पर लटकना शुरू हो गयीं। अब वह सूअर का घर तो किसी राजा के महल से भी शानदार लगने लगा।

जब उसकी सौतेली मॉ और बहिन उसे वहॉ देखने आयीं तो वे तो आश्चर्य के मारे उछल ही पड़ीं और पूछने लगीं कि यह सब उसने कैसे बनाया।

लड़की बोली — "ओह तुम देख नहीं रहीं कि यह तो मेरी अच्छी मजदूरी का फल है। ओह वह कितना अच्छा परिवार था और उस परिवार की मालकिन भी कितनी अच्छी थी जिसकी मैंने सेवा की। तुमको उनके जैसा कहीं भी कोई भी नहीं मिल सकता।"

सो स्त्री की बेटी ने तुरन्त ही यह सोच लिया कि वह भी वहॉ जायेगी और उस मालकिन की सेवा करेगी। तो उसको भी ऐसी ही सोने की एक सन्दूकची मिल जायेगी।

वे दोनों बहिनें फिर से वहीं सूत कातने बैठीं। पर इस बार स्त्री की बेटी कॉटे कातने बैठी और आदमी की बेटी रुई कातने बेठी। शर्त यह थी कि जिसका भी सूत पहले टूटा वह कुॅए में जायेगा।

अब जैसा कि तुम सब समझ सकते हो कि स्त्री की बेटी का धागा पहले टूट गया। तो वह कुॅए में चली गयी।

इस बार भी वैसा ही हुआ जैसे पहले हुआ था। वह कुॅए की तली में गिर पड़ी पर उसको उस गिरने से कोई चोट नहीं आयी। वह तो वहॉ हरी हरी घास के मैदान में खड़ी थी।

वह कुछ दूर आगे चली तो वह एक हैज के पास आयी। हैज बोली — "ओ लड़की मेरे ऊपर बहुत जोर से मत चलना। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

स्त्री की बेटी ने सोचा "मैं इसकी परवाह क्यों करूँ।" सो वह उसके ऊपर से हो कर चली गयी जब तक कि वह सारी की सारी हैज कुचल नहीं गयी और कराहने नहीं लगी।

कुछ दूर और आगे जाने पर उसको एक गाय मिली। गाय उससे बोली — "मेहरबानी कर के मुझे दुहती जाओ। मेरे थन दूध के बोझ से फटे जा रहे हैं। मैं बाद में तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम जितना चाहे उसमें से उतना दूध पी लेना पर जितना बचे वह मेरे खुरों पर फेंक देना।"

उसने उस गाय को दुहा और तब तक उसका दूध पीती रही जब तक वह और दूध नहीं पी सकी। पर जब वह वहाँ से चली तो उसके पास गाय के खुरों पर डालने के लिये दूध बिल्कुल भी नहीं बचा था और जहाँ तक उस बालटी का सवाल था जिसमें उसने उसका दूध दुहा था वह उसने पहाड़ी के नीचे लुढ़का दी थी।

वह फिर से आगे चल दी। कुछ और दूर चलने के बाद उसको एक भेड़ मिला जो उसके साथ साथ अपने पीछे पीछे अपनी ऊन लटकाये चल रहा था।

भेड़ ने लड़की से कहा — "मेहरबानी कर के मेरी ऊन काट दो। बाद में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। ऊन काट कर तुम उसमें से

जितनी चाहे उतनी ऊन ले लेना पर बाकी बची हुई ऊन मेरी गर्दन में लपेट देना।"

लड़की ने यह सब कर तो दिया पर उसने इसे इतनी लापरवाही से किया कि उसने बेचारे भेड़ के शरीर में से बड़े बड़े टुकड़े भी काट लिये और जहॉ तक ऊन का सवाल था वह तो उसकी सारी ऊन ले कर चली गयी। उसकी गर्दन में बॉधने के लिये ज़रा सी भी ऊन नहीं छोड़ी।

आगे कुछ दूर चलने के बाद उसको एक सेब का पेड़ मिला जो फलों से भरपूर था और उसी की वजह से वह टेढ़ा भी खड़ा था।

सेब का पेड़ बोला — "मेहरबानी कर के मेरे पेड़ के सेब तोड़ दो ताकि मेरी शाखाऐं सीधी बढ़ सकें क्योंकि इस तरह से टेढ़े खड़े रहना मेरे लिये बहुत मुश्किल काम है।

पर ज़रा ध्यान रखना कि फल तोड़ते समय मुझे बहुत जोर से मत मारना। तुम चाहे जितने सेब खा लेना पर बाकी बचे हुए सेब मेरी जड़ के चारों तरफ डाल देना। मैं फिर तुम्हारी सहायता करूॅगा।"

लड़की ने उस पेड़ के सेब तोड़े तो पर उसने वही सेब तोड़े जो उसके सबसे पास थे। बाकी दूर लगे सेब तोड़ने के लिये उसने डंडे से पेड़ को बहुत जोर से मारा। इससे उसके फल ही नहीं बल्कि कई शाखाऐं भी टूट गयीं।

फिर उसने खूब सारे सेब खाये जब तक उससे सेब और नहीं खाये गये। बाकी बचे हुए सेब उसने पेड़ के नीचे फेंक दिये और आगे चल दी।

काफी दूर जाने के बाद वह एक खेत के पास आ पहुँची जहाँ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी। वहाँ आ कर उसने उससे ठहरने के लिये जगह माँगी तो उस जादूगरनी ने कहा कि उसको अब कोई नौकरानी नहीं चाहिये क्योंकि उनमें से कोई भी नौकरानी उसके किसी काम की नहीं थीं।

या तो वे उसके लिये बहुत होशियार थीं या फिर उन्होंने उसको उसकी चीजों के साथ धोखा दिया था।

पर स्त्री की बेटी कहाँ मानने वाली थी उसको तो उस जादूगरनी के घर में काम करना ही था। सो जादूगरनी को उसे रखना ही पड़ा। उसने उसको इस शर्त पर रख लिया कि वह उसका काम देखेगी फिर उसको अगर उसका काम अच्छा लगा तो वह उसको पक्की तरह से रख लेगी।

जादूगरनी ने पहला काम उसको यह दिया कि उसको चलनी में पानी भर कर ला कर दे। सो वह कुँए के पास गयी और चलनी में पानी भरने की कोशिश करने लगी। वह जैसे ही चलनी में पानी भरती वह उसके छेदों में से बाहर निकल जाता।

तभी छोटी छोटी चिड़ियों ने गाया —

इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ
इसको मिट्टी में सानो फिर इसमें भूसा मिलाओ

पर उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया बल्कि उनकी तरफ उसने इतनी मिट्टी फेंकी कि वे वहॉ से उड़ गयीं। इस तरह से वह उस चलनी में पानी नहीं भर सकी और उसको बिना पानी के ही घर जाना पड़ा।

इस तरह से बिना पानी लिये घर आने पर जादूगरनी ने उसको बहुत डॉटा।

फिर उसको गायों का घर साफ करने के लिये और उनका दूध दुहने के लिये भेजा गया। पर उसने तो ऐसे काम कभी किये नहीं थे सो उसने सोचा कि वह तो ऐसे काम करने के लिये बहुत अच्छी थी। फिर भी वह गायों के घर तक गयी।

पर जब वह वहॉ पहुँची तो वहॉ उसको सिवाय एक भूसा उठाने वाले के और कुछ नहीं मिला जिससे वह वहॉ की सफाई कर सकती। और वह भी इतना भारी था कि वह तो उसको हिला भी नहीं सकी उससे काम तो वह कैसे करती।

चिड़ियों ने उससे भी वही कहा जो उन्होंने उसकी सौतेली बहिन से कहा था। उन्होंने उससे कहा कि वह झाड़ू ले कर केवल थोड़ा सा गोबर वहॉ से उठा दे और बाकी गोबर उसके पीछे पीछे उड़ जायेगा। पर उसने झाड़ू उठा कर चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

फिर वह उनका दूध दुहने गयी। गायें बहुत ही बेचैन थीं कि जैसे ही वह उनको दुहने के लिये छूती तो वे उसको लात मारतीं और धक्का मारतीं। वह अपनी बालटी में उनका केवल बहुत थोड़ा सा ही दूध निकाल पाती।

कि तभी चिड़ियों ने फिर गाया – "चिड़ियों के पीने के लिये लिये एक छोटी सी बूँद दूध की एक छोटा सा खाना।"

पर उसने गायों को बहुत डॉटा और मारा। फिर उसके हाथ में जो कुछ आया उसने वही चिड़ियों की तरफ फेंक दिया। यह सब उसने कुछ इस तरह से किया कि देखने में वह सब बहुत खराब लग रहा था। इसलिये वह इस बार भी गायों के घर को साफ करने और उनको दुहने के मामले में कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी।

सो इस बार जब वह घर आयी तो उसको जादूगरनी की डॉट तो सहनी ही पड़ी साथ में उसको मार भी पड़ी।

बाद में उसको काले रंग की ऊन को सफेद करने के लिये भेजा गया पर उसमें भी वह कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं कर सकी।

इसके बाद जादूगरनी अन्दर से तीन सन्दूकचियॉ निकाल कर लायी – एक लाल एक हरी और एक नीली और उससे बोली कि उसको उसकी सेवाओं की कोई जरूरत नहीं थी। पर उसने जो कुछ वहॉ काम किया था उसके बदले में वह उनमें से कोई भी सन्दूकची चुन सकती थी। जो भी उसको अच्छी लगे।

तभी छोटी चिड़ियों ने गाया – "न तो तुम लाल लो न तुम हरी लो। पर तुम नीली लो जिसमें तीन छोटे क्रास हैं। हमने क्योंकि उनके निशान देखे हैं इसलिये हमें मालूम हैं।"

उसने चिड़ियों के गाने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उसने लाल वाली सन्दूकची चुन ली क्योंकि वह उसकी ऑखों को बहुत सुन्दर लग रही थी।

लाल सन्दूकची ले कर वह अपने घर चल दी। वह बहुत शान्ति से और आराम से घर चली गयी क्योंकि उसका पीछा करने वाला कोई नहीं था।

जब वह अपने घर पहुॅची तो उसकी मॉ तो खुशी के मारे कूद कर उसके पास पहुॅच गयी। दोनों ने मिल कर उस सन्दूकची को एक आतिशदान[45] पर रख दिया क्योंकि उन्होंने तो इसके बारे में कुछ और सोचा ही नहीं था कि उसमें सोने चॉदी के अलावा भी और कुछ हो सकता है।

वे तो बस यह सपना देख रहीं थीं कि उस सोने की सन्दूकची से अपना घर उस सूअर के घर जैसा सजा लेंगी। वहॉ जा कर उन्होंने उस सन्दूकची को खोला। लो जब उन्होंने उसको खोला तो उसमें से क्या निकला?

[45] Translated for the word "Fireplace". In cold places people used to light fire to keep their houses warm. This was called fireplace. There used to be a flat stone sheet over this place which could be used to keep something. See its picture above.

उसमें से तो मेंढक सॉप निकल पड़े। और उससे भी बुरी बात यह कि जब भी वे मुँह खोलतीं उनके मुँह से या तो कोई मेंढक कूद कर बाहर आ जाता या फिर कोई सॉप बाहर रेंग जाता। या फिर कई तरह के कीड़े बाहर निकल पड़ते। इस वजह से अब कोई उनके साथ ही नहीं रह पा रहा था।

तो यह इनाम मिला उस लड़की को उस जादूगरनी के साथ काम करने का।

# 10 मार्या मोरेवना[46]

एक बहुत दूर जगह में एक बहुत दूर देश में एक आदमी रहता था जिसका नाम था इवान ज़ारेविच[47]। उसके तीन बहिनें थीं – मैरी ज़ारेविच, ओल्गा ज़ारेविच और अन्ना ज़ारेविच[48]।

समय गुजरता गया और उनके माता पिता दोनों मर गये। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने अपने बेटे से कहा — "बेटा तुम अपनी बहिनों को उस पहले आदमी को दे देना जो सबसे पहले उनका हाथ माँगे। उनको घर पर बिठा कर मत रखना।" इवान ने अपने माता पिता को दफ़न कर दिया।

एक दिन वह अपनी तीनों बहिनों के साथ बागीचे में घूमने के लिये गया।

अचानक एक काला बादल उनके सिर के ऊपर आ गया और उसके साथ ही बड़े ज़ोर का तूफान भी आ गया। इवान बोला — "जल्दी करो बहिनों हम लोगों को जल्दी ही अन्दर चलना चाहिये।"

जैसे ही वे महल में घुसे तो गरज की आवाज सुनायी दी। कमरे की छत फट गयी और एक चमकीला बाज़[49]

---

[46] Marya Morevna – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.

[47] Ivan Tsarevich – the name of a man

[48] Mary Tsarevich, Olga Tsarevich ad Anna Tsarevich – the names of the three sisters of Ivan Tsarevich

[49] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

कमरे में आ गया। वह सीधे फर्श पर गया और एक सुन्दर लड़ने वाले में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान ज़ारेविच। मैं पहले एक मेहमान की तरह से आया था पर अब मैं एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन मैरी ज़ारेविच का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान बोला — "अगर मेरी बहिन चाहती है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" मैरी राजी हो गयी। उस बाज़ ने मैरी से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

घंटों पर घंटे निकलते गये, दिनों पर दिन निकलते गये और फिर एक साल कब निकल गया पता ही नहीं चला।

एक बार फिर इवान और उसकी बहिनें बागीचे में घूमने गये। तो एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर बिजली चमकी। और एक बार फिर इवान अपनी बहिनों के साथ अन्दर महल में चला गया।

जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक गरुड़[50] उसमें से अन्दर घुसा। वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक बहुत सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया।

[50] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहाँ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन ओल्गा का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले उम्मीदवार को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" ओल्गा राजी हो गयी। उस गरुड़ ने ओल्गा से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इसके बाद तीसरा साल निकल गया। इवान ने अपनी सबसे छोटी बहिन से कहा — "चलो, बागीचे में घूमने चलते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में घूमने चले गये। वे लोग थोड़ी ही देर वहाँ घूमे होंगे कि एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर एक बिजली चमकी।

एक बार फिर इवान अपनी बहिन अन्ना के साथ अन्दर महल में चला गया। जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक रैवन[51] अन्दर आया।

वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया। पहले दो लड़ने वाले भी काफी सुन्दर थे पर वे इसके मुकाबले में कुछ भी नहीं थे।

[51] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहॉ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूॅ। मैं तुम्हारी बहिन अन्ना का हाथ मॉगने आया हूॅ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले दो उम्मीदवारों को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो तुम उससे शादी कर सकते हो। मैं रास्ते में नहीं आऊॅगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

अन्ना राजी हो गयी और उस रैवन ने अन्ना से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इवान अगले पूरे साल अकेला ही रहा सो वह दुखी हो गया। एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी बहिनों से मिल कर आता है।

सो वह अपनी बहिनों से मिलने चल दिया। चलते चलते उसको एक बड़ा शानदार कैम्प दिखायी दे गया। उस कैम्प की मालकिन मार्या मोरेवना[52] उससे मिलने के लिये बाहर आयी।

"गुड डे इवान ज़ारेविच। तुम कहॉ जा रहे हो? क्या तुम अपनी मरजी से ऐसे ही जा रहे हो या फिर तुमको किसी चीज़ की जरूरत है?"

इवान बोला — "मैं एक आजाद आदमी हूॅ। मैं वही करता हूॅ जो मैं चाहता हूॅ।"

[52] Marya Morevna – name of the would-be wife of Ivan Tsarevich

मार्या बोली — "तब तुम अन्दर आओ और मेरे साथ कुछ समय रहो।"

इवान खुशी से राजी हो गया। वह वहाँ दो रात रहा। मार्या को उससे प्रेम हो गया तो उन दोनों ने शादी कर ली। मार्या उसको अपने राज्य ले गयी। वे वहाँ कुछ समय तक खुशी खुशी रहे।

फिर मार्या को लड़ाई को लिये जाना पड़ा। उसने अपना सब कुछ इवान को सौंपा और बस इतना कहा — "तुम जहाँ भी जाना चाहो जाना, तुम जो कुछ भी देखना चाहो देखना पर एक चीज़ तुम कभी नहीं करना और वह यह कि इस भंडारघर का दरवाजा कभी नहीं खोलना।"

अब इवान तो ऐसा ही था जैसे हम सब लोग होते हैं सो जैसे ही मार्या वहाँ से गयी वह तुरन्त ही उस भंडारघर की तरफ भागा गया जिसका दरवाजा मार्या ने उसको खोलने से मना किया था। उसने उसका दरवाजा खोला और अन्दर झाँका।

वहाँ कोश्चेव लटका हुआ था जिसे कभी मौत नहीं आती[53]। वह बारह लोहे की जंजीरों से बँधा हुआ था।

कोश्चेव उसको देखते ही बोला — "मुझ पर दया करो। मुझे कुछ पीने के लिये दो। मैं यहाँ बिना खाना खाये और बिना पानी

[53] Koshchev the Deathless – he was one of the friends of Baba Yaga. Read many folktales of Baba Yaga in the book "Roos Ki Baba Yaga" by Sushma Gupta in Hindi language. Get it free from hindifolktales@gmail.com in e-book form.

पिये दस साल से लटका हुआ हूँ। मेरा गला तो बिना पानी के बिल्कुल रेगमार[54] हो गया है।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी ले कर आया और उसे पीने के लिये दिया। कोश्चेव ने उसे एक ही घूँट में पी लिया और बोला — "मुझे एक बालटी से ज़्यादा पानी चाहिये। मुझे एक बालटी पानी और ले कर आओ।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी और ले आया। कोश्चेव उस पानी को भी पी गया। फिर उसने तीसरी बालटी पानी माँगा। इवान ने उसको तीसरी बालटी पानी भी ला दिया।

जैसे ही उसने वह तीसरी बालटी पानी पिया तो उसकी सारी पुरानी ताकत वापस आ गयी। उसने अपना शरीर एक बार हिलाया और अपनी बारहों जंजीरें तोड़ दीं।

कोश्चेव बोला — "तुम बहुत दयालु हो। पर मुझे डर है कि अब तुम मार्या को फिर कभी नहीं देख सकोगे। तुम उसको उसी तरह नहीं देख सकोगे जैसे तुम अपने कान नहीं देख सकते।"

फिर वह हवा का एक झोंका बना और खिड़की से बाहर चला गया। उसने मार्या को ढूँढ लिया और उसको उठा कर अपने घर ले गया।

इवान बहुत रोया बहुत रोया। बाद में उसने अपने आँसू पोंछे और अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ। दो दिन तक चलने

[54] Translated for the word "Sandpaper".

के बाद तीसरे दिन सुबह वह एक बहुत ही बढ़िया महल के पास आया।

उस महल के पास एक ओक का पेड़[55] खड़ा था जिस पर एक चमकीला बाज़ बैठा था। इवान को देखते ही उस बाज़ ने उस पेड़ पर से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

आदमी बन कर वह बोला — "भाई साहब, आप कैसे हैं और दुनियॉ में क्या कुछ नया हो रहा है?"

इतने में राजकुमारी मैरी भी बाहर दौड़ी आ गयी। वह अपने भाई के गले लग गयी और उसका सारा हाल पूछने लगी कि वह कैसा रहा। फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान उसके घर तीन दिन रहा फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

बाज़ बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम यहॉ अपनी चॉदी की चम्मच छोड़ते जाइये। इससे हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपनी चॉदी की चम्मच वहॉ छोड़ दी और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

[55] Oak Tree – a kind of large shady tree

इवान फिर दो दिन चला और तीसरे दिन एक और सुन्दर महल के पास आया। यह महल उस पहले वाले महल से भी ज़्यादा सुन्दर था।

इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ था और इस पेड़ पर एक गरुड़ बैठा था। इवान को देख कर उसने भी वहॉ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

उसने आवाज लगायी — "ओ ओल्गा, जल्दी से बाहर आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

ओल्गा तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और अपने भाई को गले लगा कर उससे उसका हाल पूछा फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान यहॉ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

गरुड़ भी वही बोला जो बाज़ ने उससे कहा था — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपना चॉदी का कॉटा यहॉ छोड़ते जाइये शायद हमें इसकी कभी जरूरत पड़ जाये। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का कॉटा वहॉ छोड़ा और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला तो तीसरे दिन की सुबह को उसको फिर एक महल दिखायी दिया। यह महल उस दूसरे महल से भी ज़्यादा सुन्दर और शानदार था। इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ खड़ा था और इस ओक के पेड़ पर एक रैवन बैठा था।

रैवन ने इवान को देखा तो उसने भी पेड़ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया। वह ज़ोर से बोला — "अन्ना, यहॉ आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

अन्ना तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और भाई को गले लगाया और उससे उसका सारा हाल पूछा और फिर उसको अपना हाल बताया।

इवान यहॉ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

रैवन बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपनी चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा यहॉ छोड़ते जाइये। इसको देख कर हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा वहॉ छोड़ा और उनको गुड बाई कह कर फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला। तीसरे दिन की सुबह उसको मार्या मोरेवना मिल गयी। जैसे ही उसने इवान को देखा तो वह बहुत खुश हुई और खुशी के मारे रो पड़ी।

वह बोली — "इवान, तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी? तुमने उस भंडारघर का दरवाजा खोला ही क्यों और कोश्चेव को बाहर निकाला ही क्यों?"

इवान बोला — "मुझे माफ कर दो मार्या। पर अब उस बीती बात पर रोने से क्या फायदा। अब तुम बस मेरे साथ चलो, जल्दी से, इससे पहले कि कोश्चेव आ जाये।"

दोनों तैयार हुए और वहॉ से चल दिये। कोश्चेव उस दिन शिकार के लिये गया हुआ था। वह जब शाम को वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसका घोड़ा ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "अगर तुमको कोई खेत बोना हो, जैसे गेंहू का खेत, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उसके दानों का आटा बनाओ, फिर उस आटे की पॉच ओवन भर कर डबल रोटियॉ बनाओ, फिर उन डबल रोटियों को खाओ तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। उसने जल्दी ही इवान को पकड़ लिया।

उसने इवान से कहा — "मैं तुमको एक बार माफ कर सकता हूॅ क्योंकि तुमने एक बार मुझे पानी पिलाया था। मैं तुमको दोबारा भी माफ कर दूॅगा क्योंकि तुमने मुझे दूसरी बार पानी पिलाया था पर तीसरी बार मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूॅगा।"

कह कर उसने इवान से मार्या को लिया और उसको घर वापस ले आया। इवान बेचारा एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा।

वह वहॉ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा। कुछ देर बाद वह फिर से मार्या को लाने के लिये चल दिया। कोश्चेव उस समय बाहर गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान वह हमको बहुत जल्दी पकड़ लेगा।"

"पकड़ लेता है तो पकड़ लेने दो। हम लोग कम से कम एक दो घंटे तो एक साथ गुजार लेंगे।" और वे दोनों वहाँ से फिर चल दिये।

शाम को जब कोश्चेव घर लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर गया।

कोश्चेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

"क्या तुम उसको पकड़ सकते हो?"

"अगर तुमको जौ का खेत बोना हो, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उससे बीयर बनाओ, फिर उसको पी कर धुत हो जाओ फिर सोओ और तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। बहुत जल्दी ही उसने इवान को फिर से पकड़ लिया — "मैंने तुमको पहले ही कहा था इवान कि तुमको मार्या को देखना इतना ही मुश्किल होगा जितना कि अपने कान देखना।"

इतना कह कर उसने मार्या को उठाया और उसको ले कर घर आ गया और इवान वहॉ फिर वहीं अकेला बैठा रह गया। वह फिर वहॉ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा।

पर एक बार फिर वह मार्या को लेने जा पहुँचा। इत्तफाक से उस बार फिर कोश्चेव शिकार के लिये गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान इस बार तो वह तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

"करने दो पर मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

सो वे फिर तैयार हुए और फिर वहॉ से चल दिये।

पर शाम को लौटते हुए कोश्चेव का घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

कोश्चेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और उसे दौड़ा कर इवान को बहुत जल्दी ही पकड़ लिया।

वहॉ पहुँच कर उसने इवान के छोटे छोटे टुकड़े किये, उनको एक बैरल[56] में भरा, बैरल के मुँह को

[56] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

गोंद से बन्द किया, बैरल को लोहे के छल्लों से बॉधा और समुद्र में फेंक दिया। और मार्या को ले कर चला आया।

उसी समय इवान अपनी जो चॉदी की चीज़ें अपने तीनों जीजाओं के पास छोड़ आया था वे सब काली पड़ गयीं।

उनको काला पड़ते देखते ही वे सब चिल्लाये — "अरे ऐसा लगता है कि इवान के साथ कुछ खराब हो गया है।"

गरुड़ तुरन्त ही नीले समुद्र की तरफ उड़ गया। उसने उसमें से वह बैरल निकाला और उसको किनारे पर ले आया। बाज़ उड़ा और "ज़िन्दगी का पानी" ले आया और रैवन "मौत का पानी" लाने के लिये उड़ गया।

तीनों चिड़ियों ने उस बैरल को तोड़ा, उसमें से इवान के शरीर के सारे टुकड़े निकाले, उनको अच्छी तरह से धोया और फिर से उनको उनकी जगह पर लगा दिया।

रैवन ने उन टुकड़ों पर मौत का पानी छिड़का तो उसके वे सब टुकड़े एक साथ जुड़ गये। बाज़ ने उस शरीर के ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़का तो इवान ने सॉस ली और वह उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "ओह मेरे भगवान, मुझे लगता है कि मैं कई दिनों तक सोता रहा।"

उसके तीनों जीजा एक साथ बोले — "तुम तो कई दिनों से भी ज़्यादा दिनों तक सोते रहते अगर हम न होते। तुम्हारी छोड़ी हुई

तीनों चीज़ों ने काली पड़ कर हमें बता दिया कि तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ हो गयी है।

बस हम सब तुमको बचाने भागे और तुम्हें बचा लिया। अब तुम हमारे साथ चलो और कुछ दिन हमारे साथ रहो।"

इवान बोला — "नहीं मेरे जीजा लोगों अभी नहीं, मुझे आज ही जाना होगा, मुझे अभी भी मार्या को ढूँढना है।" और वह मार्या को लाने के लिये फिर चल दिया।

जब उसने मार्या को ढूँढ लिया तो उसने मार्या से कहा — "तुम पहले कोश्चेव को ढूँढो और उससे यह पता लगाओ कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।"

मार्या ठीक समय का इन्तजार करती रही और ठीक मौका मिलते ही उसने उससे यह पूछा कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।

कोश्चेव बोला — "यहाँ से एक तिहाई जमीन पार कर के जमीन के चौथे हिस्से में आग की नदी के उस पार एक बाबा यागा रहती है। उसके पास एक घोड़ी है जो उसको रोज एक बार दुनियाँ घुमाने ले जाती है।

उसके पास और भी बहुत सारे घोड़े घोड़ियाँ हैं। मैंने उसके पास तीन दिन रह कर उसके घोड़े घोड़ियों के चरवाहे का काम किया था। उस समय मैंने उसका एक भी घोड़ा नहीं खोया था।

बस इसी बात से खुश हो कर उसने मुझे अपनी यह बच्ची घोड़ी[57] मुझे इनाम में दे दी थी।"

मार्या ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुमने वह आग की नदी कैसे पार की?"

कोश्चेव बोला — "ओह वह नदी? उसको पार करने के लिये तो मेरे पास एक जादू का रूमाल है।

बस मुझे उसको अपने दाहिने कन्धे के ऊपर केवल तीन बार हिलाने की जरूरत पड़ती है और फिर वह एक ऊँचा पुल बन जाता है। वह पुल उन आग की लपटों को पार कर के वहाँ तक पहुँचने के लिये काफी ऊँचा होता है।"

मार्या ने उसके कहे गये सारे शब्द बखूबी याद कर लिये और फिर उनको इवान को बता दिये।

उसने कोश्चेव का रूमाल भी चुरा लिया। इवान ने उस रूमाल के सहारे वह आग की नदी पार की और बाबा यागा की खोज में चल दिया।

वह काफी दूर तक बिना खाये पिये चलता रहा। अब उसको भूख लग आयी थी। वह खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूँढ रहा था कि तभी उसको समुद्र के ऊपर एक अजीब सी चिड़िया आती दिखायी दी।

[57] Translated for the word "Foal". Foal is a below one-year old horse's female child. After one year to three years they are called Colt (male) and Filly (female).

उस चिड़िया के साथ उसके कुछ बच्चे भी थे तो इवान ने सोचा कि वह उनमें से एक बच्चे को खा कर अपनी भूख मिटायेगा।

पर वह चिड़िया बोली — "नहीं इवान नहीं। तुम मेरे बच्चे को छोड़ दो एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

इवान ने उसके बच्चे को छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जंगल में उसको शहद की मक्खियों का एक छत्ता मिला तो वह बोला "मैं थोड़ा सा शहद ही खा लेता हूँ।"

रानी मक्खी बोली — "नहीं इवान नहीं। मेरा शहद तो छूना भी मत। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

सो इवान ने शहद भी छोड़ा और आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसको एक शेरनी मिली जो अपने बच्चों के साथ खेल रही थी। उसने कहा "मैं एक शेर का बच्चा ही खा लेता हूँ नहीं तो मैं तो अब भूख से मर ही जाऊँगा।"

शेरनी बोली — "नहीं नहीं इवान। मैं एक दिन तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। मेहरबानी कर के मेरे बच्चे को मत खाओ।"

"ठीक है मैं तुम्हारे बच्चे को नहीं खाता पर तुम अपना वायदा याद रखना।"

इस तरह वह बेचारा भूखा ही घूमता रहा। काफी देर के बाद वह बाबा यागा के घर तक पहुँच सका। उसके घर के चारों तरफ

बारह खम्भे लगे हुए थे। उन बारह खम्भों में से एक खम्भे के सिवा सभी खम्भों पर आदमियों की खोपड़ियॉ लगी हुई थीं।

इवान बोला — "गुड डे दादी मॉ।"

"गुड डे इवान। तुम यहॉ क्या कर रहे हो? तुम यहॉ अपनी मरजी से आये हो या फिर किसी जरूरत से आये हो?"

"मैं आपके पास काम करने के लिये आया हूँ। मुझे आपकी एक छोटी घोड़ी चाहिये।"

"जैसी तुम्हारी मरजी। पर इसके लिये तुमको ज़्यादा काम करने की जरूरत नहीं है केवल तीन दिन ही काम करने की जरूरत है। अगर तुम मेरी घोड़ियों को ठीक से रखोगे तो तुमको एक घोड़ी मिल जायेगी।

पर अगर तुम मेरी एक घोड़ी को भी खो दोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूँगी और जो मेरा जो यह आखिरी खम्भा खाली पड़ा है उस पर लगा दूँगी। तैयार हो?"

इवान राजी हो गया। बाबा यागा ने उसको कुछ खाना पीना दिया और उसको काम पर लगा दिया। इवान ने घोड़ियों को बाहर निकाला।

उन्होंने अपनी पूँछ हिलायी और घास के मैदान की तरफ भाग गयीं। इससे पहले कि वह उनको देखता वे तो इधर उधर भाग कर चली गयीं।

वह एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। कुछ देर बाद उसको नींद आ गयी। सूरज छिपने वाला था कि तभी वह समुद्र के ऊपर उड़ने वाली अजीब चिड़िया वहॉ आयी और इवान को जगाया।

"उठो इवान उठो। ज़रा देखो तो, तुम्हारी सब घोड़ियॉ तो अपनी घुड़साल में आ भी गयी हैं।"

इवान उठा और वापस घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी सारी घोड़ियॉ तो घुड़साल में खड़ी हैं।

पर उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर चिल्ला रही थी और उनको बुरा भला कह रही थी — "तुम लोग सारी की सारी यहॉ वापस क्यों आ गयीं?"

घोड़ियॉ बोलीं — "हम क्या करतीं। सारी दुनियॉ की बहुत सारी चिड़ियें वहॉ आ गयीं और अगर हम वहॉ से न भागते तो वे तो अपनी चोंचों से हमारी आखें ही निकाल लेतीं।"

"कोई बात नहीं कल तुम लोग जंगल की तरफ चली जाना।"

इवान रात को चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने उससे कहा — "तुम अपने आपको ठीक से देखना इवान। अगर आज रात एक घोड़ी भी वापस नहीं आयी तो कल तुम्हारा यह खूबसूरत सिर मेरे एक खम्भे पर सजा होगा।"

अगले दिन इवान ने सब घोड़ियों को घुड़साल से बाहर निकाला। घोड़ियों ने बाहर निकलते ही अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और फिर से जंगल में काफी अन्दर तक भाग गयीं।

इवान फिर एक पत्थर पर बैठ गया और फिर रोने लगा। रोते रोते वह फिर वहीं सो गया।

वह सारा दिन सोता रहा। जब शाम हुई तो वहाँ एक शेर आया और बोला — "इवान उठो। देखो तुम्हारी घोड़ियाँ घुड़साल में सुरक्षित पहुँच गयीं हैं।"

इवान उठा और फिर घर वापस आया। बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर फिर से चिल्ला रही थी। वह अपनी घोड़ियों पर पहले दिन से भी ज़्यादा गुस्सा थी — "तुम लोग घर वापस क्यों आयीं?"

बेचारी घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं? सारी दुनियाँ के जंगली जानवर हमको फाड़ खाने के लिये वहाँ आ गये थे।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है ठीक है। कल तुम लोग नीले समुद्र की तरफ भाग जाना।"

रात को इवान चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने इवान से कहा — "इवान इन घोड़ियों का ध्यान रखना। अगर तुमने एक भी घोड़ी खोयी तो तुम्हारा यह सुन्दर सिर मेरे उस **12**वें खम्भे पर टँगा होगा।"

इवान ने फिर घोड़ियॉ घुड़साल से बाहर निकालीं। बाहर निकलते ही उन्होंने सबने अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और नीले समुद्र की तरफ भाग गयीं। वहॉ जा कर वे नीले समुद्र में गायब हो गयीं।

इवान फिर एक एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। रोते रोते वह फिर सो गया।

जब शाम हो गयी तो वहॉ एक शहद की मक्खी भिनभिनाती आयी और इवान से बोली — "इवान, जाओ घर जाओ। हमने तुम्हारी तुम्हारी सब घोड़ियॉ घुड़साल में भेज दी हैं।

पर ध्यान रखना कि अब तुम बाबा यागा के सामने नहीं आना। वह तुमको देख नहीं पाये। तुम घुड़साल में घोड़ियों के चारे के बर्तन के पीछे छिप जाना।

वहॉ पर एक बहुत ही गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी है जो हमेशा गोबर में लेटी रहती है। तुम उस घोड़ी को चुरा लेना, और वह भी आधी रात के बाद और उसको ले कर भाग जाना।"

इवान उठा और घुड़साल की तरफ चल दिया और घोड़ियों के खाने के बर्तन के पीछे जा कर छिप गया।

उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों को फिर से डॉट रही थी — "तुमको फिर से वापस आने की क्या जरूरत थी?"

घोड़ियॉ बोली — "हम कुछ भी नहीं कर सके। वहॉ उतनी सारी शहद की मक्खियॉ थी जितनी कभी तुमने ज़िन्दगी भर में नहीं देखी होंगी। वे हमारे ऊपर सब तरफ से उड़ उड़ कर आ रही थीं और हमारी हड्डियों तक काटने की कोशिश कर रही थीं।"

यह सुन कर बाबा यागा सोने चली गयी। आधी रात को इवान ने वह गन्दी सी खाल की बीनारी वाली बच्ची घोड़ी उठायी और उस पर चढ़ कर आग की नदी की तरफ दौड़ गया।

वहॉ जा कर उसने अपना रूमाल अपने दॉये कन्धे के ऊपर तीन बार हिलाया तो वहॉ एक बहुत ऊॅचा पुल खड़ा हो गया।

इवान ने वह पुल पार किया फिर दो बार उस रूमाल को अपने बॉये कन्धे के ऊपर हिलाया तो वह पुल तो वहीं रहा पर वह बहुत ही पतला हो गया था।

अगली सुबह बाबा यागा ने देखा कि उसकी एक बच्ची घोड़ी गायब थी। वह गुस्से में आग बबूला हो कर तुरन्त ही अपनी लोहे की ओखली में कूदी, अपने मूसल से उसको चलाया और अपनी झाड़ू से अपना रास्ता साफ करती हुई दौड़ गयी।

वह आग की नदी पर आयी तो सामने उसको पुल दिखायी दिया। उसने सोचा — "कितना शानदार पुल है।" और यह कह कर वह उस पुल के ऊपर दौड़ गयी।

पर यह क्या, वह पुल तो बीच में ही टूट गया। बाबा यागा उस आग की नदी में सिर के बल गिर पड़ी और एक बहुत ही दर्द भरी मौत मारी गयी।

इवान ने उस बच्ची घोड़ी को घास के मैदान में घास खिला कर मोटा किया। कुछ ही दिनों में वह बहुत ही बढ़िया घोड़ी हो गयी। इवान एक बार फिर मार्या के पास गया।

वह तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी और खुशी से बोली — "ओह इवान, तुम अभी ज़िन्दा हो?"

इवान ने फिर उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ वहाँ हुआ था और कहा — "चलो यहाँ से चलें।"

मार्या बोली — "पर इवान मुझे डर लगता है। अगर कहीं कोश्चेव हम लोगों को फिर से पकड़ ले तो। और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दे तो।"

इवान बोला — "नहीं इस बार वह ऐसा नहीं कर सकेगा। मेरी घोड़ी हवा की रफ्तार से भागती है।"

सो वे दोनों उस घोड़ी पर चढ़े और वहाँ से भाग लिये।

शाम को कोश्चेव जब घर वापस लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "पता नहीं। इस बार इवान के पास एक नया घोड़ा है जो मुझसे भी ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

कोश्चेव चिल्लाया — "नहीं। मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता।"

यह तो मुझे पता नहीं कि कोश्चेव अपने घोड़े पर कितने घंटे या कितने दिन तक उसके पीछे भागा पर आखीर में उसने इवान को पकड़ ही लिया।

कोश्चेव अपने घोड़े से जमीन पर कूदा और इवान को अपनी तलवार से मारने ही वाला था कि इवान की घोड़ी ने उसको बहुत ज़ोर से लात मारी और उसका सिर छोटे छोटे टुकड़े हो कर बिखर गया। इवान ने उसको फिर अपना एक मोटा सा डंडा मार कर खत्म कर दिया।

फिर उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी, कोश्चेव का शरीर उसमें जलाया और उसकी राख को चारों तरफ बिखेर दिया। मार्या कोश्चेव की घोड़ी पर चढ़ी, इवान अपनी घोड़ी पर चढ़ा और दोनों वहाँ से चल पड़े।

पहले वे रैवन के घर गये, फिर गरुड़ के घर गये और फिर बाज़ के घर गये। तीनों महलों में उनका ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

उसकी बहिनों ने कहा — "इवान, हमको तो लगा था कि अब हम तुमको देख ही नहीं पायेंगे। पर अब हमको पता चल गया कि तुमने यह यात्रा क्यों की थी। सारी दुनियॉ में तुम्हारी पत्नी जैसी सुन्दर और कोई लड़की तो हो ही नहीं सकती।"

वह अपनी इन तीनों बहिनों के साथ कुछ कुछ दिन रहा। बहुत सारी दावतें खायीं और फिर अपने राज्य की तरफ चल दिया वहॉ उसने मार्या के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज किया।

# 11 मेंढकी राजकुमारी[58]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया. अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

[58] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.
[A similar story is told in India too in which the prince's arrow is caught by a female monkey, instead of a female frog, and he has to marry her. Read this story in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" under the title "Bandariya Dulhaniya" written by Sushma Gupta in Hindi language.]

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहाँ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[59] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊँचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूँढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुँह में पकड़ा हुआ था।

जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस माँगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूँगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

[59] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियॉ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियॉ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से कूद कर बाहर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी हुए एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला — "अरे, इस कमीज को तो कोई बर्तन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा —

"ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहाँ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियाँ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियाँ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियाँ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुँह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे बाद में आऊँगी।

जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियाँ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी जिस पर चाँदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चाँद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों को ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[60] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुक्म दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया

[60] Translated for the word “Swan”.

तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया? अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[61] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[62] में से हो कर जाना पड़ेगा।" यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

[61] Translated for the words "One Score and Nine"

[62] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और वह पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह जंगल के एक खुले हिस्से में घूम रहा था तो वहाँ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टाँगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी कर के अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहाँ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी माँ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि वह मेंढकी "अक्लमन्द येलैना"[63] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी 14वीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[64] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई मार नहीं सका है।

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

---

[63] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Ruasia. She is mentioned in "Firebird" story published in this book.

[64] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[65] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहाँ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया। वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[66] मिला।

---

[65] Oak tree is a very large shady tree.

[66] Translated for the word "Drake"

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहाँ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[67] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊँचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊँची

[67] Pike fish is a large size fish

शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुँचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहाँ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

तभी वह भेंगा खरगोश वहाँ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश ने उस खरगोश को फाड़ा उसमें से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख जिसकी ज़िन्दगी इवान ने बख्शी थी उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा।

यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है।

राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलैना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहॉ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

# 12 ज़ार सुलतान की कहानी[68]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के एक प्रदेश में रात गये तीन बहिनें मोमबत्ती की रोशनी में चरखे पर बैठी बैठी सूत कात रही थीं।

उनमें से सबसे बड़ी बहिन ने अपनी शान बघारते हुए कहा — "अगर मैं ज़ार की पत्नी[69] होती तो मैं उसके लिये बहुत स्वादिष्ट खाना बेक करती। मैं उसके लिये कितना बढ़िया शाही स्वादिष्ट खाना बनाती।"

इस पर बीच वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर लेता तो मैं उसके लिये बहुत ही बढ़िया सोने के तार वाला कपड़ा बुनती।"

इस पर तीसरी सबसे छोटी वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर ले तो मैं ज़ार को एक बहुत सुन्दर और बहादुर बेटा दूँगी।

जैसे ही वह यह कह कर चुकी कि घर का दरवाजा खुला और यह लो उन लड़कियों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ज़ार

---

[68] The Story of the Tzar Saltan – a folktale from Russia, Asia. By Alexander Pushkin. Taken from the Web Site : https://www.marxists.org/subject/art/literature/children/texts/pushkin/tsar.html

[69] Translated for the word "Tzaritsa" – means he wife of Tzar ot Tsar. Tzar is the title of the King of Russia till 1917.

तो खुद वहीं खड़ा था। उसने दरवाजे से ही उनकी सारी बातें सुन ली थीं।

उसको तो केवल उसकी किस्मत ही वहॉ ले गयी थी। और जो कुछ उसने आखीर में सुना उसको सुन कर तो उसके दिल की धड़कन ही बहुत तेज़ हो गयी।

अन्दर जा कर सुलतान ने उन लड़कियों को नमस्ते की और उन तीनों में से सबसे छोटी वाली बहिन को अपनी पत्नी के लिये चुन लिया कि वही उसकी पत्नी बनेगी और उसे अपने महल ले गया। उसने कहा कि अगले सितम्बर में वह उसको वैसा ही बेटा देगी जैसा कि उसने अभी कहा था।

और तुम दोनों सुन्दर लड़कियों तुम लोग भी अपना घर बिना किसी झिझक के मेरे और मेरी होने वाली पत्नी के साथ चलो। तुममें से एक मेरी शाही कपड़ा बुनने वाली बनेगी और दूसरी मेरा शाही खाना बनाने वाली।"

कह कर ज़ार अपनी होने वाली पत्नी को ले कर आगे आगे चल दिया और दोनों बड़ी बहिनें उनके पीछे पीछे चल दीं।

वहॉ जा कर ज़ार ने बिल्कुल भी समय बर्बाद नहीं किया और उसी शाम को ही उसने सबसे छोटी वाली बहिन से शादी कर ली।

ज़ार सुलतान और उसकी पत्नी मेज पर एक दूसरे के पास बैठे। फिर आये हुए मेहमान उनको बर्फ के समान सफेद हाथी दॉत के काउच तक ले कर उनको रात के लिये अकेला छोड़ गये।

यह सब देख कर कपड़ा बुनने वाली बहिन लम्बी लम्बी साँसें भरने लगी और खाना बनाने वाली बहिन रोने लगी। दोनों के दिल में अपनी छोटी बहिन की खुशकिस्मती के लिये जलन और नफरत भरी थी। वे उसकी खुशी को सहन नहीं कर पा रही थीं।

कुछ ही दिनों में छोटी बहिन को बच्चे की आशा हो गयी।

इन्हीं दिनों लड़ाई छिड़ गयी तो ज़ार सुलतान को लड़ाई के लिये जाना पड़ा। ज़ार सुलतान ने अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपने पीछे उसको अपना और राज्य के वारिस का ठीक से ख्याल रखने के लिये कहा।

घर में दुश्मनों से लड़ते हुए छोटी बहिन ने राज्य के वारिस को जन्म दिया। बच्चा बड़ा सुन्दर और प्यारा था। माँ ने गरुड़ की तरह से उसने उस बच्चे की बहुत सावधानी से देखभाल की और यह खुशी की खबर एक तेज़ घुड़सवार के हाथों ज़ार सुलतान को भेजी।

पर शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी माँ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने मिल कर उस छोटी बहिन को बर्बाद करने का सोचा।

सो उन्होंने उस घुड़सवार को रास्ते में ही पकड़ लिया और उसकी बजाय एक दूसरा घुड़सवार ज़ार सुलतान के पास भेज दिया। उन्होंने उस सन्देश को तो उससे चुरा लिया जो उसको रानी

ने लिख कर दिया था और एक दूसरा सन्देश उसकी जेब में लिख कर रख दिया।

उस दूसरे सन्देश में उन्होंने लिखा — "तुम्हारी पत्नी ने एक डरावने बच्चे को जन्म दिया है जो न तो लड़का ही है और न लड़की ही है। और न ही हमने ऐसा जीव पहले कभी कोई देखा है।"

यह सन्देश पढ़ कर तो ज़ार सुलतान गुस्से से भर गया। वह चिल्ला कर बोला — "इस घुड़सवार को फॉसी चढ़ा दो। किसी पास वाले पेड़ से टॉग कर इसको लटका दो।"

लेकिन फिर अनमनेपन से उसने उसको यह सोच कर वापस भेज दिया कि इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये। वह शहर में तब तक इन्तजार करे जब तक ज़ार सुलतान लड़ाई से वापस घर लौटता है।

जब शहर के दरवाजे तक आया तो शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी मॉ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने उसको खूब शराब पिलायी।

और जब वह शराब पी कर खूब धुत हो गया तो उन्होंने उसका वह सन्देश चुरा लिया जो उन्होंने उसको लिख कर दिया था और वह सन्देश उसकी जेब में रख दिया जो ज़ार सुलतान की पत्नी ने उसको लिख कर दिया था।

वह घुड़सवार लॅगड़ाता लॅगड़ाता राजा के दरबार में इस हुक्म के साथ पहुॅचा "रानी और उसके बच्चे को सुबह होने से पहले पहले गुप्त रूप से डुबो दो।"

अपने राजा के वारिस के लिये और एक नौजवान मॉ और उसके बच्चे के लिये रोते हुए दुखी होते हुए ज़ार के नौकरों ने रानी को उसकी इस बदकिस्मती के बारे में बताया।

सो इस हुक्म का पालन किया गया। रानी और बच्चे को एक ताबूत में बन्द किया गया और उस ताबूत को कस कर बन्द कर के समुद्र में फेंक दिया गया। इस तरह ज़ार का हुक्म बजा लाया गया।

रात में तारे चमक रहे थे गहरे नीले रंग के बादल लम्बी लम्बी सॉसें भर रहे थे। ऊपर नीले आसमान में तूफान के बादल घिरते आ रहे थे। वह ताबूत हवा से समुद्र की लहरों पर ऊपर नीचे झूल रहा था।

रानी उस समय एक विधवा की तरह से दुखी थी जबकि बच्चा बड़ा हो रहा था। इस तरह से उनको घंटों बीत गये। सुबह हो गयी रानी इन्तजार करती रही।

पर उसके बेटे ने लहरों से कहा — "ओ नीली लहरों, तुम जब भी चाहो जहॉ भी चाहो कहीं भी आने जाने के लिये आजाद हो। तुम तो पत्थरों को भी बड़ी आसानी से अपने साथ ले जाती हो। तुम तो पहाड़ों पर भी बाढ़ ला देती हो। तुम तो जहाज़ों को भी आसमान तक उठा देती हो।

मेरी प्रार्थना सुनो ओ लहरों, हमें बचा लो। हमको सूखी जमीन पर ले चलो।"

और लहरों ने उस ताबूत को और उसमें बन्द दोनों कैदियों को सुरक्षित रूप से समुद्र के रेतीले किनारे पर उतार दिया। मॉ और बेटे ने यह महसूस किया कि अब उनको लहरों के थपेड़े नहीं लग रहे हैं और वे सख्त जमीन पर हैं पर इस ताबूत में से उन्हें निकालेगा कौन?

यकीनन भगवान ही उनकी सहायता करेगा। वह उनको इस तरह नहीं छोड़ेगा। वे बड़बड़ाये "अब हम अपनी इस जेल इस ताबूत को कैसे तोड़ें।"

बेटा अपने पंजों पर खड़ा हुआ और अपने आपको ऊपर तक खींचता हुआ बोला — "मुझे मिल गया।" और उसने अपना सिर उस ताबूत के ढक्कन में मारा तो वह ढक्कन खुल गया और वे दोनों उस ताबूत से बाहर निकल आये। अब मॉ और बेटा आजाद थे।

उन्होंने देखा कि वे लोग एक टापू पर खड़े थे। वहीं उनको एक छोटी सी पहाड़ी दिखायी दे गयी। उसकी चोटी पर एक ओक का पेड़[70] खड़ा था और उनके चारों तरफ समुद्र बह रहा था।

बेटा बोला — "शायद हमको यहॉ कुछ खाना पीना मिल जायेगा।"

[70] Oak Tree is a large shady kind of tree

सो उसने ओक के पेड़ की एक शाख तोड़ी और उसको मोड़ कर अपने गले में पड़ी रेशमी रस्सी की सहायता से उसकी एक कमान बना ली। फिर पास में लगे सरकंडे का एक तीर बनाया और उस टापू पर शिकार की खोज में निकल पड़ा।

चलते चलते वह जैसे ही समुद्र के किनारे आया कि उसने एक चीख की आवाज सुनी। उसको लगा कि कोई परेशान था। उसने चारों तरफ देखा तो उसको एक हंस परेशान सा दिखायी दिया। उसके ऊपर एक काइट चिड़िया अपने पंख फैलाये उड़ रही थी और उसकी चोंच में खून लगा हुआ था।

जबकि हंसिनी बेचारी वहीं पानी में अपने पंख फड़फड़ा रही थी। उसके पंखों की फड़फड़ाहट से पानी इधर उधर उछल रहा था। बेटे ने उस काइट चिड़िया पर अपना तीर चला दिया और वह तीर उसके गले में पूरा घुस गया।

उसके गले से खून बह निकला और वह चिड़िया इस तरह से चीखती हुई समुद्र में गिर गयी जैसे कोई आत्मा नरक में जाती हुई चीखती है।

बेटे ने अपनी कमान नीचे की और हंसिनी की चोंच और पंखों की तरफ देखा तो उसने देखा कि वह हंसिनी बेचारी भी अपने दुश्मन से लड़ते लड़ते बहुत थक चुकी थी।

वह जितनी सादा रूसी भाषा में बोल सकती थी उतनी सादा रूसी भाषा में बोली— "ओ ज़ारेविच[71], मुझको आजाद करने वाले निडर बहादुर, तुम इसलिये दुखी न हो कि मेरी वजह से तुम्हारा तीर समुद्र में चला गया है।

तुम्हारे लिये इसकी यह कम से कम सजा है कि तुमको तीन दिन तक उपवास रखना पड़ेगा। मैं तुम्हारे इस ऐहसान का बदला जरूर चुकाऊँगी। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

और हॉ, यह हंसिनी नहीं है जिसको तुमने आजाद किया है यह तो एक बहुत सुन्दर लड़की है।

और वह जिसे तुमने मारा है, ओ भले नाइट[72], वह काइट चिड़िया नहीं थी वह तो एक जादूगर[73] था। मैं तुम्हारा यह ऐहसान ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी और तुम्हारी मुसीबत के समय हमेशा तुम्हारी सहायता करूँगी। जाओ अब तुम आराम करो सब कुछ अच्छा ही होगा।"

इतना कह कर वह हंसिनी आसमान में उड़ गयी।

उसके जाते ही उन किस्मत के मारे मॉ और बेटा दोनों की ऑखों में नींद आने लगी जैसे कोई उनको जबरदस्ती सुला रहा हो

[71] Tzarevich means "the son of Tzar"

[72] Knight – a knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[73] Translated for the word "Wizard"

और वे दोनों भगवान से अपनी ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करते हुए तुरन्त ही सो गये।

सुबह जब सूरज निकला तो ज़ारेविच को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहॉ उस टापू पर तो शहर फैला पड़ा था। उस शहर के चारों तरफ बर्फ जैसी सफेद एक ऊॅची और चौड़ी मजबूत दीवार खिंची हुई थी। उस शहर में सुनहरे गुम्बद वाले चर्च खड़े हुए थे और बड़े बड़े घर बने हुए थे।

उन सबको देख कर वह ज़ोर से बोला — "मॉ देखो तो।"

बेटे की आवाज सुन कर मॉ भी उठी और उसने भी जब वह शहर देखा तो उसके मुॅह से भी निकला "ओह। यह सब क्या है।"

बेटा बोला — "मॉ अभी तो चीज़ें शुरू हुई हैं। मेरी सफेद हंसिनी ने अभी तो अपना तमाशा दिखाना शुरू किया है।"

यह सब देख कर वे दोनों शहर की तरफ चले। शहर के दरवाजे में घुसे। उसी समय चर्च के घंटे भी इतने ज़ोर से बजे जैसे कोई बिजली कड़कती है कि उनसे कोई मुर्दा भी जाग जाये। फिर वहॉ चर्च के गवैयों ने लौर्ड[74] के गीत गाना शुरू किया।

कुलीन लोग[75] सोने के काम की गयी गाड़ियों में आ रहे थे। सारे लोग उन मॉ बेटा को देख कर बहुत खुश हुए।

[74] Lord word is used here for Jesus Christ

[75] Translated for the word "Noble"

अपनी मॉ का आशीर्वाद ले कर वह उनकी तरफ शान से बढ़ा और उसी दिन से उसने अपने नये राज्य में राज करना शुरू कर दिया। वह शाही सिंहासन पर बैठा और राजकुमार गिडौन[76] के नाम से राज करने लगा।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर अब रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमारे पास ओ राजकुमार बहुत कीमती कीमती फ़र हैं बेचने के लिये। हमारे पास सफेद लोमड़े ओर सैबिल[77] के फ़र हैं। पर अब हमको

[76] Prince Guidon

[77] The sable is a small carnivorous mammal that inhabits forest environments, primarily in Russia from the Ural Mountains.

बहुत देर हो गयी है हमें जाना है। हमारा रास्ता पूर्व की तरफ बूयान टापू[78] से हो कर पूर्व में ज़ार सुलतान के राज्य तक है।"

यह सुन कर राजकुमार गिडौन बोला — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे झुक कर सलाम कहियेगा।"

यहाँ सौदागरों ने राजकुमार को नीचे झुक कर सलाम किया और अपने रास्ते चल दिये और उधर राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे आँखों से ओझल नहीं हो गये।

उसी समय अचानक वह बर्फ जैसी सफेद हंसिनी राजकुमार के सामने प्रगट हुई और बोली — "राजकुमार, तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की।"

हंसिनी बोली — "क्या तुम उड़ना चाहोगे? वह जो समुद्र में जहाज़ जा रहा है उसके भी उस पार। तो एक मच्छर बन जाओ।"

[78] Buyan Island – in Slavic mythology, Buyan Island is described as a mysterious island in the ocean with the ability to appear and disappear using tides. Three brothers – Northern, Western, and Eastern Winds live there. It figures prominently in many famous myths. Koshchei or Koshchev the Deathless keeps his soul hidden there, secreted inside a needle placed inside an egg in the mystical oak-tree.

राजकुमार इसके लिये इससे पहले हॉ या ना कहता कि यह कह कर हंसिनी ने अपने दोनों पंख समुद्र के नीले पानी में फड़फड़ाये जिससे राजकुमार सिर से ले कर पैर तक पानी में भीग गया।

पानी में भीग कर तुरन्त ही वह एक मच्छर बन गया और उसने ज़ ज़ करते हुए तेज़ी से इधर उधर उड़ना शुरू कर दिया। वह उस जहाज़ पर जा कर सबकी नजर बचा कर एक छेद में छिप कर बैठ गया।

हवा समुद्र के ऊपर से उड़ती हुई गाती हुई बह रही थी। वे बूयान टापू को पार करते हुए ज़ार के राज्य की तरफ चले जा रहे थे। वह जिस जमीन की इच्छा कर रहा था और जो उसको इतनी प्रिय थी वह उसको दूर और साफ दिखायी दे रही थी।

कुछ देर में वह जमीन भी आ गयी। नाविकों ने वहा जा कर अपने जहाज़ का लंगर डाला। वहॉ के लोगों ने मेहमानों का स्वागत किया और उनको महल की तरफ ले गये।

वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से राजगद्दी पर बैठा था। उसके सिर पर जवाहरातों से जड़ा ताज रखा था। शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज मॉ उसके दॉये बॉये बैठी थीं।

ज़ार ने उनकी तरफ शाही शान से देखते हुए सब सौदागरों को उनकी जगहों पर बिठाया।

फिर उसने उनसे कहा — "ओ सौदागरों तुम लोग बहुत जगहों से घूम कर आ रहे हो। जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

समुद्र में एक टापू था। उसके किनारे बहुत ढालू थे। कभी वह बहुत ही उदास, बिना लोगों का और बिना पेड़ों का हुआ करता था। वहॉ बस केवल एक ओक का पेड़ हुआ करता था।

पर अबकी बार जब हमने उसको देखा तो वहॉ तो एक बहुत बड़ा और आलीशान शहर बस गया। वहॉ तो बहुत बड़े बड़े शाही घर बन गये, सुनहरी गुम्बदों वाले चर्च बन गये, सुन्दर बागीचे बन गये। यह सब तो वहॉ बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यजनक हो गया।

वहॉ राजकुमार गिडौन राज करते हैं और उन्होंने आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

ज़ार भी आश्चर्य से बोला — "अगर भगवान ने मेरी ज़िन्दगी थोड़ी सी और बढ़ायी तो मैं उस टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और कुछ समय के लिये इस गिडौन का मेहमान बन कर रहूॅगा।"

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज मॉ यह नहीं चाहती थीं कि ज़ार इतनी दूर वहॉ जा कर उस टापू को देखे।

सो खाना बनाने वाली दूसरों की तरफ ऑख मारती हुई बोली — "वाह क्या ही आश्चर्य की बात है कि समुद्र के किनारे एक शहर है। क्या तुमने ऐसा कहीं सुना है? पर यहॉ एक ऐसा आश्चर्य है जिसको किसी को बताया जा सकता है कि एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। यकीनन यह एक आश्चर्य है।"

ज़ार सुलतान को यह वाकई आश्चर्यजनक लगा पर हमारे मच्छर को यह सुन कर गुस्सा आ गया।

उसने अपनी मच्छर वाली ताकत से अपनी आंटी की दॉयी ऑख पर काट लिया। दर्द से वह पीली पड़ गयी और चीख पड़ी। पर वह उस ऑख से फिर कभी देख नहीं सकी।

उसकी बहिन ने, नौकरानियों ने और मॉ ने खुद ने एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते उस मच्छर को भगाने की कोशिश की — "ठहर जा ओ नीच मच्छर।" पर वह वहॉ से बहुत तेज़ी से भाग कर अपने घर चला गया।

दुखी हो कर गिडौन ने एक बार फिर समुद्र के किनारे से समुद्र की तरफ देखा तो अचानक वही बरफ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हो गयी।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूॅ कि एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। और यह आश्चर्य किसी को बताने के लायक भी है कि कहीं एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है। पर क्या यह बात मैं यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि ऐसा है?"

हंसिनी बोली — "तुम ठीक कहते हो राजकुमार। यह अफवाह झूठी नहीं है। हालॉकि यह तुम्हारे लिये एक आश्चर्य हो सकता है पर मेरे लिये यह कोई नयी चीज़ नहीं है। तुम दुखी मत हो राजकुमार। मैं तुम्हारा यह छोटा सा काम जरूर करूॅगी।"

यह सुन कर राजकुमार खुशी खुशी घर दौड़ गया। उसने जा कर देखा कि उसके महल का ऑगन तो बहुत बड़ा हो गया है।

उसमें एक फ़र का पेड़ लगा है। उस फ़र के पेड़ पर एक गिलहरी बैठी बैठी गिरियॉ तोड़ रही है और गाती जा रही है।

उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है जो उसके तोड़ने के बाद इधर उधर गिर रही है। वह आश्चर्यजनक गिलहरी गा रही थी — "वह अपने पैरों की सुन्दर उँगलियों को बड़ी आसानी से हिलाती हुई बागीचे में से हो कर जा रही है।"

वह गिलहरी अपनी पूँछ से सीपी और छोटे छोटे पत्थरों के ढेरों को बिखराती जा रही थी और राजकुमार उसका गाना सुन रहा था। आश्चर्यचकित सा राजकुमार गिडौन बहुत धीरे से फुसफुसाया — "तुमको बहुत बहुत धन्यवाद ओ सुन्दर हंसिनी। भगवान तुमको भी इतना ही आराम और सुख दे जितना तुमने मुझे दिया है।"

उसने उस गिलहरी के लिये क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक घर बनवाया। उसके लिये एक चौकीदार रखा और एक लिखने वाला रखा जो उसकी तोड़ी हुई गिरी के हर छिलके का हिसाब रखता था।

इस तरह राजकुमार का खजाना बढ़ने लगा और साथ में गिलहरी की शान भी।

समुद्र पर हवा चलती रहती। पाल वाली नावें तेज़ी से चलती रहतीं। वे उस टापू से भी आगे निकल जातीं जिस पर यह सुन्दर

शहर बसा हुआ था। उस टापू पर लगी तोपें अपनी आवाजों से उन नावों को किनारे बुलाती रहतीं।

जब वे जमीन पर आ गयीं तो राजकुमार उनमें जाने वाले सौदागरों का मॉस और शराब से मेहमानदारी की और उनसे पूछा — "तुम लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? तुम लोग कहॉ जा रहे हो और कहॉ से आ रहे हो?"

उन्होंने कहा — "हम लोग डौन के स्टैप्स[79] के घोड़े बेचते हुए सात समुद्र की यात्रा कर के आ रहे हैं ओ राजकुमार गिडौन। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम करियेगा।"

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है

[79] Steppes of Don – means the grassland of Don

अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

हंसिनी ने उसको अबकी बार मक्खी बना दिया और वह समुद्र के पार उड़ता चला गया। वह फिर से एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल पड़े। वहॉ सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपन जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक ओर धोखेबाज मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं और उसको मेंढक की निगाहों की तरह से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हो। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

बहुत दूर एक टापू पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ के सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक है और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों की गिनती लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन

गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा कर के ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको अपना सलाम भेजा है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

X X X X X X X

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली ओर उनकी चालाक धोखेबाज मॉ ज़ार को वह टापू नहीं देखने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो शाही कपड़ा बुनने वाली बोली — "ऐसा झूठ कहॉ है ज़रा बताओ तो। हमने तो ऐसा सुना है कि ऐसी बहुत सारी गिलहरियॉ हैं जो सारा दिन गिरियॉ तोड़ती रहती हैं और पन्नों के ढेर लगाती ही रहती हैं और सोने को इधर उधर फेंकती रहती हैं। इसमें तो मुझे ऐसा कोई आश्चर्य नहीं लगता। और फिर यह सच है तो भी, और झूठ है तो भी, मुझे इससे अच्छा एक और आश्चर्य मालूम है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहाँ तेतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर[80] उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं। तुम्हारे लिये यह एक आश्चर्य है पर यह सच है।"

मेहमान सब अक्लमन्द थे सो यह सुन कर वे सब चुप से रह गये। वे उससे कोई बहस नहीं कर सके पर ज़ार इसको देखने के लिये बहुत उत्सुक हो उठा और गिडौन बहुत गुस्सा।

वह तुरन्त ही उठा और अपनी आंटी की बॉयी ऑख पर जा कर वहाँ उसको काट लिया। वह तो पीली पड़ गयी और दर्द के मारे चीख पड़ी। अब तो उसकी उस ऑख से उसको दिखायी भी नहीं पड़ रहा था।

वह गुस्से से चीख पड़ी — "पकड़ लो इस कीड़े को और मार दो इसको।"

[80] Chernomor – the leader of the troops. He is a sorcerer. He is mentioned in the folktale entitled "Ruslan and Ludmilla" – Folktale No 9 in the book entitled "Roos Ki Lok Kathayen-2" – a collection of translated folktales from Russia by Sushma Gupta.

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता चला जा रहा था कि एक बार फिर वह बर्फ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूँ कि यह एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। तुम मुझे यह बताओ कि यह आश्चर्य क्या है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ तेतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

इन में हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं।"

इसके जवाब में हंसिनी बड़बड़ायी — "क्या गिडौन बस यही सब तुमको परेशान कर रहा है? तुम आश्चर्य मत करो। यह तुम्हारे लिये आश्चर्य हो सकता है पर मेरे लिये नहीं।

क्योंकि समुद्र के ये नाइट्स और कोई नहीं मेरे भाई हैं। तुम दुखी मत हो आराम से घर जाओ और इन्तजार करो। तुमको अपने महल के दरवाजे पर मेरे भाई मिल जायेंगे।"

राजकुमार खुशी खुशी अपने घर वापस लौट गया। वह अपनी मीनार पर चढ़ा और समुद्र की तरफ देखने लगा।

लो समुद्र का पानी तो किनारे पर आ गया और उसके बंजर किनारे पर बिखर गया। वहॉ वह एक आश्चर्यजनक दृश्य छोड़ गया।

वहॉ तेतीस सुन्दर नौजवान बहादुर नाइट्स थे जो चमकीले कपड़े पहने थे और दो दो की लाइन में बड़ी शान से मार्च कर रहे थे। हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर था लम्बा था सुन्दर था और नौजवान था। वे सब इतने एक से थे कि विश्वास नहीं होता था।

चरनोमोर उनका नेता था और वे सब उसके पीछे चल रहे थे। उनका नेता उनको ले कर सबसे पहले शहर के दरवाजे तक गया।

राजकुमार गिडौन भागता हुआ अपने मेहमानों का स्वागत करने गया। लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कौन थे और कहॉ से आये थे सो वे सब उन सबके चारों ओर इकट्ठा हो गये।

नाइट्स का नेता बोला — "राजकुमार, हंसिनी की प्रार्थना पर हम तुम्हारे सुन्दर शहर की रक्षा करने के लिये समुद्र से बाहर आये

हैं। इसको बाद हम हमेशा ही तुम्हारे शहर की रक्षा करने के लिये नीले समुद्र से बाहर आते रहेंगे।

हम तुम्हारे शहर की चहारदीवारी की हमेशा ही चौकीदारी करते रहेंगे। अब हमें जाने दो क्योंकि हमको जमीन पर रहने की आदत नहीं है। पर हम वायदा करते हैं कि हम वापस आयेंगे।"

और वे सब वहॉ से गायब हो गये।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार डैमैस्क[81] के लोहे की तलवारें बेची हैं। चॉदी ओर सोना

[81] Damask

भी बेचा है। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है अब हमको चलना चाहिये। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम कर दीजियेगा।"

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

एक बार हंसिनी ने फिर राजकुमार को ऊपर से नीचे तक भिगो दिया और अबकी बार वह एक भौंरा बन गया। भौंरा बन कर वह समुद्र के पार उड़ता चला गया और वह फिर से उस जहाज़ के एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ चला जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की

तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल दिये। वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनको केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हैं। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ हर सुबह एक नया ही आश्चर्य होता है।

समुद्र बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर

बिखर जाता है और वहॉ तेतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो कर के गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। आपको उनको देख कर ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हैं। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

इस बार वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली लड़कियॉ तो चुप थीं पर उनकी चालाक मॉ चालाकी भरी हॅसी हॅसते हुए बोली — "आप लोग इसे आश्चर्य समझते होंगे पर हम नहीं। बहुत सारे मत्स्य पुरुष[82] सन्तरी की तरह किनारों पर घूमते हैं। इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात है।

[82] Translated for the word "Mermen". It is masculine form of mermaid.

यह सच है या झूठ पर मैं इसमें कोई अजीब बात नहीं देखती। इससे भी ज़्यादा बड़े बड़े आश्चर्य दुनियॉ में मौजूद हैं। और यह बात बिल्कुल सच है।

कहते हैं कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है।

उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है। वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। यह आश्चर्य है पर सच है।"

वहॉ बैठे लोगों को इसी में अपनी अक्लमन्दी लगी कि वे उससे बहस न करें पर ज़ार सुलतान यह सुन कर बहुत ही उत्सुक हो गया और हमारा ज़ारेविच तो बहुत ही गुस्सा हो गया।

उसने सोच लिया था कि वह नानी की ऑख को उसकी उम्र की वजह से नहीं छुएगा सो उसने एक भौंरे की तरह से उसका चक्कर काटा और उसकी नाक पर बहुत ज़ोर से काट लिया। इससे उसकी नाक पर लाल और सफेद निशान पड़ गये।

वह चिल्लायी — "अरे इस खूनी को पकड़ो। इसको जाने मत देना। पकड़ लो इसको। मार दो इसको।"

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता देखता चला जा रहा

था कि एक बार फिर वह बर्फ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "सब नौजवानों की एक दुलहिन होती है। केवल मैं ही बिना दुलहिन का हूँ।"

"बताओ तुम किससे शादी करना चाहते हो? मुझे बताओ शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।"

राजकुमार गिडौन बोला — "उनका कहना है कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है।

उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है। वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। क्या यह सच है या झूठ?"

गिडौन बड़ी बेचैनी से उसके जवाब का इन्तजार करता रहा। कुछ देर तक तो वह बर्फ जैसे सफेद पंखों वाली हंसिनी चुपचाप कुछ सोचती रही।

फिर बोली — "गिडौन मैं ऐसी एक लड़की तुम्हारे लिये ढूँढ सकती हूँ। पर ध्यान रहे पत्नी कोई दस्ताना नहीं है कि वह तुम्हारे लिली जैसे कोमल हाथों से बन जाये। अब तुम मेरी सलाह सुनो।

तुम इस मामले पर दोबारा विचार करो ताकि कल जब तुम उससे शादी कर लो तो तुम्हें उससे शादी कर के पछताना न पड़े।

गिडौन ने कहा — "मैंने सोच लिया है। मैंने बहुत दिनों तक इन्तजार किया पर अब मैं शादी कर के ही रहूँगा। इतनी सुन्दर राजकुमारी के लिये तो मैं कोई भी खतरा मोल लेने के लिये तैयार हूँ। मैं उसके लिये मर भी सकता हूँ। मैं उसके लिये नंगे पैर उत्तरी ध्रुव तक भी जा सकता हूँ।"

उसकी यह लगन देख कर वह हंसिनी कुछ सोचने के लिये रुकी फिर बोली — "राजकुमार, इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है। तुम्हारी होने वाली पत्नी यहाँ है। प्रिय, मैं ही वह राजकुमारी हूँ।"

कह कर उसने अपने पंख फैलाये और समुद्र के ऊपर से उड़ कर किनारे पर आ गयी। पेड़ों के बीच जा कर उसने अपने पंखों को मोड़ लिया और फिर एक झटका दे कर वह एक सुन्दर राजकुमारी बन गयी।

उसके बालों में दोयज का चाँद लगा हुआ था। उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा लगा हुआ था। वह बहुत सुन्दर थी और शानदार थी। जब वह बोलती थी तो ऐसा लगता था जैसे संगीत एक नदी के पानी तरह से बह रहा हो।

गिडौन ने उसको तुरन्त ही अपने गले से लगा लिया और उसका हाथ पकड़ कर उसको अपनी मॉ के पास ले गया। उसके पैरों पर झुक कर वह बोला — "मॉ अगर तुम खुश हो तो देखो मैंने अपनी पत्नी चुन ली है। तुम इसको प्यार भी करोगी और इस पर गर्व भी करोगी।

शादी करने के लिये हमें बस अब तुम्हारी इजाज़त की और आशीर्वाद की जरूरत है। हमारी शादी को आशीर्वाद दो ताकि हम कल को प्यार से एक साथ रह सकें।"

यह देख कर मॉ की ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये। उसने मुस्कुराते हुए उन दोनों झुके हुए बच्चों को आशीर्वाद दिया — "भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

राजकुमार गिडौन ने फिर बिल्कुल भी देर नहीं की और उसने राजकुमारी से उसी दिन शादी कर ली। अब बस एक वारिस का इन्तजार था।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर मॅडराने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले

आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार इस बार वे चीज़ें बेची हैं जो हमें नहीं ले जानी चाहिये थीं।[83] उनसे हमें फायदा भी बहुत हुआ है।

हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व की तरफ। हमारा रास्ता तय है। बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

गिडौन बोला — "जब तुम लोग ज़ार सुलतान के पास पहुँच जाओ तो उनको मेरी याद दिलाना और उनसे कहना कि "उन्होंने एक दिन मेरे राज्य में आने का वायदा किया था। हमको उनकी इस आने की देरी का अफसोस है पर हम अभी भी उनका इन्तजार कर रहे हैं। और उनको मेरा सलाम कहना।"

यह सुन कर वे सौदागर वहाँ से चले गये। इस बार गिडौन अपनी प्रिय पत्नी के साथ ही रहा। उसने उसका साथ कभी नहीं छोड़ा।

[83] Translated for the word "Contraband" items

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार सुलतान के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

इस बार उस नाव का हर सौदागर ज़ार का मेहमान था। ज़ार सुलतान वहॉ अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनके केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हो । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। उसके सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों को लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से उसको सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा कर के ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।

वहीं हमने एक दूसरा आश्चर्य भी देखा कि हर सुबह समुद्र का पानी बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और उसके बंजर किनारों पर बिखर जाता है।

और बहुत ज़ोर की गरज के साथ उसके बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ तेतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने होते हैं और बड़ी शान से मार्च करते हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो कर के गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। उनको देख कर आपको ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हों। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। उनकी सब तारीफ करते हैं और उनका गुणगान करते हैं।

उनकी एक पत्नी है जिसकी तरफ देखते देखते आप थकते नहीं। वह एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है।

वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है। उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है।

वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो।

राजकुमार गिडौन ने आपको अपना सलाम भेजा है और हमसे आपसे यह कहने के लिये कहा है कि वह आपका अभी भी इन्तजार कर रहे हैं कि आप एक दिन उनके शहर आयेंगे। उनको आपके इतने दिन तक न आने का बहुत अफसोस है।

अबकी बार ज़ार का धीरज छूट गया। उसने अपने जहाज़ी बेड़े को उस टापू पर चलने का हुक्म दिया।

पर इस बार भी पर वे शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार को उस टापू पर नहीं जाने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो उन्होंने बहुत कोशिश की कि वह ज़ार को उस टापू से दूर रख सकें पर इस बार उसने उनकी एक न सुनी।

ज़ार ने अपना पैर जमीन पर पटका, दरवाजा ज़ोर से बन्द किया और उनसे ज़ोर से कहा — "मैं यहॉ का ज़ार हूँ कोई बच्चा नहीं। हम आज ही जायेंगे। बस अब आगे और कुछ नहीं।"

X X X X X X X

राजकुमार गिडौन अपने घर से समुद्र की तरफ देख रहा था। समुद्र बिल्कुल शान्त पड़ा था। वहॉ एक भी लहर नहीं थी जैसे नींद में शान्ति से कोई लम्बी लम्बी सॉसें ले रहा हो।

तभी उसको समुद्र के नीले क्षितिज पर एक के बाद एक जहाज़ ऊपर आते हुए दिखायी दिये। आखिर ज़ार सुलतान का जहाज़ी बेड़ा समुद्र पर खेता हुआ चला आ ही गया।

यह देख कर गिडौन ज़ोर से चिल्लाता हुआ तुरन्त ही भागा भागा बाहर गया — "मॉ यहॉ बाहर आओ और राजकुमारी तुम भी बाहर आओ। देखो मुझे लगता है कि मेरे पिता जी आ रहे हैं।"

उसने अपनी दूरबीन से देखा कि वह तो वाकई शाही जहाज़ी बेड़ा ही था। उसके एक जहाज़ के डैक पर उसका पिता खड़ा था।

उसके साथ वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ भी थीं। वे सब आश्चर्य से इधर उधर देख रही थीं।

उनके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। चर्च के घंटे बजाये गये। ज़ार सुलतान का स्वागत करने के लिये गिडौन किनारे की तरफ भागा गया।

वहॉ से वह उन शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली, उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ और अपने पिता को वह अपने शहर तक बिना एक शब्द बोले ले कर आया।

वहॉ अब उनको महल दिखायी देने लगा था। उस महल के चारों तरफ बहुत सारे सन्तरी चमकीले जिरहबख्तर[84] पहने खड़े थे।

[84] Translated for the word "Armor".

ज़ार सुलतान ने देखा कि वहाँ तेतीस नाइट्स भी थे जो बहादुरी में बेजोड़ थे लम्बे थे सुन्दर थे और नौजवान थे। उसको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कितने एक से थे। चरनोमोर उनका नेता था।

वे आगे बढ़े तो महल के ऑगन में आ पहुँचे। ज़ार ने देखा कि वह ऑगन बहुत बड़ा है। उस ऑगन में एक बहुत ही बड़ा फ़र का पेड़ खड़ा है और उसके साये में एक गिलहरी बराबर गिरियाँ तोड़े जा रही है और गाती जा रही है।

उसकी वे गिरियाँ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। उसकी गिरियों के वे सोने के छिलके और पन्ने की गिरियाँ उस बड़े से ऑगन के फर्श पर सब इधर उधर पड़े हैं।"

और आगे जाने पर सब मेहमानों को राजकुमारी दिखायी दी। उसके बालों में दोयज का चाँद लगा है और उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा जड़ा है। वह बहुत सुन्दर है। और ज़ार सुलतान की अपनी पत्नी भी उसके बराबर में खड़ी हुई है।

उसने उसको देखते ही पहचान लिया। उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसने आश्चर्य से कहा "क्या मैं सोते में सपना देख रहा हूँ?"

उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और उसने अपनी पत्नी को बड़े गर्व से गले लगा लिया। उसने अपने बेटे और उसकी पत्नी को

गर्व से चूमा। फिर वे सब खाना खाने बैठे। वहॉ तो उनकी हॅसी रोके नहीं रुक रही थी वे सब बहुत खुश थे।

केवल वह शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ ये तीनों ही खुश नहीं थीं। तीनों वहॉ से भाग निकलीं और सीढ़ियों के नीचे जा कर छिप गयीं।

पर लोगों ने उनको उनके बाल पकड़ कर वहॉ से खींच लिया। रोते हुए उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और उनसे अपने जुर्म की माफी मॉगी।

ज़ार ने उनको माफ करते हुए उनको उनके घर भेज दिया। रात को सुलतान सो गया।

# 13 गंजी पत्नी[85]

सहायता कर के अच्छा फल पाने की यह लोक कथा भारत के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी के दो पत्नियॉ थीं। उनमें से उसकी जो छोटी पत्नी थी उसको वह अपनी बड़ी पत्नी से ज़्यादा प्यार करता था। उसकी छोटी पत्नी दो चोटियॉ बनाती थी और उसकी बड़ी वाली पत्नी केवल एक ही चोटी बनाती थी।

एक बार वह आदमी कुछ व्यापार करने के लिये किसी दूर जगह गया तो उसकी दोनों पत्नियॉ घर में अकेली ही रह गयीं। उनमें से उसकी छोटी पत्नी जो उसकी बहुत प्यारी थी वह उसकी बड़ी पत्नी से बहुत नफरत करती थी।

वह उससे घर का सारा छोटा छोटा काम कराती, दिन रात उसकी बेइज़्ज़ती करती और उसको पेट भर कर खाना भी नहीं देती।

एक दिन छोटी पत्नी ने बड़ी पत्नी से कहा — "ज़रा मेरे सिर में से जुऐं निकाल दो दीदी।" सो बड़ी पत्नी उसके सिर में से जुऐं निकालने बैठ गयी।

[85] The Bald Wife – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folktales of Bengal", by Lal Behari Dey. Its Hindi translation has been published bY NBT Press, Delhi The Hindi translation of this book is entitled as "Begal kI Lok Kathayen".

जब बड़ी पत्नी छोटी पत्नी के सिर में से जुऐं निकाल रही थी तो छोटी पत्नी के सिर का एक बाल टूट गया। इस पर छोटी पत्नी ने गुस्सा हो कर बड़ी पत्नी की पूरी की पूरी चोटी ही उखाड़ दी और उसको घर से बाहर निकाल दिया।

अब बड़ी पत्नी बिल्कुल गंजी हो गयी थी और क्योंकि उसको घर से भी बाहर निकाल दिया गया था सो उसने जंगल जाने का निश्चय किया कि वहॉ या तो वह भूखी रह कर अपनी जान दे देगी और या फिर उसे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।

जब वह जंगल जा रही थी तो रास्ते में उसको कपास का एक पेड़ मिला। उसके पास ही कुछ डंडियॉ पड़ी थीं उसने उनको इकट्ठा कर के एक झाड़ू बनायी और उससे उस पेड़ के चारों तरफ की जमीन साफ की। तो वह पौधा तो उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया और उसने उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

वह और आगे चली तो उसको एक केले का पेड़ मिला। उसने उस पेड़ के चारों तरफ की जमीन भी साफ की तो वह पेड़ भी उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया और उसने भी उसको एक वरदान देन का वायदा किया।

वह और आगे बढ़ी तो उसको एक ब्राह्मणी के बैल के रहने का शैड मिला। उसका शैड बहुत गन्दा हो रहा था सो उसने उसको साफ कर दिया।

बैल उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया तो उसने भी उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

उसके बाद वह फिर और आगे चली तो उसको तुलसी का एक पौधा[86] मिला। उसने उसको झुक कर प्रणाम किया और उसके चारों तरफ की जमीन भी साफ की। तुलसी ने भी उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

वह फिर और आगे चली तो उसको पेड़ की शाखों और पत्तों की बनी एक झोंपड़ी दिखायी दी। उसके पास एक आदमी पालथी मार कर बैठा था जो ऐसा लग रहा था जैसे ध्यान में बैठा हो।

वह एक पल के लिये उस मुनि के पीछे रुकी तो मुनि बोले — "तुम जो कोई भी हो मेरे सामने आओ। मेरे पीछे खड़ी नहीं रहो। क्योंकि अगर तुम मेरे पीछे खड़ी रहोगी तो मैं तुम्हें जला कर राख कर दूँगा।"

स्त्री ने यह सुना तो वह डर के मारे कॉपती हुई मुनि के सामने आ खड़ी हुई।

मुनि बोले — "बोल तेरी क्या इच्छा है बेटी?"

स्त्री बोली — "पिता जी आप तो जानते ही हैं कि मैं कितनी बदकिस्मत हूँ क्योंकि आप तो सब कुछ जानते हैं। मेरे पति मुझे प्यार नहीं करते। मेरे पति की दूसरी पत्नी ने तो मेरे सिर की एक

[86] A plant of Holy Basil

अकेली चोटी ही उखाड़ दी है। उसने मुझे घर से बाहर भी निकाल दिया है। मेरे ऊपर दया कीजिये मुनि महाराज।"

मुनि वहीं बैठे बैठे बोले — "वह जो सामने तुझे तालाब दिखायी दे रहा है तू उसमें जा कर केवल एक बार डुबकी लगा और फिर मेरे पास आ।"

स्त्री उस तालाब के पास गयी और उसमें मुनि के कहे अनुसार केवल एक बार डुबकी लगायी। जैसे ही वह उस तालाब में एक बार डुबकी लगा कर उसमें से बाहर निकली तो वह तो कितनी बदल चुकी थी।

उसका सारा सिर लम्बे घने काले बालों से भर चुका था। उसके बाल इतने लम्बे थे कि वे उसकी एड़ी तक आ रहे थे। उसका रंग बहुत गोरा हो गया था। वह अब ज़्यादा जवान और सुन्दर लगने लगी थी।

खुशी और कृतज्ञता से भरी वह मुनि के पास पहुँची और जमीन तक झुक कर उनको प्रणाम किया।

मुनि बोले — "ओ स्त्री उठ, और अब तू इस झोंपड़ी में अन्दर चली जा। वहाँ तुझको बहुत सारी डंडियों की बनी टोकरियाँ दिखायी देंगी। उनमें से तू कोई भी टोकरी जो भी तुझको अच्छी लगे उठा ला।"

स्त्री उस झोंपड़ी के अन्दर गयी और एक सादी सी टोकरी ले कर बाहर आ गयी।

मुनि बोलो — "अब इसे खोल।"

उसने उसको खोला तो उसको उसमें बहुत सारा सोना मोती जवाहरात और कीमती पत्थर मिले।

मुनि आगे बोले — "जा इस टोकरी को तू ले जा। यह कभी खाली नहीं होगी। जब भी तू इसमें से कुछ भी निकालेगी तो यह टोकरी फिर से भर जायेगी। और फिर और, और फिर और, और फिर और। और इस तरह से यह टोकरी कभी भी खाली नहीं होगी। जा बेटी जा खुशी खुशी जा।"

स्त्री ने एक बार फिर मुनि को कृतज्ञता के साथ जमीन तक झुक कर प्रणाम किया और वहॉ से चली गयी।

जब वह अपनी टोकरी हाथ में लिये अपने घर लौट रही थी तो वह तुलसी के पौधे के पास से गुजरी जिसके चारों तरफ की जमीन उसने वहॉ से जाते समय साफ की थी।

तुलसी का पौधा बोला — "जा खुशी खुशी जा मेरी बच्ची। तेरा पति तुझे बहुत प्यार करेगा।"

उसके बाद वह ब्राह्मणी के बैल के शैड के पास आयी जिसे उसने जाते समय साफ किया था।

उसने उसको सीपी के दो गहने दिये जो उसके सींगों में लिपटे हुए थे और कहा — "बेटी इन्हें ले जा और इनको अपनी कलाई पर पहन ले। और जब भी तू इनमें से किसी एक को भी हिलायेगी

तो उसमें से तुझको तू जो भी गहना और जैसा भी गहना चाहेगी तुझे मिल जायेगा।"

उसके बाद वह केले के पेड़ के पास आयी तो उसने उसको अपना एक चौड़ा सा पत्ता दिया और कहा — "ले यह पत्ता ले। जब तू इस पत्ते को हिलायेगी तो तुझे इससे न केवल सब प्रकार के केले मिलेंगे बल्कि सब तरह का स्वादिष्ट खाना भी मिलेगा।"

वहॉ से वह चली तो कपास के पेड़ के पास आयी जिसके चारों तरफ की जमीन उसने जाते समय साफ की थी।

उसने उसको अपनी एक शाख दी और कहा — "बेटी यह ले यह मेरी एक शाख लेती जा। तू जब भी इसको हिलायेगी तो न केवल तुझको इससे सूती कपड़े मिलेंगे बल्कि सब किस्म के कपड़े मिलेंगे।"

उसने वहीं वह शाख हिलायी तो उसके पैरों पर सिल्क की एक पोशाक गिर पड़ी। उसने वह पोशाक पहनी और कलाई पर बैल के दिये हुए सीपी के गहने पहने और हाथ में डंडियों की टोकरी, कपास की शाख और केले का पत्ता लिये अपने घर की तरफ चल दी।

जब वह अपने घर पहुॅची तो उसकी सौत घर के दरवाजे पर ही खड़ी थी। जब उसने एक सुन्दर सी स्त्री को अपनी तरफ आते देखा तो उसे ध्यान से देख तो वह तो दंग रह गयी। वह तो कितनी बदल गयी थी।

वह बूढ़ी गंजी स्त्री तो अब बहुत सुन्दर हो गयी थी। वह अमीर भी हो गयी थी। छोटी पत्नी तो अपनी बड़ी सौत से बहुत नफरत करती थी पर बड़ी पत्नी अपनी छोटी सौत से बहुत ही दया का व्यवहार करती थी।

उसने उसको बहुत सारे अच्छे कपड़े दिये, कीमती गहने दिये स्वादिष्ट खाने खिलाये पर इससे उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। यह सब बेकार ही गया। क्योंकि उसकी छोटी सौत तो उसकी सुन्दरता और लम्बे बालों से जल रही थी।

यह सुन कर कि यह सब उसको जंगल में रह रहे पिता मुनि से मिला उसने भी वहॉ जाने की सोचा। और वह वहॉ चल दी।

रास्ते में कपास का पेड़ पड़ा पर उसने उसका कुछ नहीं किया। वह केले के पेड़ के पास से गुजरी, ब्राह्मणी के बैल का शैड पड़ा, तुलसी का पौधा पड़ा पर वह सबको अनदेखा करते हुए सीधी पिता मुनि की झोंपड़ी की तरफ ही चलती रही।

वह मुनि के पास पहुॅची तो उन्होंने उसको भी तालाब में केवल एक बार ही डुबकी मारने के लिये कहा। सो जब उसने एक बार डुबकी मारी तो वह तो बहुत सुन्दर हो गयी और उसके सिर पर भी बहुत सारे घने काले बाल हो गये। उसका रंग भी बहुत गोरा हो गया।

उसको लगा कि अगर वह दोबारा उस तालाब में डुबकी लगायेगी तो शायद और ज़्यादा सुन्दर हो जाये।

सो उसने उस पानी में दोबारा डुबकी लगा ली। पर यह क्या। वह तो फिर से वैसी ही हो गयी थी जैसी पहले थी।

वह रोती हुई मुनि के पास गयी तो मुनि ने उसको यह कहते हुए भगा दिया — "दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से ओ कहना न मानने वाली स्त्री। तुझको मुझसे कोई वरदान नहीं मिलेगा।"

यह सुन कर वह दुख से कुछ पागल सी हो गयी और अपने घर चली गयी।

जब उन दोनों का पति घर वापस लौटा तो वह तो अपनी बड़ी पत्नी को देख कर दंग रह गया कि वह तो बहुत सुन्दर और बहुत लम्बे बालों वाली हो गयी है। वह उसको प्यार करने लगा और जब उसको यह पता चला कि वह सब उसको कहॉ से मिला तब तो वह उसको बहुत ज़्यादा प्यार करने लगा।

वे दोनों बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे। व्यापारी की छोटी पत्नी जो पहले उसकी बहुत प्यारी पत्नी थी अब उनके यहॉ नौकरानी की तरह से काम करती थी।

# 14 सुलतान की बेटी[87]

मदद करने की यह लोक कथा दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

सुलतान मुहम्मद के एक ही बेटा था – अली। सुलतान मुहम्मद काफी बूढ़ा था और उसको ऐसा लगता था कि अब वह ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा नहीं रह पायेगा।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "मेरे बेटे, इससे पहले कि मैं मरूँ मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे यह दिखा दो कि तुम मेरा वारिस बनने के लिये अक्लमन्द भी हो और हिम्मती भी।

यह पैसे लो और यह घोड़ा लो और दुनियाँ घूमो पर एक साल से ज़्यादा मत लगाना क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और अपने मरने से पहले मैं तुमको देखना चाहता हूँ।"

अली ने वह पैसे लिये और घोड़ा लिया और घूमने निकल पड़ा। उसने अपने पिता का देश छोड़ा ही था कि उसका घोड़ा बीमार पड़ गया और कुछ ही दिनों में मर भी गया।

घोड़े के मरने के बाद अली पैदल ही चल पड़ा पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि वह पैदल ही जा रहा था।

---

[87] The Sultan's Daughter – a Malay-Indian folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by ID du Plessis. Translated by Marguerite Gordon.

वह अनजानी जगहों में घूमता रहा और अपने चारों तरफ दुनियॉ की सुन्दरता देखता रहा – जंगलों में, पेड़ों में, और जंगली जीवों में। वह खुश था क्योंकि वह जवान था और ज़िन्दगी के लिये उसके मन में उत्साह था।

एक दिन तीसरे पहर में मौसम अचानक खराब हो गया और अली को कोई ठहरने की जगह ढूँढनी पड़ी। उसको पेड़ों से घिरा हुआ एक घर मिल गया।

पर जब वह उस घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह घर नहीं वह तो एक मस्जिद थी और वह मस्जिद भी खाली पड़ी थी। अली ने निश्चय किया कि वह अपनी रात वहीं गुजारेगा क्योंकि बाहर का मौसम उसको आगे बढ़ने के लिये ठीक नहीं लग रहा था।

सो वह उस मस्जिद में चला गया और सो गया। रात को सोते में वह कुछ धक्कों से जाग गया। वे धक्के इतने ज़्यादा ज़ोर के थे कि उसको लगा जैसे उसके नीचे का फर्श हिल गया हो।

वह चुपचाप उठा और यह जानने की कोशिश करने लगा कि वहॉ क्या हो रहा था पर सब जगह इतना अँधेरा था कि उसको कुछ दिखायी नहीं दिया। वे धमाके अभी भी हो रहे थे और कभी कभी उसको अपने आस पास कुछ लोग फुसफुसाते भी सुनायी पड़ रहे थे।

कुछ देर बाद दिन निकल आया। रोशनी में उसने देखा कि दो आदमी कुल्हाड़ी से मस्जिद का फर्श खोद रहे हैं। कुछ ही देर में

उन्होंने नीचे से एक आदमी का हड्डियों का ढाँचा निकाल लिया। अली को लगा कि यह तो उस मरने वाले की बेइज़्ज़ती थी।

अली अपने गुस्से को न रोक सका। उसने अपनी तलवार निकाली और उन आदमियों की तरफ दौड़ा। वह चिल्लाया — "तुम लोग अपना यह बुरा काम बन्द करो वरना मैं तुम्हारा गला काट दूँगा।"

जब उन कब्र के डाकुओं ने देखा कि वह तो अकेला था तो उनकी हिम्मत और बढ़ गयी।

उन्होंने कहा — "तुम्हें इससे क्या मतलब हम कुछ भी करें?"

अली बोला — "मैं अली हूँ सुलतान मुहम्मद का बेटा और हालाँकि मैं दूसरे देश में हूँ फिर भी मैं इस तरह की किसी मरे हुए आदमी की बेइज़्ज़ती बरदाश्त नहीं कर सकता।"

यह सुन कर वे लोग नम्रता से बोले — "यह उस मरे हुए आदमी की तो बेइज़्ज़ती हो सकती है पर हम तो केवल उसका बदला ले रहे हैं जो इस आदमी ने हमारे साथ किया। इसने हमसे बहुत सारा पैसा उधार लिया था और उसे बिना दिये ही मर गया।"

अली बोला — "अगर उसने ऐसा किया भी तो क्या उस आदमी के लिये यही सजा काफी नहीं है कि वह बेचारा मर गया? तुम्हें क्या लगता है कि इस पैसे के बारे में सोचते हुए क्या वह आत्माओं की दुनियाँ[88] में शान्ति से रह रहा होगा?"

[88] World of the Spirits

उनमें से एक ने शिकायती आवाज में कहा — "नहीं, शायद नहीं। पर इससे हमें हमारा पैसा तो वापस नहीं मिल जाता। उसको वह पैसा देने के बाद हम तो गरीब हो गये न? इसलिये अब उसको इस बात की सजा तो मिलनी ही चाहिये न?"

अली बोला — "इस तरह से बदला ले कर तो तुम अपनी ही आत्मा को नुकसान पहुँचा रहे हो। पर यह तो बताओ कि इस बेचारे के पास तुम्हारा कितना पैसा था?"

"पॉच सौ सिक्के।"

अली बोला — "अगर उसकी तरफ से मैं तुम्हें यह पैसा दे दूँ तो क्या तुम मुझसे वायदा करते हो कि तुम उसकी हड्डियॉ वापस उसकी कब्र में ठीक से रख दोगे और इस कब्र को बन्द कर दोगे?"

उनको इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था। वे यह सुन कर बहुत खुश हुए। पर जब अली ने उनको उनका बताया पैसा दिया तो उसके अपने बटुए में कुछ भी नहीं बचा था।

अगले दिन अली गॉवों से हो कर ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ चलता चला जा रहा था। उसका घोड़ा तो पहले ही मर चुका था और अब उसका बटुआ भी खाली था पर उसका दिल बहुत खुश था क्योंकि उसने एक मरे हुए आदमी का कर्ज निबटा दिया था।

जब वह ऐसे ही चलता चला जा रहा था तो उसके पीछे से एक अजनबी उसके साथ हो लिया। अली ने सोचा कि यह तो बड़ी

अजीब बात है। अभी अभी तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा ही था तब तो मेरे पीछे कोई था नहीं अब यह मेरे पीछे कौन कहाँ से आ गया।

पर उस आदमी का चेहरा हँसमुख था और अली को वह देखते ही अच्छा लगा। अजनबी बोला — "अससलामे कुम[89]।"

अली बोला — "वाले कुम सलाम।"

अजनबी फिर बोला — "क्या मैं तुम्हारे साथ साथ चल सकता हूँ?"

अली बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। कहाँ जा रहे हो तुम?"

"कहीं कोई खास जगह नहीं। मेरा नाम रजब[90] है और मैं बस थोड़ी देर तुम्हारे साथ चलना चाहता हूँ।"

सो वे दोनों साथ साथ चल दिये और चलते चलते एक बिल्कुल ही काले रंग के पहाड़ के पास आ निकले। अली बोला — "देखो तो यह कितना काला पहाड़ है। क्या तुमको लगता है कि यह बुरा मौसम है इस वजह से यह इतना काला दिखायी दे रहा है?"

रजब बोला — "नहीं नहीं, यह बुरा मौसम तो नहीं है बस इस पहाड़ का रंग ही इतना काला है। यह एक अजीब पहाड़ है। देखो न, तुम अपने आप अकेले इस पहाड़ के पास कभी नहीं घूम सकते। लोग इसको जादूगरनी का घर[91] कहते हैं।"

---

[89] Normal greeting in Muslims

[90] Radjab – a Muslim name

[91] Witch's House

जैसे जैसे वे उस पहाड़ से आगे की तरफ चले तो उनको एक स्त्री मिली जो लकड़ी लिये जा रही थी। जब वह उनकी तरफ आ रही थी तो एक पत्थर से टकरा कर गिर पड़ी और उसके घुटने में मोच आ गयी। इस मोच की वजह से वह और आगे नहीं चल सकी।

अली बोला — "बेचारी स्त्री। हम इसकी कैसे सहायता कर सकते हैं?"

रजब ने अपनी जेब में हाथ डाला और बोला — "मेरे पास इस के लिये यह एक मरहम है।" कह कर उसने वह मरहम उस स्त्री के घुटने पर लगा दिया। तुरन्त ही वह अच्छा महसूस करने लगी।

वह स्त्री बोली — "बहुत बहुत शुक्रिया। इसके बदले में मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम चाहो तो तुम अपने ये दोनों बड़े पत्ते[92] मुझे दे सकती हो।"

उस स्त्री ने खुशी खुशी वे दोनों पत्ते रजब को पकड़ा दिये। फिर उसने अपना छोटा सा लकड़ी का गट्ठर उठाया और दोनों दोस्तों को विदा कहा और अपने रास्ते चली गयी।

जब वह स्त्री चली गयी तो अली ने रजब से पूछा — "तुम इन पत्तों का क्या करोगे?"

[92] Translated for the word "Bracken" – means a palm or fern like leaf

रजब बोला — "ये कभी भी काम आ सकते हैं।"

सूरज छिपने के समय वे एक सराय के पास आ पहुँचे। वहाँ वे रात बिताने के लिये रुक गये। शाम का खाना खाने के बाद वे सराय के दरवाजे पर आ कर बैठ गये।

पहाड़ों की ठंडी हवा चल रही थी। तभी एक फकीर आया और अपने जादू से उस सराय में ठहरने वालों का दिल बहलाने लगा। वह एक खास फकीर था क्योंकि वह अपनी लकड़ी की कठपुतलियों को बिना किसी धागे के चला सकता था।

मेहमान लोग बैठे बैठे उसका जादू देख ही रहे थे कि वहाँ एक कुत्ता आ गया और वह उस जादूगर की एक कठपुतली पर कूद पड़ा और उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

जादूगर अपनी जादू की कठपुतली को ठीक नहीं कर सका सो जादूगर को गुस्सा आ गया।

वह उस कुत्ते को अपनी तलवार से मारना चाहता था पर रजब बीच में आ गया और बोला — "छोड़ो उस कुत्ते को। उस बेचारे को क्या पता कि क्या करना है और क्या नहीं करना। मैं तुम्हारी कठपुतली ठीक कर दूँगा। और मैं उसको ऐसे ठीक करूँगा कि न केवल वह चलने लगेगी बल्कि बोलने भी लगेगी।"

रजब ने अपनी वही पुरानी वाली छोटी सी मरहम वाली शीशी निकाली और उसमें से थोड़ा सा मरहम निकाल कर उस कठपुतली

की गर्दन पर और उसके सिर पर मल कर उन दोनों को जोड़ दिया।

वह कठपुतली तो सचमुच ही चलने लग गयी और इतना ज़्यादा बोलने लग गयी कि वह फकीर खुद भी उसके बोलने से डर गया। फकीर ने खुश हो कर रजब से पूछा कि इसके बदले में वह उसको क्या दे सकता है।

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम मुझे अपनी वह तलवार देना चाहो तो मैं उसे खुशी से ले लूँगा।" जादूगर ने उसको अपनी तलवार दे दी।

बाद में अली ने उससे पूछा — "तुम इस तलवार का क्या करोगे?"

रजब ने फिर पहले की तरह ही उसको जवाब दिया — "यह कभी भी काम आ सकती है।"

अगले दिन वे फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़े। कुछ दूर जाने पर उनको एक बड़े शहर की मीनारें नजर आयीं। रजब बोला — "चलो वहाँ चलते हैं।" सो दोनों उस शहर की तरफ चले।

जैसे ही वे शहर की चहारदीवारी के दरवाजे के पास आये अली को बहुत साफ साफ एक गाने की आवाज सुनायी पड़ी। उसने ऊपर देखा तो एक बर्फ सी सफेद चिड़िया उनके ऊपर घूम रही थी।

वह बोला — "सुनो न यह चिड़िया कितना मीठा गा रही है।"

रजब बोला — "हॉ यह बहुत अच्छी चिड़िया है। यह एक धार्मिक गीत पोइजी[93] गा रही है।"

अभी रजब ने यह कहा ही था कि वह चिड़िया मर कर उनके पैरों में आ गिरी। रजब ने म्यान से अपनी तलवार निकाली और उस चिड़िया के पंख काट कर अपने थैले में रख लिये।

अली ने फिर पूछा — "तुम इन पंखों का क्या करोगे?"

और रजब ने फिर वही जवाब दिया — "ये कभी भी काम आ सकते हैं।"

उन्होंने देखा कि बहुत सारे लोग वहॉ बीच बाजार में इकट्ठा थे और एक सुन्दर नौजवान राजकुमारी के सामने अपना सिर झुका रहे थे। वह राजकुमारी अपने गहरे कत्थई रंग के घोड़े पर सवार उन लोगों के बीच से हो कर जा रही थी। सब उसकी सुन्दरता की तारीफ कर रहे थे।

अली ने पास में खड़े एक आदमी से पूछा — "घोड़े पर बैठी यह लड़की कौन है?"

"यह पोइटरी[94] है, सुलतान की बेटी। यह इस देश की न केवल सबसे ज़्यादा सुन्दर लड़की है बल्कि सबसे ज़्यादा बेरहम भी है। जो भी आदमी इससे शादी करना चाहता है पहले उसको इसकी

[93] Poisie
[94] Poetari

एक पहेली बूझनी पड़ती है। अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो यह उसको मौत के घाट उतरवा देती है।"

अली रजब से बोला — "मुझे पोइटरी पसन्द आयी। वह बेरहम हो सकती है पर उसने मेरा दिल चुरा लिया है। मैं कल इसके महल जा रहा हूँ और देखता हूँ कि मैं उसकी पहेली बूझ सकता हूँ या नहीं?"

रजब बोला — "ठीक है। पर इसके लिये हम लोगों को आज जल्दी ही सोने चले जाना चाहिये। अगर तुमको पोइटरी की पहेली बूझनी है तो तुम्हारा दिमाग बहुत ही तेज़ होना चाहिये।"

सोने जाने से पहले रजब ने अपना वह मरहम अली के माथे पर मल दिया और बोला कि इस मरहम को लगा कर तुम ठीक से सो पाओगे। और फिर वे दोनों सोने चले गये।

उस मरहम को लगाने के बाद अली ने जैसे ही तकिये पर सिर रखा तो वह तो गहरी नींद सो गया।

आधी रात से ठीक पहले रजब उठ गया। उसने उस चिड़िया के पंख अपने कन्धे से बाँधे, दोनों पत्ते अपने दाहिने हाथ में लिये और खिड़की में से उड़ कर महल में चला गया। वहाँ वह उस महल के बागीचे में जा कर उतर गया।

जब घड़ी ने रात के बारह बजाये तो पोइटरी अपनी खिड़की से अपने सुनहरे पंखों के साथ उड़ती हुई बाहर आयी और सीधी

जादूगरनी के पहाड़ की एक गुफा में घुस गयी। उसको यह पता ही नहीं था कि रजब उसके पीछे पीछे उड़ता हुआ चला आ रहा है।

जब वे उड़ रहे थे तो रजब ने उसकी पीठ पर एक पत्ते से मारा पर उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा क्योंकि उसने सोचा कि वह पत्ते की मार शायद बारिश की बूँदों का उसकी पीठ पर गिरना होगा।

गुफा के दरवाजे पर आ कर पोइटरी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुल गया। जादूगरनी आग के पास बैठी थी और कुछ बहुत ही भयानक जानवर उसके पास बैठे थे और कुछ उसके ऊपर उड़ रहे थे।

जादूगरनी ने पूछा — "बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है?"

राजकुमारी बोली — "बहुत दिन हो गये हैं कोई मेरी पहेली बूझने के लिये ही नहीं आया। लोग आना तो चाहते हैं और पहेली बूझना भी चाहते हैं पर मौत से डरते हैं।

मुझे मालूम है कि जल्दी ही कोई आयेगा पर मुझे डर है कि मेरी पुरानी पहेली का जवाब मुझसे कहीं खो गया है। कौन जानता है पर हो सकता है कि शायद कभी मैंने ही उसे सोते में बोल दिया हो।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार अगर कोई आये तो तुम उसे यह बताने के लिये कहना कि तुम क्या सोच रही हो।"

राजकुमारी ने पूछा — "पर उस समय मैं क्या सोच रही होऊँगी?"

जादूगरनी बोली — "तुम अपने दस्तानों के बारे में सोच रही होगी।"

इतनी बात कर के पोइटरी वहॉ से वापस लौट आयी और उसके पीछे पीछे रजब भी। उसने एक बार फिर उसने राजकुमारी को उस पत्ते से मारा और उसके बाद सोने चला गया। फिर तो वह सूरज निकलने के बाद ही उठा।

सुबह उठ कर जब अली महल जाने के लिये तैयार हो रहा था तो वह अली से बोला — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो कहना कि वह अपने दस्तानों के बारे में सोच रही है।"

अली महल आ पहुॅचा। जब पोइटरी ने देखा कि एक सुन्दर नौजवान पहेली बूझने आ रहा है तो वह उसको तुरन्त ही चाहने लगी और मन ही मन सोचा कि अच्छा हो अगर वह उसकी पहेली ठीक से बूझ दे। क्योंकि फिर वह उससे शादी कर सकती है।

पर जब उसने वाकई उसकी पहेली को ठीक से बूझ दिया तो वह गुस्से से कूद पड़ी और चिल्ला कर बोली — "नहीं, यह नहीं हो सकता। तुमको मेरी पहेली बूझने के लिये दोबारा आना पड़ेगा। तुम इतनी असानी से मुझे नहीं पा सकते।"

उस रात रजब ने अली को फिर से गहरी नींद सुला दिया और खुद आधी रात को फिर से महल चल दिया। इस बार उसने उसे

पत्ते से उसके कन्धों पर मारा पर इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वह उसी गुफा तक उड़ती चली गयी।

वहॉ उस जादूगरनी ने उससे पूछा — "कैसा रहा उसका बूझना?"

"उसने तो ठीक बता दिया।"

"अच्छा? तुमको बहुत सावधान रहना चाहिये कि वह नौजवान तुम्हारा पति न बने।"

"तो मुझे तुम एक ऐसी पहेली दो जो वह बूझ ही न सके।"

जादूगरनी बोली — "उससे तुम फिर यही पूछना कि तुम क्या सोच रही हो? और उस समय तुम अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही होगी।"

पोइटरी फिर से उड़ कर अपने महल में जा पहुॅची पर रजब फिर से ठीक उसके पीछे था और उसने फिर उस पत्ते से उसको मारा। और इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने के लिये तैयार हुआ तो रजब ने उससे कहा — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो बोलना कि वह अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही है।"

अली एक बार फिर राजकुमारी के महल की तरफ चल दिया। राजकुमारी एक राज सिंहासन पर अपने पिता के पास बैठी हुई थी। वह सोच रही थी कि इस बार वह यकीनन ठीक जवाब नहीं दे

पायेगा पर एक बार फिर सही जवाब सुन कर वह गुस्से से भर उठी।

वह गुस्से में बोली — "तुमको फिर से आना पड़ेगा ओ नौजवान। मुझे पाना इतना आसान नहीं है।"

इस बार अली बोला — "आपकी शर्त तो यही थी न कि मुझे केवल एक बार ही आपकी पहेली बूझनी थी पर मैंने तो आपकी पहेली दो बार बूझ दी है। अब यह तो नाइन्साफ़ी है कि आप मुझसे शादी नहीं कर रही हैं। पर आपको नाउम्मीद न करने के लिये, ओ पोइटरी, मैं फिर आऊँगा।"

उस रात रजब ने पोइटरी का फिर से पीछा किया और अबकी बार उसके कन्धों पर अपने उस पत्ते से इतना मारा कि उसके कन्धों से खून बहने लगा और वह और आगे नहीं उड़ सकी।

पर फिर भी वह अपनी उस जादूगरनी के पास तक पहुँच गयी जिसके पास वह जाया करती थी। उसने उससे कहा — "अबकी बार तुम मुझे ऐसी पहेली दो कि इस धरती का कोई भी आदमी उसको न बूझ सके।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार तुम मेरे सिर के बारे में सोचना। यह वह कभी भी नहीं बता सकेगा।"

पोइटरी वहाँ से उड़ी तो अपने कमरे में आ कर अपने बिस्तर पर धम्म से गिर पड़ी। अबकी बार रजब ने उसको इतना मारा था कि वह परेशान थी।

वह बोली — "मैं अब उस चुड़ैल के पास फिर कभी नहीं जाऊँगी।" और उसने अपने सुनहरे पंख तोड़ कर फेंक दिये।

लेकिन रजब उस जादूगरनी के घर की तरफ उड़ा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया।

"अन्दर आ जाओ।" जादूगरनी ने गुफा के अन्दर से ही कहा पर जब कोई अन्दर नहीं घुसा तो उसने यह देखने के लिये अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला कि किसने उसका दरवाजा खटखटाया।

रजब बाहर उसके लिये तैयार खड़ा था। जैसे ही उसने अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला तो उसने तलवार के एक ही वार से उसका सिर काट दिया और उसको अपने थैले में रख लिया। फिर वह अपने घर वापस लौट गया और जा कर अली के पास सो गया।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने को तैयार हुआ तो रजब ने कहा — "लो यह थैला अपने साथ लेते जाओ और जब पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह किसके बारे में सोच रही है तो इस थैले में जो कुछ भी रखा है उसे निकाल कर उसको दिखा देना कि वह इसके बारे में सोच रही है।"

उस सुबह पोइटरी बड़ी बेचैन सी अपने पिता के पास बैठी हुई थी। उसके कन्धे बहुत दर्द कर रहे थे और वह इन पहेलियों के बूझने से तंग आ चुकी थी।

जब अली वहॉ पहुँचा तो पोइटरी ने उससे फिर पूछा कि वह किसके बारे में सोच रही है। इस बार अली कुछ नहीं बोला तो जल्लाद ने उसको मारने के लिये अपनी कुल्हाड़ी उठायी और पोइटरी की तरफ देखा।

लेकिन इससे पहले कि वह अपने जल्लाद को उसके मारने का इशारा करती अली ने उस जादूगरनी का सिर उस थैले में से निकाला और उसको दिखा दिया। पोइटरी खुशी के मारे उससे जा कर लिपट गयी।

वह अली से बोली — "अब तुमको और किसी पहेली बूझने की जरूरत नहीं है। मैं तुमसे ही शादी करूँगी।"

सुलतान और उसके लोग भी यह देख कर बहुत खुश हुए कि आखिर राजकुमारी को कोई लड़का तो मिल गया था जिससे वह शादी कर सकती थी। तुरन्त ही शादी का इन्तजाम हुआ।

पर जब अली ने रजब से उसको अपना बैस्टमैन[95] बनने के लिये कहा तो वह केवल मुस्कुरा दिया और उसने ना में अपना सिर हिला दिया।

वह बोला — "जब तक तुम दोनों रहने के लिये महल में जाओगे तब तक तो मैं यहॉ से बहुत दूर अपनी आराम करने की

[95] In North America and in Christian marriages, the Bestman is one of the male attendants to the groom in a wedding ceremony. In Britain, a similar role is performed by an "usher".

जगह पहुँच चुका होऊँगा। अब जबकि मैंने अपना कर्जा चुका दिया है तो तुम यह भी जान गये होगे कि मैं कौन हूँ।"

अली ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुम हो कौन? और तुम किस कर्जे की बात कर रहे हो?"

रजब बोला — "मैं उस आदमी की आत्मा हूँ जिसकी हड्डियों की तुमने कब्र में से हटाने में रक्षा की थी। अच्छा, अलविदा मेरे दोस्त, मैं तुम्हारे पास इससे ज़्यादा नहीं रुक पाऊँगा।" इससे पहले कि अली कुछ बोलता रजब तो गायब ही हो गया।

एक साल पूरा होने को आ रहा था सो वहाँ से अली अपने पिता के पास पहुँचा और उसको वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

सुलतान मुहम्मद अली के साथ पोइटरी के देश आया और उन दोनों की शादी में शामिल हुआ। उसके बाद उसने अपनी गद्दी अपने बेटे अली को दे दी और शान्ति से मर गया।

# देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

**Facebook Group**
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

# लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

**1998** में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
**2022**